

खबरें चुपचात नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

हल्द्वानी, सोमवार 13 अक्टूबर 2025 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 23 अंक 48 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

M shahtimes2015@gmail.com

कार्तिक कृष्ण पक्ष 7 विक्रमी सम्वत् 2082 20 रबी उल सानी 1447 हिजरी

नई दिल्ली, मुंबई, रायपुर, देहरादून, हल्द्वानी, मुाराबाद, बंगलूर, भोपाल व लखनऊ से प्रकाशित

ऑपरेशन ब्लू स्टार गलत था: चिदंबरम

कहा: इंदिरा गांधी को जान देकर चुकानी पड़ी कीमत

कसौली (हिमाचल प्रदेश) वार्ता

पूर्व गृह एवं वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने 1984 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार के तहत ऑपरेशन ब्लू स्टार की आलोचना की और इसे गलत तरीका बताया। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई।

खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव 2025 में बोलते हुए, पूर्व केंद्रीय गृह और वित्त मंत्री ने कहा कि सिख पूजा स्थल से सेना को बाहर रखकर स्वर्ण मंदिर को पुनः प्राप्त करने के लिए ऑपरेशन ब्लैक थंडर सही तरीका था। पी. चिदंबरम ने कहा कि जून 1984 का ऑपरेशन ब्लू स्टार सेना, पुलिस, खुफिया और सिविल सेवाओं का एक संयोजित निर्णय था। उन्होंने कहा कि यहां किसी भी सैन्य अधिकारी का कोई अनादर नहीं है, लेकिन वह (ब्लू स्टार) स्वर्ण मंदिर को पुनः प्राप्त करने का गलत तरीका था। कुछ साल बाद, हमने सेना को बाहर रखकर स्वर्ण मंदिर को पुनः प्राप्त करने का सही तरीका दिखाया। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आप इसके लिए केवल इंदिरा गांधी को दोषी नहीं ठहरा सकते। चिदंबरम लेखिका हरिंदर वावेजा के साथ वे विलिट्ट यू, मैडम: माई लाइफ : कॉम्प्लिकेट पर एक चर्चा के दौरान एक सभा को संबोधित



■ 1984 ऑपरेशन ब्लू स्टार सेना, पुलिस, खुफिया और सिविल सेवाओं का संयोजित निर्णय था

चिदंबरम के बयान पर कांग्रेस आलाकमान नाराज

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम के बयान (ऑपरेशन ब्लू स्टार) पर पार्टी के अंदर सियासी बवाल मच गया है। कांग्रेस के कई नेताओं ने उनके बयान को लेकर नाराजगी जाहिर की है। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस आलाकमान भी उनके बयान से नाराज है। शीर्ष नेतृत्व से लेकर आम कार्यकर्ता तक उनके हालिया बयान से नाखुश हैं। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस आलाकमान का कहना है कि वैसे वरिष्ठ नेता जिन्हें कांग्रेस ने सब कुछ दिया है, उन्हें सावधानीपूर्वक बयान देना चाहिए। बार-बार ऐसे बयान देना सही नहीं है। इससे पार्टी की फजीहत होती है। उन्होंने हाल ही में कुछ ऐसे बयान दिए हैं, जिनसे पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़ी है।

कर रहे थे। ऑपरेशन ब्लू स्टार 1 जून से 10 जून 1984 तक चला 10 दिनों का सैन्य अभियान था। 6 जून 1984 को, पंजाब में जर्नल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व में सिख उग्रवाद को रोकने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आदेश पर ऑपरेशन ब्लू स्टार के तहत भारतीय सेना ने स्वर्ण मंदिर में धावा बोला था। ऐसी खबर थी कि

कांग्रेस का इतिहास कमजोरियों से भरा नई दिल्ली।

चिदंबरम के बयान पर केंद्रीय मंत्री किरन रिजजू ने अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि चिदंबरम पहले 26/11 पर विदेशी दबाव का खुलासा कर चुके हैं, अब यह बयान। कांग्रेस का इतिहास कमजोरियों से भरा है। बीजेपी प्रवक्ता आरपी सिंह ने कहा कि चिदंबरम ने सच्चाई कही।

भिंडरावाले ने स्वर्ण मंदिर परिसर में भारी मात्रा में हथियार छिपा रखे थे। भिंडरावाले कट्टरपंथी सिख संगठन दमदमी टकसाल का प्रमुख था। जून 1984 में स्वर्ण मंदिर परिसर से उग्रवादियों को बाहर निकालने के लिए भारतीय सेना द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान वह अपने सशस्त्र अनुयायियों के साथ मारा गया था।

हमारा दिल बड़ा है, पाकिस्तान से पूछिए क्या दिक्कत: मुत्ताकी



नई दिल्ली। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी इन दिनों भारत के दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच तनाव और भारत की अफगानिस्तान से बढ़ती नजदीकी से संबंधित कई सावलों के जवाब दिए। नई दिल्ली में एक प्रेस वार्ता के दौरान अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी ने साफ किया कि उनके देश को पाकिस्तान या भारत के साथ किसी तरह की परेशानी नहीं है। जब उनसे पूछा गया कि क्या भारत से अफगानिस्तान की बढ़ती दोस्ती की वजह से पाकिस्तान ने तनाव बढ़ाया है, तो उन्होंने कहा कि ये सवाल पाकिस्तान से पूछिए। हमें तो कोई दिक्कत नहीं है, हमारा दिल बड़ा है। मुत्ताकी ने यह भी कहा कि अफगानिस्तान सभी पड़ोसी देशों के साथ शांति और सहयोगपूर्ण संबंध चाहता है, चाहे वो पाकिस्तान हो या भारत। उन्होंने क्षेत्रीय संबंधों में किसी तनाव को खारिज करते हुए कहा कि अफगानिस्तान का मकसद टकराव नहीं, बल्कि सहयोग है। मुत्ताकी ने पाकिस्तान के साथ चल रहे तनाव और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को लेकर बड़ा बयान दिया है।

पेश है

चेक्स की ज़्यादा तेज़ क्लियरिंग



अब से,
बैंक उसी दिन चेक्स पास/रिटर्न करेंगे।
ग्राहकों को उसी दिन क्रेडिट मिलेगा।

3 जनवरी 2026 से,
बैंक 3 घंटों के भीतर चेक पास/रिटर्न करेंगे।
ग्राहकों को कुछ ही घंटों में क्रेडिट मिलेगा।

इसका क्या अर्थ है?

- अधिक तेजी से राशि की उपलब्धता
- बेहतर सुविधा
- विलंब में कमी

ध्यान देने योग्य पॉइंट

- चेक बाउंस टालने के लिए पर्याप्त बैलेंस बनाए रखें



अधिक व्योरा के लिए, अपने बैंक से संपर्क करें या आरबीआई की अधिसूचना दिनांकित 13 अगस्त 2025 पढ़ें। प्रतिक्रिया के लिए, rbikehtahai@rbi.org.in को लिखें।

आधिकारिक व्हॉट्सएप नं. 99990 41935 / 99309 91935



जनहित में जारी

भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in



EVERYONE SAID 'GST'.

WE SAID 'MORE'.

MORE THAN GST SAVINGS ON MAHINDRA SUVs,
TOTAL BENEFITS UP TO ₹2.56 LAKH*.



THAR ROXX

New Ex-Showroom Price starting at ₹12.25 Lakh*

GST Savings	Additional Benefits
Up to ₹1.33 Lakh*	Up to ₹0.20 Lakh*



XUV 700

New Ex-Showroom Price starting at ₹13.66 Lakh*

GST Savings	Additional Benefits
Up to ₹1.43 Lakh*	Up to ₹0.81 Lakh*



Bolero Neo

New Ex-Showroom Price starting at ₹8.92 Lakh*

GST Savings	Additional Benefits
Up to ₹1.27 Lakh*	Up to ₹1.29 Lakh*

*The benefit mentioned is of a particular model & variant. Benefits will vary depending on the model & variant selected.
*The prices mentioned are the ex-showroom price (All-India) of the base variant of that particular model and may vary as per the model and its variant.
For exact details please contact your nearest authorized Mahindra dealership.



To book online visit auto.mahindra.com.

BAJRANG MOTORS

HALDWANI
7617595006
9997191416

PITHORAGARH
7060201577

ALMORA
9997051025

BAGESHWAR
8126177772

CHAMPAWAT
8126177778

RUDRAPUR
8192835111
8449101234

KUMAR AUTOWHEELS PVT.LTD.

KASHIPUR
8449904477

KHATIMA
8191899023

SITARGANJ
8193899109

T & C Apply*

संक्षिप्त समाचार

एनडीए कैडेट अंतरिक्ष की संदिग्ध मौत

बहराइच। उत्तर प्रदेश के बहराइच जनपद के नरैनापुर सुमेरपुर गांव के मूल निवासी 18 वर्षीय अंतरिक्ष कुमार सिंह को पुणे में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। शुक्रवार को उनका शव हॉस्टल के कमरे में छत के कुंडे से लटकता मिला। परिवार ने आरोप लगाया है कि प्रशिक्षण के दौरान एक सीनियर कैडेट द्वारा लगातार उत्पीड़न किया जा रहा था, जिसके चलते यह घटना हुई। अंतरिक्ष के पिता रवि प्रताप सिंह रक्षा सुरक्षा कोर में हवलदार के पद पर गुवाहाटी में तैनात हैं। परिवार पिछले कई वर्षों से लखनऊ के तेजीबाग में रह रहा है। परिवार को जैसे ही घटना की सूचना मिली, मां सीमा सिंह सेंगर, मामा पंकु सिंह और चाचा रावेन्द्र प्रताप सिंह लखनऊ से पुणे के लिए रवाना हो गए, वहीं पिता गुवाहाटी से निकल चुके हैं। अंतरिक्ष का चयन मई 2025 में भारतीय वायुसेना में हुआ था।

एफपीआई ने किया 3,240 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश मुंबई। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अक्टूबर में अब तक भारतीय पूंजी बाजार में 3,240 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश किया है। शुद्ध निवेश बाजार में लगाई गई राशि और निकाली गयी राशि का अंतर होता है। इस महीने एफपीआई ने जहां इक्विटी में बिकवाली जारी रखी है, वहीं डेट में उनकी जरूरत खरीद जारी है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने अक्टूबर में शुद्ध रूप से 2,091 करोड़ रुपए की इक्विटी बेची है। वहीं डेट में उन्होंने 4,819 करोड़ रुपए का निवेश किया है। म्यूचुअल फंड से एफपीआई ने 82 करोड़ रुपए की शुद्ध निकासी की जबकि हाइब्रिड इनस्ट्रुमेंट्स में उनका निवेश 594 करोड़ रुपए बढ़ गया।

मोदी सरकार ने आरटीआई को किया कमजोर: कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि 20 साल पहले इसी दिन डा. मनमोहन सिंह की सरकार ने शासन में पारदर्शिता लाने के लिए 'सूचना का अधिकार' (आरटीआई) कानून लागू किया, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने इसे कमजोर करने का काम किया है।

पार्टी ने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने सचाई छिपाने और अपनी कमजोरी जनता के सामने नहीं आने देने के लिए 'सूचना का अधिकार' कानून को सांची समझी रणनीति के तहत कमजोर किया। पार्टी ने कहा कि मोदी सरकार ने इस काम के लिए कानून में संशोधन तक कर डाला। दरअसल उनको डर था

कि जनता से किए वारों की पोल खुल न जाए इसलिए सरकार ने कानून ही बदल दिया। कांग्रेस संचार विभाग प्रभारी जयमर रमेश ने रविवार को पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आरटीआई का मकसद था कि शासन-प्रशासन को जो जानकरी है, वह जनता को भी मिले, लेकिन मोदी सरकार इस कानून को खत्म करने में लगी है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने देश की बागडोर संभालने के चार महीने में ही योजना आयोग खत्म कर दिया और अब उनकी योजना आरटीआई को खत्म करने की है। उनका कहना था कि सूचना आयुक्तों के पदों पर भर्ती नहीं हो रही है।

खड्गे ने पूर्ण की पत्नी को पत्र लिखकर जताया शोक

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष खड्गे ने हरियाणा कैडर के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी वाई. पूर्ण कुमार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और कहा कि शोक की घड़ी में वह पीड़ित परिवार के साथ खड़े हैं। उन्होंने कहा कि जब हम चांद पर झंडा गाड़ कर गौरवान्वित हो रहे हैं, तो संविधान ने जिन लोगों पर जनता के दुख तकलीफ और पीड़ा से मुक्ति दिलाने का दायित्व सौंपा है, उनको भी सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं और यह शर्मनाक और चिंता का विषय है। खड्गे ने पूर्व आईपीएस अधिकारी की पत्नी अमनीत पी. कुमार को लिखे पत्र में कहा कि मैं पत्र को अत्यंत दुःख और भावनात्मक व्यथा के साथ लिख रहा हूँ।

आजम खां को वाई कैटेगरी सुरक्षा वापस मिली

शाह टाइम्स ब्यूरो

रामपुर/लखनऊ। समाजवादी पार्टी के नेता और पूर्व कैबिनेट मंत्री आजम खां की सुरक्षा फिर से बहाल कर दी गई है। समाजवादी पार्टी के नेता को फिर से वाई श्रेणी की सुरक्षा प्रदान गई है।

शनिवार से ही उनकी सुरक्षा में तैनात गार्ड एवं गनर तैनात कर दिए गए हैं। इससे पहले कोर्ट से दोषी करार दिए जाने के बाद उनकी विधानसभा सदस्यता खत्म कर दी गई थी। उत्तर प्रदेश सरकार ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान को दी गई 'वाई-श्रेणी' सुरक्षा वापस लेते हुए कहा था कि इसकी जरूरत नहीं थी। उन्हें लखनऊ स्थित सुरक्षा मुख्यालय से एक

जेल से बाहर आते ही फिर मिली सिक्क्योरिटी



उनकी सुरक्षा में गार्ड एवं गनर उनके आवास पर तैनात कर दिए गए हैं

पत्र मिला था, जिसमें कहा गया था कि रामपुर से 10 बार विधायक रहे आजम खान को वाई-श्रेणी की सुरक्षा देने की कोई जरूरत नहीं है। वाई-श्रेणी की सुरक्षा के तहत आजम खां को तीन बंदूकधारी और सुरक्षाकर्मी दिए गए थे, जो उनके आवास पर चौबीसों घंटे तैनात रहते थे। आजम खान ने 2022 के उत्तर प्रदेश चुनावों में

रामपुर विधानसभा सीट से रिकॉर्ड 10वां बार जीत हासिल की थी। विधायक बनने के बाद उन्होंने लोकसभा से इस्तीफा दे दिया था। अक्टूबर 2022 में, उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय ने आजम खान को सदन से अयोग्य घोषित करने की घोषणा की, जिसके एक दिन पहले ही अदालत ने उन्हें भड़काऊ भाषण के एक मामले

में तीन साल की जेल की सजा सुनाई थी। लेकिन अब 23 महीने के बाद आजम खान जमानत से बाहर आए हैं। उनके जेल से बाहर आने के बाद उनसे मिलने वालों का तांता लगा हुआ है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भी उनसे मुलाकात की थी। उन्होंने आजम खान के खिलाफ केस करने को लेकर भाजपा सरकार पर हमला बोला था। अब जिस तरह से लोग उनसे मुलाकात कर रहे हैं। उनकी सुरक्षा देखते हुए उत्तर प्रदेश प्रशासन ने आजम खान को श्रेणी की सुरक्षा बहाल कर दी है। शनिवार को बंदूकदारी और गार्ड फिर से उनके आवास पर तैनात कर दी गई है।

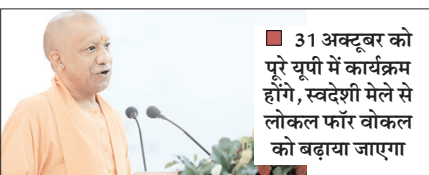
योगी ने की सरदार/150 यूनिटी मार्च अभियान की शुरुआत

पटेल के जन्मदिन पर लेंगे नशामुक्ति का संकल्प

लखनऊ, वार्ता

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 31 अक्टूबर से 26 नवंबर तक चलने वाले सरदार/150यूनिटी मार्च अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अभियान को जनता तक पहुंचाने के लिए सरकार और संगठन मिलकर पूरी ताकत से इस अभियान को चलाने का काम किया है।

मुख्यमंत्री ने पांच कालिदास मार्ग पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लोह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया जा रहा है। वह महान स्वतन्त्र सेनानी होने के साथ ही अखंड भारत के शिल्पकार भी हैं। पूरा देश हमेशा



31 अक्टूबर को पूरे यूपी में कार्यक्रम होंगे, स्वदेशी मेले से लोकल फॉर वोक्ल को बढ़ाया जाएगा

उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। उन्होंने कई रियासतों को अखंड भारत में मिलाने का काम किया था। श्री आदित्यनाथ ने कहा कि कुछ रियासतें ऐसे भी थीं, जो मनमानी करना चाहती थी लेकिन लोह पुरुष के सामने उनकी एक नहीं चली। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 2014 से ही देशभर में रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। मोदी की अगुआई में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण किया गया है। सबसे बड़ी प्रतिमा गुजरात में स्थापित हो चुकी है। यह स्थल आज पूरे देश

में पर्यटन का बड़ा केंद्र बना हुआ है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरे देश में कार्यक्रमों का आयोजन किए जा रहे हैं। नौजवानों के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में सरदार/150यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया है। योगी ने कहा कि सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि इसके तहत 10 किलोमीटर की पदयात्रा निकाली जाएगी। इसमें प्रदेश के कलाकरों को भी शामिल किया जाएगा। पदयात्रा के माध्यम से

सरदार पटेल रन फॉर यूनिटी में दौड़ी मुंबई, मंत्री ने दिखाई हरी झंडी

लखनऊ/मुंबई। एकता, भाईचारे और फिट इंडिया के संदेश के साथ रविवार सुबह मुंबई की सड़कों पर हजारों युवाओं ने दौड़ लगाई। सरदार पटेल रन फॉर यूनिटी मैराथन का शुभारंभ उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री (अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज) दानिश आजाद अंसारी ने प्रातः छह बजे किया। मैराथन के 10, पांच और तीन किलोमीटर वर्गों में मुंबई के विभिन्न इलाकों से आए युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में युवाओं को संबोधित करते हुए मंत्री अंसारी ने कहा कि आज मुंबई की सड़कों से पूरे देश में एकता और भाईचारे का सशक्त संदेश गया है। हजारों युवाओं की भागीदारी यह साबित करती है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'विक. सित भारत 2047' का संकल्प अब जन आंदोलन बन चुका है।

वह 150 किलोमीटर की यात्रा में सहभागी बनेंगे। युवाओं के लिए नशामुक्त भारत अभियान शुरू किया जाएगा। सरकार और संगठन मिलकर पूरे प्रदेश में स्वदेशी मेले का आयोजन किया गया है। इस मेले के माध्यम से सरकार लोकल फॉर वोक्ल अभियान को मजबूती से आगे

राकेश टिकैत ने मायावती की रैली पर उठाए सवाल

बहराइच, वार्ता

भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश टिकैत रविवार को उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में पहुंचे, जहां उनका भव्य स्वागत किया गया। वह श्रावस्ती में आयोजित एक महापंचायत में भाग लेने जा रहे थे।

कार्यकर्ताओं ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया। इस अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए राकेश टिकैत ने बिहार चुनाव पर टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि अगर चुनाव में बेईमानी हुई, तो यह बेईमानी और पूंजीपतियों की सरकार होगी और अगर ईमानदारी से चुनाव हुआ, तो सत्ता पलट जाएगी। टिकैत ने तालिबान के विदेश मंत्री के बाधा बॉर्डर को खोलने के बयान का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि तालिबान नेता की बात सही है कि बाधा बॉर्डर खुलना चाहिए, ताकि किसानों



श्रावस्ती में आयोजित महापंचायत में शामिल हुए

के लिए परिवहन आसान हो सके। उन्होंने बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती द्वारा लखनऊ में आयोजित एक हालिया रैली पर भी सवाल उठाए। टिकैत ने कहा कि मायावती विपक्ष में हैं और विपक्ष को आपस में लड़ाने का काम कर रही हैं। आजम खान की रिहाई ने तालिबान के विदेश मंत्री के बाधा बॉर्डर को खोलने के बयान का समर्थन नहीं मिला तो उन्हें बकीर और मुर्गी चोरी के आरोप में 23 महीने तक जेल में रखा गया।

 सेलेक्स 81790.12 निफ्टी 25077.65	 सोना रु. 125230 प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)	 चांदी रु. 180000 प्रति किलो	
---	---	---	---

महंगाई के आंकड़ों पर रहेगी निवेशकों की नजर

मुंबई, वार्ता

बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों में लगातार दूसरी साप्ताहिक तेजी के बाद आने वाले सप्ताह में निवेशकों की नजर महंगाई के आंकड़ों के साथ कंपनियों के तिमाही परिणामों पर भी होगी। आने वाले सप्ताह में खुदरा महंगाई और थोक महंगाई के सितम्बर के आंकड़े जारी होने हैं। इसके अलावा कई दिग्गज कंपनियों की तिमाही परिणाम भी बाजार को प्रभावित कर सकते हैं।

बीते सप्ताह बाजार में तेजी रही। बीएसई का 30 शेयर्स वाला संवेंद सूचकांक संसेक्स 1,293.65 अंक (1.02 प्रतिशत) की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 82,500.82 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 50 सूचकांक भी 391.10 अंक यानी 1.75 फीसदी चढ़कर 25,285.35 अंक पर पहुंच गया। चौरफा लांबाली के बीच मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में भी



संसेक्स व निफ्टी बढ़त के साथ बंद

मिडकैप-50 सूचकांक 2.56 प्रतिशत और निफ्टी स्मॉलकैप-50 सूचकांक 1.43 प्रतिशत चढ़ा। बीते सप्ताह आईटी कंपनियों में जबरदस्ती तेजी रही। एचसीएल टेक्नोलॉजीज का शेयर 7.28 प्रतिशत चढ़ा।

इफोसिस में 4.68 फीसदी, डीसीएस में 4.35 फीसदी और टेक, मलहड़ा में 4.03 फीसदी की तेजी रही। इस्टरल का शेयर 6.06 प्रतिशत की बढ़त में रहा। बजाज फाइनेंस में 3.44 प्रतिशत, मारुति सुजुको में 2.98

और भारतीय स्टेट बैंक का 1.58 प्रतिशत की साप्ताहिक बढ़त में बंद हुआ। एलएंडटी के शेयर में 1.37 प्रतिशत, रिलायंस इंडस्ट्रीज में 1.36 और आईसीआईसीआई बैंक में 1.15 प्रतिशत की तेजी रही। वहीं टाटा मोटर्स का शेयर सबसे अधिक 5.16 फीसदी लुढ़क गया। टाट में 6.60 फीसदी, एशियन पेंट्स में 0.76, अडानी पोर्ट्स और एनटीपीसी दोनों में 0.70, और हिंदुस्तान यूनीलिवर में 0.60 फीसदी की गिरावट रही।

अर्थव्यापार

धनतेरस से पहले सोने-चांदी की कीमतों में तूफानी तेजी

नई दिल्ली। धनतेरस से पहले सोने-चांदी की कीमतों में एक बार फिर उछाल आया है। 12 अक्टूबर को सरफाी बाजारों में सोने और चांदी दोनों की कीमतों में भारी उछाल दर्ज किया गया। त्योहारों का मौसम चल रहा है, लेकिन सोने-चांदी की कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। आईबीजेएफ के अनुसार कीमतों में गिरावट कम और तेजी होने से सोने और चांदी की कीमतों ने रिकॉर्ड बना दिया है। चांदी की कीमत भी ऑल टाइम हाई पर है। आज 12 अक्टूबर 2025 को 24 कैरेट सोने का भाव 125230 रुपये प्रति 10 ग्राम है। चांदी की कीमतों की बात करें तो आज चांदी की कीमत 1,80,000 लाख रुपये प्रति किला. ग्राम है। देश में फेस्टिव सीजन शुरू है। इस सीजन में लोग गोल्ड-सिल्वर की जमकर खरीदारी करते हैं। ऐसे में खरीदारों के लिए सोने-चांदी खरीदना महंगा हो गया है। धनतेरस-दिवाली पास है, इसलिए इस अवसर पर लोग खूब सोना-चांदी खरीदने का प्लान कर रहे होंगे। इनकी कीमतें लगातार घटती-बढ़ती है। देश के महानगरों दिल्ली में 24 कैरेट सोने का भाव 1,25,230 रुपये प्रति 10 ग्राम है, तो मुंबई में 1,25,080, चेन्नई में 1,25,460, कोलकाता में 1,25,460, जयपुर में 1,25,230, लखनऊ में 1,25,230, चंडीगढ़ में 1,25,230 और अहमदाबाद में 1,25,130 रुपये है। सोना-चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं, जैसे वैश्विक सोने की मांग, विभिन्न देशों की मुद्राओं का मूल्य और ब्याज दरें आदि।

दाल, खाद्य तेल, चीनी महंगे, चावल-गेहूं नरम

नई दिल्ली। धरेलू थोक जिस बाजारों में बीते सप्ताह चावल के औसत भाव में नरमी रही। गेहूं की कीमतों में भी गिरावट देखी गई। वहीं चीनी, खाद्य तेल और दालों के भाव बढ़ गए। धरेलू थोक जिस बाजारों में सप्ताह के दौरान चावल की औसत कीमत 37 रुपए घटकर सप्ताहांत पर 3,374.53 रुपए प्रति क्विंटल पर रही। गेहूं दालहन: दाल चना 7877.80 रुपए, मसूर प्रति क्विंटल के भाव बिका। आटे की कीमत चार रुपए उतरकर सप्ताहांत पर 3,314.32 रुपए प्रति क्विंटल पर रही। बीते सप्ताह सरसों तेल की औसत कीमत 33 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ी।

पाम ऑयल में भी 20 रुपए की तेजी रही। मूंगफली तेल 166 रुपए और सोया तेल 56 रुपए प्रति क्विंटल महंगा हुआ। सूरजमुखी तेल की कीमत 91 रुपए और वनस्पति की 79 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ी। दाल-दलहनों में मसूर 12488.26 रुपए और अरहर प्रति 14532.62 रुपए प्रति क्विंटल के स्तर पर रहा।

दाल की कीमत दो रुपए और मूंग दाल की 30 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ गई। तुरार दाल 105 रुपए और उड़द दाल 82 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हुई। गुड़-चीनी: सप्ताह के दौरान मीठे के बाजार में गुड़ के औसत भाव 31 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ गए। चीनी में भी 43 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी रही। खाद्यान्नों के औसत कोष भाव शनिवार को इस प्रकार रहे। दाल-दलहन: दाल चना 7877.80 रुपए, मसूर काली 8144.80 रुपए, मूंग दाल 10108.98 रुपए, उड़द दाल 10453.79 रुपए, अरहर दाल 10525.29 रुपए प्रति क्विंटल। अनाज: गेहूं दड़ा 2849.28 रुपए और चावल 3774.53 रुपए प्रति क्विंटल। चीनी-गुड़: चीनी एस 4350.07 रुपए और गुड़ 5023.14 रुपए प्रति क्विंटल बोले गए। खाद्य तेल: सरसों तेल 17907.00 रुपए, मूंगफली तेल 17680.12 रुपए, सूरजमुखी तेल 15578.12 रुपए, सोया रिफाईंड 13802.48 रुपए, पाम ऑयल 12488.26 रुपए और वनस्पति 14532.62 रुपए प्रति क्विंटल के स्तर पर रहा।

जिहाद के जनक तालिबान को गले लगा रही बीजेपी: महबूबा

श्रीनगर। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्तकी के भारत दौरे को लेकर जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने रविवार को भाजपा सरकार की आलोचना करते हुए उस पर तालिबान के साथ संबंध बनाते हुए भारत में मुसलमानों को निशाना बनाने का आरोप लगाया। महबूबा मुफ्ती ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट लिखा कि लव जिहाद, भूमि जिहाद, वोट जिहाद और गाय जिहाद के नाम पर भाजपा अपनी ही मुस्लिम आबादी को निशाना बना रही है और उन्हें बदनाम करने वाले नारे लगा रही है। इस बीच भारत, जो लोकतंत्र की जेननी है, भाजपा के नेतृत्व में जिहाद के जनक तालिबान को गले लगा रहा है। महबूबा मुफ्ती ने मुस्लिम छात्रों के लिए

पत्नी की हत्या कर पति ने खुद भी दे दी जान

फतेहपुर। पति ने अवैध संबंध के शक में गोली मारकर पत्नी की हत्या कर दी। इसके बाद खुद की भी जान ले ली, घटना शनिवार रात की है। युवक 2 सप्ताह पहले ही दिल्ली से पर लौटा था। घटना की जानकारी पर पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल की। जिले के गाजीपुर थाना क्षेत्र के लम्हेटा गांव में मुकेश निषाद (35), पत्नी गुडिया देवी (30) के साथ रहता था। परिवार में 3 मासूम बेटियां हैं। मुकेश दिल्ली में रहकर कोई काम करता था। थानाध्यक्ष गाजीपुर हनुमान प्रताप सिंह सूर्यवंशी ने बताया कि त्योहारों के कारण मुकेश 2 सप्ताह पहले ही गांव लौट आया था। थानाध्यक्ष के अनुसार मुकेश को शक था कि उसकी पत्नी के अवैध संबंध पड़ोसी युवक से हैं। इसे लेकर दंपति के बीच कई दिनों से विवाद चल रहा था।

हर विभाग में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार: सपा

लखनऊ, वार्ता

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को डा. राम मनोहर लोहिया की पुण्यतिथि पर उनके नमन किया। उन्होंने गोमतीनगर स्थित लोहिया पार्क पहुंचकर डा. राम मनोहर लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके बाद बीजेपी पर जुबानी हमला बोला।

अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा द्वारा प्रस्तुत एनसीआरवी के आंकड़ों के अनुसार महिलाएं बड़े पैमाने पर असुरक्षित हैं। भाजपा अपनी नाकामी छिपाया चाहती है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक उत्पीड़न और अन्याय लगातार हो रहा है, हर विभाग में भ्रष्टाचार है। जिन विभागों को उत्तर प्रदेश के लोगों को सुविधाएं और सहायता प्रदान करनी चाहिए, उनके नौ साल के शासन के दौरान हर विभाग में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सपा मुखिया ने अफगानिस्तान के विदेश मंत्री

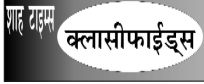
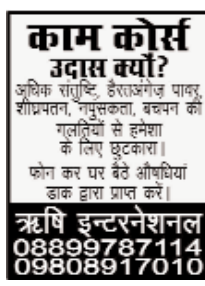


डा. लोहिया के सपने को साकार करने का संकल्प लिया

आमिर खान मुत्तकी की पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की एंट्री बंद होने के सवाल पर कहा कि इस पर हम कुछ नहीं कह सकते, यह भारत सरकार की विदेश नीति का मामला है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी अपनी नाकामी छिपाया चाहती है। उन्होंने आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार हर विभाग में बहुत ज्यादा हो रहा है। एक लेखपाल के पास 100 करोड़ की संपत्ति होना इस सरकार की असल तस्वीर दिखाती है। थाने में शिकायतें नहीं लिखी जा रही

हैं और सरकार कानून व्यवस्था दुरुस्त होने की बात करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि जेपीएनआईसी को बेचने की कोशिश उत्तर प्रदेश सरकार कर रही है, लेकिन मेरे रहते ऐसा नहीं हो पाएगा। यह सरकार विकास कार्य को खत्म कर बर्बाद करने में लगी है।

नेताजी मुलायम सिंह यादव के समय जो पार्क बना था, तब एक भी पेड़ नहीं काटा गया, यही समाजवादी सोच है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार जातिवाद के आधार पर अधिका. रियों को तैनाती कर रही है। कई जिलों में पीडीएफ का अधिकारी तब नहीं है। यह सरकार आरक्षण छीनने का काम कर रही है, बाजार को विदेशी कंपनियों के हवाले कर रही है और स्वदेशी की बात करती है, असल में यह मन से विदेशी है। उन्होंने आरोप लगाया कि डा. लोहिया का सपना समाज में समानता और न्याय था।

 क्लासीफाईड्स	 Sale
 स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मरदाने लाकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें। कामोयाबी, असुरक्षा-LIFE हाशमी देवाखाना 9997161320, 8272800800	 काम कोर्स उदास क्यों? अधिक सॉफ्ट, डेटाअपोज पावर, शीघ्रप्रतिक्रिया, गुणसक्ता, बचन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा। फोन कर घर बैठे ऑफिशियल डाक द्वारा प्राप्त करें। ऋषि इंटरनेशनल 08899787114 09808917010
 जॉन्डिस क्योर लिवर का जिगरी दोस्त पूरा को कभी, बचतजी जॉन्डिस, चेटी लिवर एक्सोलेस लिवर किजीव बाइरे से लहने की लाकत देना है ताकि आप रहे फिट एवं स्वस्थ। प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध। 86 8484 5757 info@cipzer.com	 वैधानिक सृजना प्राप्तकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अवसर में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर काव्यवर्धन करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित समझ लें। कोई भी अभियान को इस अवसर में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई गलत भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या चर्चा करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वयंके, कुटुंब तथा परिवार पर कठोर दायित्व, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने विज्ञापन पर उसके किसी उपभोक्ता से हो कर लेंगे। हमारे सभी विज्ञापनों विज्ञापन करके किसी व्यक्ति को हानि नहीं, हानि परमाण के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

पांच डीएम सहित आईएएस व पीसीएस अफसरों के तबादले

22 आईएएस, 18 पीसीएस, 3 सचिवालय सेवा एवं 1 आईएफएस के पदों में फेरबदल

शाह टाइम्स ब्यूरो
देहरादून। उत्तराखंड की धामी सरकार ने रविवार को बड़े पैमाने पर आईएएस एवं पीसीएस अफसरों के तबादले किए हैं। इनमें शासन में वरिष्ठ आईएएस अफसरों यानी सचिवों से लेकर प्रशासनिक अफसर तक शामिल हैं। इन तबादलों से ब्यूरोक्रेसी में हलचल मच गई है। सरकार ने एक साथ पांच जिलों के डीएम बदल डाले। नैनीताल में लंबे समय से कार्यरत डीएम वंदना को हटाकर शासन में तैनाती दी गई है। और शासन से ललित मोहन रयाल को डीएम नैनीताल बनाया गया है। कार्मिक विभाग के संयुक्त सचिव राजेंद्र सिंह पतियाल ने अफसरों के ट्रांसफर आदेश रविवार शाम को जारी कर दिए।



इन जिलों के डीएम के हुए ट्रांसफर

सीडीओ हरिद्वार आकांक्षा कोंडे को डीएम बागेश्वर बनाया गया है। ललित मोहन रियाल को शासन से हटाकर नैनीताल का जिलाधिकारी बनाया गया है। नैनीताल की डीएम वंदना को हटाकर कृषि एवं उद्यान विभाग का महा. निदेशक बनाया गया है। अल्मोड़ा के डीएम आलोक पांडे को हटाकर शासन भेजा गया है। हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण के वीसी अंशुल सिंह को डीएम अल्मोड़ा बनाया गया है। अपर सचिव गौरव कुमार को शासन से हटाकर जिलाधिकारी चमोली बनाया गया है। चमोली के डीएम डॉक्टर संदीप तिवारी को हटाकर समाज कल्याण का निदेशक बनाया गया है। विनोद गिरि गोस्वामी को डीएम पिथौरागढ़ हटाकर अपर सचिव शहरी विकास विभाग बनाया गया है। जिलाधिकारी बागेश्वर आशीष कुमार भट्टाई को डीएम पिथौरागढ़ बनाया गया है।

कई प्रशासनिक अधिकारियों के तबादले

हरिद्वार मेलाधिकारी सोनिका को वर्तमान जिम्मेदारियों के साथ-साथ हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण का वीसी भी बनाया गया है। अपर सचिव प्रकाश चंद्र को आयुक्त दिव्यांगजन की जिम्मेदारी भी दी है। महानिदेशक विद्यालय शिक्षा दीप्ति सिंह को उद्यान विभाग के निदेशक का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। डिप्टी कलेक्टर पौड़ी सोहन सिंह का रुद्रप्रयाग हुआ ट्रांसफर। डिप्टी कलेक्टर नैनीताल परितोष वर्मा को नगर आयुक्त हल्द्वानी बनाया गया। डिप्टी कलेक्टर उधम सिंह नगर चतर सिंह का पौड़ी गढ़वाल हुआ ट्रांसफर। डिप्टी कलेक्टर पौड़ी अजित कुमार साय्याल का बागेश्वर तबादला किया गया है। पीसीएस अफसर सचिव लोक सेवा आयोग गिरधारी सिंह रावत को अपर सचिव कार्मिक एवं सतर्कता विभाग बनाया गया है। निदेशक समाज कल्याण चंद्र सिंह धर्मसत्तू को निदेशक मत्स्य विभाग बनाया गया है। सचिवालय सेवा की अपर सचिव मायावती ढकरियाल को भाषा विभाग की जिम्मेदारी मिली है। अपर सचिव संतोष बडोनी को निदेशक सचिवालय प्रशिक्षण संस्थान बनाया है।

शासन के अफसरों के विभागों में फेरबदल

वरिष्ठ आईएएस अफसर शासन में सचिव दिलीप जावलकर के पास से ग्रामीण विकास विभाग की जिम्मेदारी हटाई। सचिव डॉ. वीवीआरसी पुरुषोत्तम से निदेशक मत्स्य विभाग का पद हटाया। सचिव चंद्रेश कुमार यादव से पंचायती राज विभाग एवं आयुक्त खाद्य विभाग की जिम्मेदारी हटाई। सचिव रणवीर सिंह चौहान से कृषि एवं उद्यान विभाग के महानिद. शक का पद हटाकर आयुक्त खाद्य की जिम्मेदारी दी गई है। सचिव धीरज सिंह गबवाल को पहले के विभागों के साथ सचिव ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण निर्माण विभाग भी दिया गया है। वरिष्ठ आईएएस अफसर डॉ. पराग मधुकर धकाते को विशेष सचिव पंचायती राज विभाग भी बनाया गया है। आईएएस विजय कुमार जोगदंडे को अपर सचिव राजस्व की जिम्मेदारी भी दी गई है। विनीत कुमार को अपर सचिव श्रम विभाग की जिम्मेदारी दी है इनके पास से वन विभाग हटा लिया गया है। अपर सचिव हिमंशु खुराना को वन विभाग की जिम्मेदारी मिली है। अपर सचिव अनुराधा पाल को चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी भी दी गई। अपर सचिव रक्वीत चौमा को पुनर्गठन विभाग की जिम्मेदारी दी है लेकिन उनके पास से समाज कल्याण विभाग हटा लिया गया है।

पीसीएस अफसरों को किया इधर से उधर

बाध्य प्रतीक्षा में चल रहे पीसीएस सुनील सिंह को अपर सचिव राजस्व सचिवालय प्रशासन की जिम्मेदारी दी है। अपर निदेशक ललित नारायण मिश्र को सीडीओ हरिद्वार बनाया गया है। पीसीएस अशोक कुमार पांडे को सचिव उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की जिम्मेदारी दी गई है। सुंदरलाल सेमवाल को सीडीओ उत्तरकाशी से हटाकर उद्यान विभाग का निद. शक बनाया गया है। पीसीएस चंद्र सिंह मातौलिया को एडीएम अल्मोड़ा से हटाकर संभागीय खाद्य नियंत्रक कुमाऊं बनाया गया। एडीएम प्रशासन देहरादून जय भारत सिंह को सीडीओ उत्तरकाशी बनाया गया है। पीसीएस राजा अब्बास से अपर नगर आयुक्त नगर निगम देहरादून का पद हटाया गया। एडीएम चंपावत जयवर्धन शर्मा को हटाकर परीक्षा नियंत्रक लोक सेवा आयोग बनाया गया। उप सचिव युक्ता मिश्रा को एडीएम अल्मोड़ा बनाया गया है। कृष्ण नाथ गोस्वामी है को एसडीएम नैनीताल से हटाकर एडीएम चंपावत बनाया गया है। नरेश चंद्र दुर्गाचाल को नगर आयुक्त रुद्रपुर से हटाकर संयुक्त संचालक चकबंदी बनाया गया है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का किसानों को मिल रहा लाभ

ऊधमसिंहनगर। मुख्यमंत्री ने कहा कि मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के द्वारा खेतों की मिट्टी की वैज्ञानिक जांच कर किसानों को पोषक तत्वों की कमी और आवश्यक उर्वरकों की जानकारी भी दी जा रही है, जिससे उनकी उपज की गुणवत्ता और भूमि की उर्वरता दोनों में सुधार हो रहा है, और इसके साथ ही, किसान मानधन योजना, मिलेट मिशन, बागवानी विकास मिशन, कृषि यंत्र सव्बिडो, बूंदबूंद सिंचाई योजना, डिजिटल कृषि मिशन जैसी अनेकों योजनाओं द्वारा किसानों को लाभ पहुंचाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष के बजट में कृषि को विकास का प्रमुख इंजन मानते हुए जहां एक ओर किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट को 3 लाख रुपये से बढ़ाकर 5 लाख रुपये करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है, वहीं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ सिंचाई और कृषि तकनीकों के विकास पर भी विशेष फोकस किया गया है। विशेष कि आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देश के अन्नदाताओं को बड़ी सौगात देते हुए 24 हजार करोड़ रुपये की पीएम धन धान्य कृषि योजना और दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु लगभग 11 हजार 500 करोड़ रुपये की लगातार के दलहन उत्पादकता मिशन का शुभारंभ किया है।

पंतनगर में 118वां अखिल भारतीय किसान मेला व कृषि उद्योग प्रदर्शनी

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने किया शुभारंभ, संवाद कार्यक्रम में भी हुए शामिल

शाह टाइम्स ब्यूरो
ऊधमसिंह नगर। देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पंतनगर विश्वविद्यालय में आयोजित 118 वें अखिल भारतीय किसान मेले एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित नवीन दलहन प्रजातियों का लोकार्पण व पंतनगर प्रवाह नामक पुस्तक का विमोचन किया। मेले में आयोजित रजत जयंती राज्य स्थापना गोष्ठी एवं संवाद कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि इस वर्ष के किसान मेले और कृषि प्रदर्शनी में 400 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं, जिसमें से 200 से अधिक स्टॉल देश के विभिन्न राज्यों से आए कृषि क्षेत्र से जुड़े उद्योगों, स्टार्टअप और



उद्यमियों द्वारा लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन मात्र कृषि उत्पादों और यंत्रों के प्रदर्शन तक सीमित नहीं होते, बल्कि ये किसानों, वैज्ञानिकों और उद्यमियों के बीच ज्ञान, अनुभव और नवाचार के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण माध्यम भी होते हैं।

सेब, कीवी, मिलेट, डूंगन फ्रूट

नकल विरोधी कानून के लिए कुलपति ने जताया आभार

कुलपति डॉ मनमोहन सिंह चौहान ने यूसीसी व नकल विरोधी कानून लागू करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन व निर्देशन में विश्वविद्यालय शोध व प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में पूरे प्रदेश में इंटिग्रेटेड फार्मिंग पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आज प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 2 लाख 61 हजार हो गई है जो 26 प्रतिशत ग्रोथ रेट पर है। उन्होंने बताया कि मेले में 507 स्टॉल लगाए गए हैं व अभी तक लगभग 20 हजार किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया है।

अवसर भी मिलता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस मेले में प्रदर्शित की जा रही आधुनिक तकनीकों और नवाचारों के माध्यम से हमारे किसान भाई पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ नई वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर अपनी खेती को और भी अधिक उत्पादक, टिकाऊ और लाभकारी बना पाएंगे।

उन्होंने कहा कि जिससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होगी, बल्कि प्रदेश की कृषि व्यवस्था भी सशक्त और समृद्ध बनेगी। कार्यक्रम में विधायक शिव अरोरा, जिलोक सिंह चीमा, सुरेश गाड़िया, राजेश शुक्ला, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, एसएसपी मणिकांत मिश्रा सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

जोशी ने किया आपदा प्रभावित क्षेत्र सरखेत व घंटूकासेरा का निरीक्षण

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने रविवार मसूरी विधानसभा क्षेत्र के आपदा प्रभावित क्षेत्रों सरखेत और घंटूकासेरा का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को विस्तार से जाना और हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया।

मंत्री जोशी ने कहा कि राज्य सरकार आपदा प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है और किसी को भी कठिनाई नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को दूरभाष के माध्यम से निर्देशित किया कि पुनर्निर्माण और राहत कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण किया जाए, ताकि प्रभावित क्षेत्रों में जल्द सामान्य स्थिति बहाल हो सके। कैबिनेट मंत्री ने आपदा प्रभावित परिवारों को आश्वासन



करते हुए कहा कि सरकार तेजी से राहत और पुनर्वास कार्य कर रही है, और जो भी सहायता आवश्यक होगी, वह शीघ्र उपलब्ध कराई जाएगी। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य वीर सिंह चौहान, अनुज कौशल, विनोद कैंतुरा, कनिष्ठा सहित क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

भर्ती परीक्षा रद्द होने पर बेरोजगार संघ ने सीएम धामी का जताया आभार

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से रविवार को मुख्यमंत्री आवास में उत्तराखंड बेरोजगार संघ व तकनीकी डिप्लोमा प्राप्त छात्रों के प्रतिनिधिमंडल ने भेंट की। इस अवसर पर प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया कि राज्य सरकार ने युवाओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए परीक्षा प्रक्रिया में अनियमितताओं की शिकायतों पर गंभीरता से संज्ञान लिया और संबंधित परीक्षा को निरस्त करने का निर्णय लिया। इस अवसर पर बेरोजगार संघ के अध्यक्ष राम कंडवाल सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि सरकार द्वारा परीक्षा की



पारदर्शिता एवं नियुक्ति सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए कदम युवाओं में विश्वास और आशा का संचार करते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने जिस तत्परता और संवेदनशीलता के साथ इस मुद्दे पर कार्रवाई की, वह युवाओं के हित में एक ऐतिहासिक निर्णय है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रतिनिधियों को आश्वासन दिया कि राज्य सरकार योग्यता और पारदर्शिता पर आधारित भर्ती

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष करन माहारा ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम की 20वीं वर्षगांठ पर कहा कि आरटीआई आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण लो. कर्तांत्रिक सुधारों में से एक है और इसकी कमजोरी, लोकतंत्र की कमजोरी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का संकल्प पारदर्शिता और जवाबदेही की रक्षा के लिए संघर्ष को जारी रखना है।

माहारा ने कहा कि डॉ. मनमो. हन सिंह के नेतृत्व में यूपीए सरकार और सोनिया गांधी के दूरदर्शी मार्गदर्शन में 12 अक्टूबर 2005 को आरटीआई कानून अस्तित्व में आया। यह कानून नागरिकों को शासन की पारदर्शिता सुनिश्चित करने और



आरटीआई की 20वीं वर्षगांठ पर बोले करन माहारा

आयोग में अधिकांश पद खाली, लाखों अपीलें लंबित और आरटीआई कार्यकर्ता लगातार खतरे में हैं

जवाबदेही तय करने का सशक्त औजार बना। आरटीआई ने आम नागरिकों को उनके अधिकारों ख खड़े राशन, पेंशन, मजदूरी और छात्रवृत्ति दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने आरोप लगाया कि 2014 के बाद मोदी सरकार ने इस कानून को कमजोर करने का सिल. सिला शुरू कर दिया। 2019 में हुए

संशोधन से सूचना आयोगों की स्वतंत्रता प्रभावित हुई, वहीं 2023 के डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन अधिनियम ने व्यक्तिगत जानकारी के दायरे को इतना बढ़ा दिया कि अब कई जनहित सूचनाएं भी अपवाद बन गई हैं। माहारा ने कहा कि आज देशों को कमजोर करने का सिल. सिला शुरू कर दिया। 2019 में हुए

कांग्रेस पार्टी की मांगें

1. 2019 के संशोधनों को निरस्त कर सूचना आयोगों की स्वतंत्रता बहाल की जाए। 2. डीपीडोपी अधिनियम की धारा 44(3) की समीक्षा की जाए, जो आर टी आई के जनहित उद्देश्य को कमजोर करती है। 3. केंद्रीय और राज्य आयोगों में सभी रिक्तियाँ पारदर्शी व समयबद्ध प्रक्रिया से भरी जाएं। 4. आयोगों के लिए कार्य निष्पादन मानक तय किए जाएं और निपटान दर की सार्वजनिक रिपोर्टिंग अनिवार्य की जाए। 5. व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन अधिनियम को लागू कर आर टी आई उपयोगकर्ताओं और व्हिसलब्लोअर्स को सशक्त सुरक्षा दी जाए। 6. आयोगों में विविधता सुनिश्चित की जाए, पत्रकारों, कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिले।

और आरटीआई कार्यकर्ता लगातार खतरे में हैं। उन्होंने मांग की कि 2019 के संशोधन को निरस्त किया जाए, आयोगों में रिक्तियाँ भरी जाएं और व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट को तत्काल लागू किया जाए। माहारा ने कहा, “कांग्रेस पार्टी आरटीआई की मजबूती के लिए प्रतिबद्ध है,

ताकि हर नागरिक निडर होकर सवाल पूछ सके और जवाब पा सके।” इस अवसर पर मीडिया सलाहकार अमरजीत सिंह, प्रदेश प्रवक्ता सुजाता पॉल, शीशपाल सिंह बिष्ट, महानगर अध्यक्ष जसवंदर सिंह जोगी और महामंत्री नवीन जोशी मौजूद रहे।

1347 एलटी शिक्षकों को मिलेंगे नियुक्ति पत्र: डॉ. रावत

14 अक्टूबर को देहरादून में मुख्यमंत्री धामी के हाथों किए जाएंगे वितरित

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स
देहरादून। उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से चयनित 1347 सहायक अध्यापकों (एलटी) को आगामी 14 अक्टूबर को नियुक्ति पत्र वितरित किये जायेंगे। पटेलनगर स्थित राजकीय दून मेडिकल कालेज के प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के हाथों सभी चयनित शिक्षकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किये जायेंगे। इसके साथ ही चयनित शिक्षकों को प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यालयों में प्रथम तैनाती दी जायेगी, जिससे दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी दूर होगी और

गढ़वाल में 681 और कुमाऊ मंडल में 671 पदों पर शिक्षकों का चयन

देहरादून। विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि आयोग द्वारा उपलब्ध सूची के तहत गढ़वाल मंडल में सामान्य व महिला शाखा में 681 पदों पर शिक्षकों का चयन हुआ है। जिसमें हिन्दी विषय में 112, अंग्रेजी 98, संस्कृत 9, गणित 66, विज्ञान तथा सामान्य विषय 109-109, कला 103, व्यायाम 59, गृह विज्ञान 3, वाणिज्य 11 तथा संगीत विषय में 2 शिक्षक शामिल हैं। इसी प्रकार कुमाऊ मंडल में सामान्य व महिला शाखा में 671 पदों पर शिक्षकों का चयन हुआ है। जिसमें हिन्दी विषय में 90, अंग्रेजी 73, संस्कृत 12, गणित 89, विज्ञान 88, सामान्य विषय 128, कला 127, व्यायाम 45, गृह विज्ञान 8, संगीत 6, उर्दू 1 तथा वाणिज्य विषय में 4 शिक्षक शामिल है।

छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। सूबे के विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि

विभाग को चयनित अभ्यर्थियों की सूची उपलब्ध करा दी है। जिसके क्रम में आयोग से चयनित 1347 शिक्षकों को आगामी 14 अक्टूबर को नियुक्ति पत्र वितरित कर दिये जायेंगे। जिसको लेकर विभाग ने सभी तैयारियाँ पूरी कर ली है। डॉ. रावत ने बताया कि चयनित अभ्यर्थियों को राजकीय दून मेडिकल कालेज पटेलनगर के प्रेक्षागृह में विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के हाथों नियुक्ति पत्र दिये जायेंगे। विभागीय मंत्री ने बताया कि आयोग द्वारा घोषित भर्ती परिणाम को लेकर कुछ अभ्यर्थियों द्वारा उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। न्यायालय ने सभी याचों का निस्तारण कर 1347 पदों पर नियुक्ति देने के

आदेश पारित किये हैं जबकि शेष पदों को रिजर्व रखने के निर्देश दिये गये हैं। डॉ. रावत ने बताया कि इन सभी चयनित शिक्षकों को प्रथम तैनाती राज्य के दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों के विद्यालयों में दी जायेगी ताकि वहां शिक्षकों की कमी दूर कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सके। डॉ. रावत ने बताया कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश के प्रत्येक विद्यालयों में विषयवार शिक्षक उपलब्ध कराना है। विभाग लगातार शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही प्राथमिक शिक्षा विभाग में 2100 सहायक अध्यापकों व माध्यमिक शिक्षा विभाग में 800 से अधिक पदों पर प्रवकाओं की नियुक्ति की जायेगी।

सीबीआई जांच और पुनः परीक्षा, शंका निवारण को सभी पक्ष रखें धैर्य: भट्ट

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा ने सीबीआई जांच और दोबारा परीक्षा को छात्रों के मन की शंका निवारण के लिए जरूरी बताते हुए, सभी पक्षों से सन्न रखने की अपील की है। प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने कांग्रेसी बयानवाजियों पर तंज कसा कि जिनकी स्वयं जनता में विश्वसनीयता नहीं बची हो, वे युवाओं के भविष्य के मुद्दे पर भ्रम एवं अफवाह फैलाने में जुटे हैं।



जिनकी जनता में विश्वनीयता नहीं, वे युवाओं भविष्य के मुद्दे पर भ्रम फैलाने में जुटे : भाजपा

विश्वास है और ये दावा हम यूं ही नहीं करते। विगत 4 वर्षों में हम युवाओं को राज्य निर्माण की सभी सरकारों में दी गई कुल नियुक्तियों से भी अधिक नौकरियाँ देने में सफल हुए हैं उसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य

है कि एक भी गड़बड़ी, नकल या पेपर लीक का आरोप नहीं लगा। जिसमें बड़ी भूमिका धामी सरकार द्वारा देश का सबसे कठोर नकल कानून लागू करना रहा। हमने पूर्ववर्ती सरकारों, विशेषकर कांग्रेस सरकारों में जड़ जमाए नकल माफियाओं को उखाड़ने का काम किया, सैकड़ों नकल के आरोपी बड़े छोटे सभी लोगों को गिरफ्तार किया गया। हमारी सरकार वर्तमान सरकार में राज्यवाियों का विरवास नियुक्ति प्रक्रियाओं में स्थापित करने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा, इसमें कोई दो राय नहीं कि हाल में यूकेएसएसएससी की स्नातक स्तरीय परीक्षा में नकल की एक घटना के दुस्साहस से छात्रों के एक वर्ग में संशय निर्मित हुआ है।

युवाओं ने रंगोली में दिखाई प्रतिभा

संस्कार भारती की ओर से दीपावली परिवार मिलन का भव्य आयोजन

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। संस्कार भारती की हल्द्वानी इकाई द्वारा दीपावली परिवार मिलन कार्यक्रम का आयोजन रविवार को मधुबन बैंकवेट हॉल, नैनीताल रोड पर भव्य रूप से संपन्न हुआ। भारतीय कला और संस्कृति के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बक के भाव को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्र के प्रख्यात एवं नवोदित कलाकारों ने अपनी मनमोहक कस्तूरियों से सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती और नटराज प्रतिभा के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ, जिसमें नगर प्रचारक प्रभाकर जी, जिला प्रचारक जितेंद्र जी, तरुण जी, प्रांत मंत्री उद्योग भारती पांडे, महानगर अध्यक्ष डा. महेश पांडे, महामंत्री मोहन पांडे, उपाध्यक्ष



संजय बल्लूटिया, कोषाध्यक्ष आरएस कालाकोटी, कार्यक्रम संयोजक मनोज पांडे और दूरस्थ विधा प्रमुख कुसुम पांडे एवं कविता पांडे ने सम्मिलित होकर दीप जलाए। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की शुरुआत संस्कार भारती के ध्येय गीत के सामूहिक गायन से हुई। इसके बाद मंच पर वरिष्ठ कलाकारों प्रभाकर

जोशी, डा. महेश पांडे, हरीश भट्ट, हेमन्त करण्य एवं नवोदित कलाकारों विभाषना पांडे, पर्णिता पांडे, युक्तिवं पांडे, दक्षिता पांडे, रिया, कशिश और साक्षी उप्रेती ने विभिन्न नृत्य, संगीत एवं काव्य को प्रस्तुतित की। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त कुसुम पांडे के निर्देशन में युवाओं ने रंगोली और चित्रकला में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इनमें

विष्णु तिवारी, चेतन जोशी, खुशी पालडौ, अंशुल पांडे, रिया कबड्वाल, रिया मिश्रा, आंचल, नीतिश शर्मा, जय टम्टा, पल्लवी फल्याल, निश्चल तिवारी, दिमिरा, भाविका और अथर्व पांडे शामिल रहे। संगीत संगत में तबले पर गिरिजेश तिवारी और हारमोनियम पर हरीश मेहता ने सहयोग किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक जितेंद्र जी ने संस्कार भारती द्वारा कला के माध्यम से भारतीय पारिवारिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम के सफल आयोजन में कृष्णकांत भट्ट, धीरज पडियार, मुकेश तिवारी, ललित तिवारी और नीरज जोशी सहित कई स्वयंसेवकों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

ध्वस्तीकरण के विरोध में धरना

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। अमृत योजना के अंतर्गत रेलवे द्वारा जवाहर नगर में मंदिर मस्जिद तथा आवासीय भवनों पर लाल निशान लगाकर मकानों का

लेना होता है तो हम वैध हो जाते हैं और जब हमें सुविधा देने का वकत आता है तो हम अवैध हो जाते हैं। नफीस अहमद खान ने कहा कि सरकार आम जनता चुनौती है, सरकार



ध्वस्तीकरण करने की योजना का विरोध करते हुए भीम आर्मी जिलाध्यक्ष नफीस अहमद खान के नेतृत्व में भीम आर्मी द्वारा जवाहर नगर में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। सभा का संचालन नफीस अहमद खान ने किया। सभा को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि भाकपा माले के जिला सचिव डा. कैलाश पाण्डेय ने कहा कि सरकार को हम लोग विकास के लिए चुनते हैं, लेकिन सरकार विनाश कर रही है। विशिष्ट अतिथि के के बोरा ने कहा कि जब नेताओं को हमारा दंड

हमारी है और जब सरकार हमारी है तो यह जमीन भी हमारी है, अ ग र

ऐसा न होता तो दिल्ली में सरकार झोपड़ी की जगह पक्के मकान देने का वायदा न करती। फिरोज खान ने कहा कि सरकार अनेकों तरह से परेशान कर रही है। सत्यापन के नाम पर घरों से निकाल कर रेलवे स्टेशन पर जमीन में लाइन लगाकर बैठाकर जुर्मन वसुलेने के साथ बेइज्जती भी करती है। सभा में महेश चंद्र आर्य, पंकज अम्बेडकर, जीतराम, आकाश भारती, हरीश लोधी, संजय कुमार टम्टा, नवीन मूलनिवासी, खीम चंद्र आर्य, राजू राजभर, नौशाद अहमद व दर्जनों क्षेत्रीय जनता उपस्थित थी

आतिशबाजी की दुकानें लगाए जाने को एसडीएम ने ली बैठक

शाह टाइम्स संवाददाता
काशीपुर। दीपावली त्योहार पर आतिशबाजी की दुकानें लगाए जाने के लिए एसडीएम अभय प्रताप सिंह ने फायर सर्विस, नगर निगम व व्यापार मंडल की बैठक ली। बैठक में व्यापार मंडल ने चैती मेला मैदान में आतिशबाजी की दुकानें लगाने का सुझाव दिया। एसडीएम ने कहा कि सभी दुकानदार शासन व डीएम द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानकों का पालन करेंगे। उन्होंने अग्निशमन विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि आतिशबाजी की दुकानों के क्षेत्र में अग्निशमन वाहनों की तैनाती व मार्कडिल के माध्यम से वाहनों का आवागमन सुनिश्चित कर लिया जाए। दुकानें लगाने के लिए संबंधित विभागों की अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होगा। पत्रा अनुमति के किसी भी स्थान पर बिना उचित बचे जाएंगे। उल्लेखनीय है कि 80 के दशक तक आतिशबाजी की दुकानें मुख्य बाजार में बुरा बताशा गली के मोड़ पर लगती थीं। 90 के दशक में ये दुकानें नगरपालिका व एनडीटी मार्केट में लगीं। वहां भयानक हादसे के बाद इस हेतु रामलीला मैदान का चयन किया गया और वहां आतिशबाजी का बाजार सजा। आबादी के चलते वहां से पटाखा बाजार हटाया गया और इसके बाद उदयरग फील्ड में पटाखा बाजार लगाया जाने लगा। हर बार की तरह इस बार भी पटाखा बाजार के संबंध में बैठक हुई, जिसमें व्यापार मंडल द्वारा चैती मैदान में पटाखा बाजार लगाये जाने का सुझाव दिया गया है।

किसानों को आत्मनिर्भर बनाने

दिशा में काम कर रही सरकार: धामी

किसान मेले के तीसरे दिन ‘रजत जयंती वर्ष’ के पर गोष्ठी एवं संवाद

शाह टाइम्स संवाददाता

पंतनगर। विश्वविद्यालय में 118वें अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के तीसरे दिन उत्तराखंड राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक विशेष गोष्ठी एवं संवाद कार्यक्रम का आयोजन गांधी हाल में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साथ विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान, रुद्रपुर के विधायक शिव अरोरा, काशीपुर के विधायक त्रिलोक सिंह चौमा, कपकोट के विधायक सुरेश गढ़िया, रुद्रपुर के मेयर विकास शर्मा, पूर्व विधायक किच्छा राजेश शुक्ला, मंडी अध्यक्ष अनिल कपूर डब्बू, जिलाध्यक्ष राजुन सुखीजा, जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्या, रमेश जोशी, दीप कोशारी, निर्देशक प्रसार शिक्षा डा. जितेंद्र क्वारा के साथ अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने समान नागरिक संहिता, नकल विरोधी कानून एवं किसानों की प्रगति के बारे में संक्षिप्त जानकारी सभी के समक्ष प्रस्तुत की। तदोपरान्त प्रगतिशील कृषक गढ़पुर सीमा रानी ने अपने अनुभवों को साझा किया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार एक पारदर्शी, न्यायपूर्ण और विकासोन्मुख शासन प्रणाली की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि समान नागरिक संहिता के दिनांक 26 अक्टूबर को किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं लागू कर रही



वागों के लिए समानता, न्याय और सामाजिक एकता की भावना को सशक्त बनाएगा। इसी प्रकार नकल विरोधी कानून युवाओं के उच्चतर भविष्य और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को सुनिश्चित करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम है। उन्होंने आगे कहा कि सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के साथ-साथ उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएं लागू कर रही

हैं। विश्वविद्यालय क्यूएस वर्ल्ड रैंकिंग में 361वें स्थान से 209वें स्थान प्राप्त करने लिए उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति को बधाई दी। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री द्वारा विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की सराहना की गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित दलहन की पंत उर्द-13, पंत उर्द-14, पंत मटर 554 एवं पंत किस्म पंत जी 1106 का

नफरत की राजनीति के खिलाफ होगा संघर्ष

शाह टाइम्स संवाददाता
अल्मोड़ा। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति का जिला संग्रहालय सभागार में आठवां जिला सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में महिलाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई, बेरोजगारी के मुद्दे उठाए। महिलाओं पर हो रहे हमलों और नफरत की राजनीति के खिलाफ संघर्ष तेज करने का आह्वान किया। पर्यवेक्षक समिति की राज्य अध्यक्ष अश्विनीका सुनीता पांडे ने कहा कि वर्तमान राजनीतिक परिचय आम आदमी को उसके नागरिक अधिकारों से कोसों दूर कर रहा है। कहा कि अधिभारण की स्वतंत्रता और निर्णय लेने के फैसलों पर बेइयास कर रही है। प्रगतिशील



नगर कांड के दोषियों को सजा नहीं मिल पाई है, जबकि राज्य बनने में महिलाओं का संघर्ष एवं बलिदान महम रहा है, लेकिन पहाड़ में पार्वती रावत, नीमा, जतौली, सरस्वती, डा. आरधना शुक्ला ने कहा की आज के दिन को सबसे बड़ी जरूरत है कि

महिलाएं संवैधानिक अवसरों का इस्तेमाल करते हुए अपने आत्मसम्मान के लिए एकजुट होकर अधिकारों को हासिल करें। सम्मेलन में जिला समिति की 17 सदस्यीय नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से जिला अध्यक्ष पद पर डा. आरधना शुक्ला, सचिव ऋतु रावत, कोषाध्यक्ष राधा नेगी

सड़क से 50 फीट नीचे

खाई में गिरी कार
अल्मोड़ा। तिमली पिपुड़ा पुल के समीप बीती रात एक कार अनियंत्रित होकर सड़क से 50 फीट नीचे खाई में जा गिरा। हादसे में कार में सवार चार लोग घायल हो गए। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार बीती रात डायल 112 को हादसे की सूचना मिली। दुर्घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। इस दौरान कार संख्या यूके 04 एई 2425 सड़क से लगभग 50 फीट नीचे खाई में गिरी हुई थी। हादसे में कार में सवार डा. राहुल वर्मा, डा. मनन वर्मा, डा. अनिरुद्ध वैद्य, मार्केटिंग ऑफिसर प्रशांत घायल हो गए। पुलिस द्वारा सभी घायलों को खाई से बाहर निकाला गया। आपातकालीन वाहन से सभी घायलों को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थानदे उपचार के लिए भेजा गया। डा. मनन वर्मा को हायर सेंटर रेफर किया गया।

एससी गुड़िया आईएमटी में खेल सप्ताह शुरू

एगोवोल्टिक परियोजना क्षेत्र के विकास के मील का पत्थर साबित होगी : दीपक बाली

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। बाजपुर रोड स्थित सर्वोच्च चंद गुड़िया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड लॉ कॉलेज के प्रांगण में संस्थान के विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के मध्य खेल सप्ताह का शुभारंभ महापीर दीपक बाली, सीएसआईआर देहरादून के पूर्व निदेशक डॉ. अंजन रे एवं अन्य अतिथियों ने मां सरस्वती, संस्थान के संस्थापक स्वर्गीय गुड़िया और संस्थान के प्रेरणा प्रदाता पंडित नारायण दत्त तिवारी की प्रतिमा के समुपक्ष दीप प्रज्वलित एवं पुष्पांजलि अर्पित करने के पश्चात छिलाडियों से परिचय प्राप्त कर किया। उक्त प्रतियोगिता में इनडोर एवं आउटडोर सहित विभिन्न खेलों का आयोजन



किया जा रहा है जिसके अंतर्गत बैडमिंटन, टेबल टेनिस, क्रिकेट, चक्र, कैरम, रिले स्टा, आर्म रेसलिंग, रस्साकसी, एथलेटिक्स एवं अन्य खेल आयोजित होंगे। इसके अतिरिक्त आज संस्थान के प्रांगण में देश के पहले एगोवोल्टिक परियोजना के लिए बीज रोपित कार्यक्रम आयोजित हुआ। आईआईपी देहरादून

लगाया गया है जिसके नीचे खेती की जा रही है। इन परियोजनाओं का भी आज महापीर दीपक बाली एवं डॉ. अंजन रे शुभारंभ किया। मेयर दीपक बाली ने कहा कि यह परियोजना काशीपुर के विकास में मील का पत्थर साबित होगी। इस अवसर पर अनुपम शर्मा, डॉ. योगराज सिंह, हाजी कम्मर आलम, संजय चतुर्वेदी, संजय कचौरिया, सुशरंज हूसेन, डॉ. दीपिका गुड़िया आत्रेय, लता शर्मा, मेयर मुनीशकांत शर्मा, उमेश जोशी, निरजित गुड़िया, पूजा सिंह, छात्र संघ अध्यक्ष जतिन शर्मा सहित संस्थान की समस्त फैकल्टी एवं स्टाफ उपस्थित रहे। संचालन संस्थान की प्राचार्या डॉ. निमिषा अग्रवाल ने किया।

समर स्टडी हॉल सब जूनियर कबड्डी प्रतियोगिता सम्पन्न

शाह टाइम्स संवाददाता
काशीपुर। समर स्टडी हॉल विद्यालय में चल रही 23वीं उत्तराखंड सब जूनियर कबड्डी प्रतियोगिता विधिवत रूप से सम्पन्न हो गई। इस प्रतियोगिता में उत्तराखंड के 12 जिलों की बालक व बालिका वर्ग की लगभग 20 टीमों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता उत्तराखंड कबड्डी फेडरेशन के तत्वधान में उधम सिंह नगर कबड्डी एसोसिएशन के द्वारा समर स्टडी हॉल विद्यालय द्वारा आयोजित की गई। प्रतियोगिता के दूसरे दिन का शुभारंभ डॉ. रवि सहोता द्वारा किया गया। इस दौरान प्रथम सेमीफाइनल मैच बालिका वर्ग में उधम सिंह नगर व टिहरी के बीच



व हरिद्वार के बीच खेला गया जिसमें हरिद्वार की टीम ने 48-13 से विजय हासिल कर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच देहरादून व उधम सिंह नगर के बीच खेला गया जिसमें

हरिद्वार टीम 54-21 से विजयी रही। बालक वर्ग में प्रथम सेमीफाइनल मैच देहरादून व पौड़ी के बीच खेला गया जिसमें देहरादून की टीम ने 44-20 से विजय हासिल कर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच देहरादून व उधम सिंह नगर के बीच खेला गया जिसमें

सिंह नगर टीम ने 40-18 से विजयी होकर जीत हासिल की। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में गुडमोहर शाह रेफरी इंचार्ज, प्रवीण टिहरी, अदिति डबराल देहरादून, प्रवीण चौहान देहरादून, नरेंद्र चौहान देहरादून, रवि राठी हरिद्वार, समीर हरिद्वार, सुधीर कुमार हरिद्वार, शालिनी आर्य उधम सिंह नगर, विमल पांडे उधम सिंह नगर एवं पलक उधम सिंह नगर रहे। इस अवसर पर नरेंद्र सिंह पूर्व उपाध्यक्ष कबड्डी एसोसिएशन, चेतन अरोरा, प्रदीप सपरा, अर्पण शर्मा, शशांक सिंह, डॉ. योगेश चौहान, उपप्रधानाचार्य मनु अग्रवाल एवं समस्त स्कूल स्टाफ उपस्थित रहा।

हिंदी प्रकाशन जगत की संभावनाओं पर हुई चर्चा

अल्मोड़ा। सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा में चल रहे तीन दिवसीय अल्मोड़ा लिट फेस्ट का रविवार को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ समापन हो गया है। समापन मौके पर कुमाऊं की सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हुए मधुर कुमाऊं गीत गीत मां कोकिला समुह द्वारा प्रस्तुत किया गया। जिसने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। वहीं, अनन्या तिवारी ने अपनी मनमोहक कथक करायी। कार्यक्रम के दौरान विशेष सत्र हिंदी प्रकाशन जगत की वर्तमान दिशा और भविष्य की संभावनाओं पर केंद्रित रहा। इस सत्र में ‘हिंद युग’ के संस्थापक और प्रसिद्ध प्रकाशक शैलेश भारतावासी ने अपने विचार साझा किए।

कोटाबाग में यूकेडी का सम्मेलन

शाह टाइम्स संवाददाता

कालाढूंगी। कोटाबाग के नाथुनगर रामलीला मैदान में रविवार को उत्तराखंड क्रांति दल ने एक विशाल जनसभा का आयोजन किया। कार्यक्रम का नेतृत्व



केंद्रीय मंत्री भुवन सिंह बिष्ट और केंद्रीय अध्यक्ष पुरन सिंह रहे। सभा के दौरान कई लोगों ने पार्टी की सदस्यता ली, जिनमें मनोज बिष्ट, गोविंद अधिकारी, नंदन सिंह नेगी, सुमित जलाल, प्रेमा देवी, जीवन्ती देवी और मोहनी देवी शामिल हैं। भुवन सिंह बिष्ट ने कहा कि उत्तराखंड को जन्म देने वाली पार्टी उक्रांड ही है और अब युवा इसकी कमान संभाल रहे हैं। उन्होंने आगामी विधानसभा चुनावों में सभी सीटों पर चुनाव लड़ने और सरकार बनाने का दावा किया। सूरज मनराल ने राष्ट्रीय दलों पर प्रदर्शन को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाते हुए जनता से उक्रांड को समर्थन देने की अपील की। उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए अब राज्य हित में एकजुट होना जरूरी है। इस दौरान युवा केंद्रीय मंत्री कमल जोशी, सुशील उनीवाल, केंद्रीय महामंत्री, पुरन सिंह केंद्रीय मंत्री भुवन सिंह बिष्ट सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

सूर्या रोशनी ने किया पत्रकारों को सम्मानित

शाह टाइम्स संवाददाता
काशीपुर। सामाजिक समरसता और संवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सूर्या रोशनी लिमिटेड काशीपुर के तत्वावधान में ‘पत्रकार मिलन कार्यक्रम’ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कंपनी के अधिकारियों और पत्रकारों के बीच परिचय एवं विचार विमर्श हुआ। उपस्थित पत्रकारों ने अपने अनुभव साझा किए और उद्योग क्षेत्र से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर खुलकर चर्चा की। कार्यक्रम में सूर्या रोशनी लिमिटेड काशीपुर के प्लॉट हेड शुभम चमोली एवं एचआर हेड संजीव कुमार मुख्य रूप से उपस्थित रहे। संचालन एवं संयोजन हिमांशु द्वारा किया गया, जिन्होंने सभी पत्रकारों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पत्रकार समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कहा कि ऐसे संवाद कार्यक्रम आगे भी निरंतर आयोजित किए जाते रहेंगे।

जमीन के फर्जीबाड़े में फंसे रसूदखदार

जिला पंचायत अध्यक्ष समेत सात प्रभावशाली लोगों पर मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। गोलापार क्षेत्र में करोड़ों रुपये मूल्य की सरकारी जमीन को फर्जी दस्तावेज और धुप्टाचार के सहारे हड़पने का बड़ा मामला सामने आया है। इस घोटाले में नैनीताल की जिला पंचायत अध्यक्ष, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के बेटे समेत सात प्रभावशाली लोगों और तत्कालीन राजस्व अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगे हैं। आईजी रिडिम अग्रवाल के निर्देश पर काठगोदाम पुलिस ने सभी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी) के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बता दें कि शिकायतकर्ता रविशंकर जोशी द्वारा पुलिस को दी गई तहरीर के अनुसार यह मामला हल्द्वानी तहसील के देवला तल्ला

पजाया गांव की 3.107 हेक्टेयर लगभग 7.6 एकड़ सरकारी भूमि से जुड़ा है। आरोप है कि बलवंत सिंह नामक व्यक्ति ने झूठे

पूर्व विस अध्यक्ष के बेटे पर भी केस

राधपत्र-पत्र के माध्यम से यह दावा किया कि उसके पास 12.5 एकड़ से अधिक भूमि नहीं है, जबकि उसके नाम पहले से ही हल्द्वानी, गोलापार, कुंवरपुर व हल्द्वानी खास में इससे कहीं ज्यादा जमीन दर्ज थी। बावजूद इसके, राजस्व अधिकारियों ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर उसे जमीन का मालिक बना दिया। वर्ष 1991 में तत्कालीन जिलाधिकारी ने बलवंत सिंह के कब्जे को अवैध

मानते हुए उसकी बेदखली का आदेश दिया था। मगर 2011 से 2016 के बीच जब जमीन के विनियमितीकरण की प्रक्रिया दोबारा शुरू हुई, तो इस आदेश को जानबूझकर छिपा लिया गया और जमीन रेगुलराइज कर दी गई। विनियमितीकरण के बाद 10 मार्च 2016 को बलवंत सिंह ने पूरी जमीन कमलुवागांजा निवासी रविकांत फुलारा के नाम दान कर दी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि फुलारा की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है, बावजूद इसके उसने 19 लाख रुपये का भारी-भरकम स्टॉप शुल्क जमा किया जो काले धन के इस्तेमाल की आशंका को बल देता है। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि दान के सिर्फ दो महीने बाद 9 मई 2016 को रविकांत फुलारा ने

पूरी जमीन सात हिस्सों में बांटकर सात प्रभावशाली लोगों को बेच दी। इन खरीदारों में नैनीताल की जिला पंचायत अध्यक्ष दीपा दरमवाल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के पुत्र हरेंद्र सिंह कुंजवाल, मौनाक्षी अग्रवाल, अजय गुप्ता, चेतन गुप्ता, अनिता गुप्ता और अरविंद मेहरा के नाम शामिल हैं। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि इन सौदों से कुल 3.25 करोड़ रुपये की बड़ी रकम मिली, लेकिन आशंका जताई जा रही है कि यह रकम फुलारा से जबरन वापस ले ली गई। यहां तक कि फुलारा को धमकी देकर जमीन बेचने के लिए मजबूर किया गया। काठगोदाम थानाध्यक्ष विमल मिश्रा ने पुष्टि की है कि डीआईजी के आदेश पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

सांप ने बच्चे को डसा, मौत हल्द्वानी। रात में सोते समय एक आठ साल के बच्चे को सांप ने डस लिया। जिससे आनन आनन फानन में उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। बच्चे की हालत नाजुक देखते हुए उसे सुशीला तिवारी अस्पताल रेफर कर दिया। जहां बच्चे ने उपचार के दौरान मौत हो गई। घटना के बाद बच्चे के घर में कोहराम मच गया। रविवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराके शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। जानकारी के अनुसार अबेंडकरनगर वार्ड-3 जगतपुरा टनकपुर चंपावत निवासी राजू वर्मा का आठ साल का बेटा दीपक बीते शनिवार को रात खाना खाने के बाद सो गया। परिजनों ने बताया कि रात करीब 11 बजे दीपक की चीखने की आवाज आई और बोला उसे काट लिया। इतना सुनते ही परिजनों के होश उड़ गए और उन्होंने सांप को जाते देखा। आनन फानन में परिजन उसे टनकपुर अस्पताल लाए जहां पर चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देने के बाद उसे सुशीला तिवारी रेफर कर दिया। जहां पर उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

चोर गैंग की बुआ-भतीजी गिरफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। करवाचौथ की खरीदारी के दौरान महिलाओं के पर्स चुराने वाली बुआ-भतीजी की जोड़ी को मंगलपड़ाव पुलिस ने महज दो घंटे में चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया। पकड़ी गई बुआ भतीजी के पास से चोरी किया हुआ सामान भी बरामद किया है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। बता दें दसुवाड़ा काठगोदाम निवासी सुशीला आर्या पति रमेश चन्द ने कहा था बीते 9 अक्टूबर को वह करवाचौथ की खरीदारी के लिए बाजार गई थीं। तभी साहूकारा लाइन मंगलपड़ाव में खरीदारी के दौरान दो महिलाओं ने उनके कपड़े के थैले से पर्स चोरी कर लिया, जिसमें 3000 रुपये की नगदी, आधार कार्ड, रियूमे और एटीएम कार्ड था। कोतवाली पुलिस ने मामला

दर्ज करते हुए चोरों की तलाश शुरू कर दी। जांच के दौरान मंगल पड़ाव चौकी प्रभारी गौरव जोशी ने कंट्रोल रूम प्रभारी जितेन्द्र सिंह की मदद से घटनास्थल व आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू किए। इस दौरान कुछ संदिग्धों की

बताया। पकड़ी गई महिला चोर ने बताया कि वे त्योहारों के दौरान भीड़भाड़ वाले बाजारों में जाकर महिलाओं के पर्स और जेवरत चुराती हैं। एक महिला को घेरकर उसे बातों में उलझाती हैं, दूसरी चोरी करती है। इससे पहले भी वे हल्द्वानी में चोरी



कर चुकी हैं। दोनों आपस में बुआ-भतीजी हैं। जिनके पास से पुलिस ने चोरी किए गए 3 हजार की नगदी, आधार कार्ड, रियूमे और एटीएम कार्ड बरामद किया है। दोनों के खिलाफ

पहचान के बाद सिंधी चौक हल्द्वानी से दो महिलाओं को पकड़ा गया। पकड़ी गई महिलाओं ने अपना नाम मिथलेश पत्नी सुरेन्द्र निवासी पुनापुर, बरेली उत्तर प्रदेश, मौना पत्नी रामकिशोर निवासी चौजित कैंप रुद्रपुर मूल निवासी चौखंडी बरेली

पुलिस ने कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। गुडवर्क करने वाली टीम में मंगलपड़ाव चौकी प्रभारी गौरव जोशी, कांस्टेबल भूपाल सिंह, संतोष बिष्ट, महिला कांस्टेबल राधा रानी शामिल थे।

वनभूलपुरा थाने में निरीक्षक सुशील कुमार को दी भावभीनी विदाई



शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। वनभूलपुरा थाना परिसर में रविवार को प्रभारी निरीक्षक सुशील कुमार के सम्मान में एक भावभीनी विदाई समारोह आयोजित किया गया। सुशील कुमार को रामनगर कोतवाली का प्रभारी निरीक्षक नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर थानाध्यक्ष सुनील जोशी, उपनिरीक्षक मनोज यादव सहित थाने के सभी अधिकारी व कर्मचारी ने उन्हें गुलदस्ता और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया और उनके साथ बिताए गए पलों को याद करते हुए शुभकामनाएं दीं। सभी अधिकारियों ने सुशील कुमार की कार्यकुशलता अनुशासनप्रियता और सख्त स्वभाव की सराहना और विश्वास जताया कि वे अपने नए दायित्व में भी उत्कृष्ट कार्य करेंगे।

डा. लोहिया की दूरदर्शिता आज भी प्रासंगिक: मतीन सिद्दीकी

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। डा. राममनोहर लोहिया की 58वीं पुण्यतिथि के अवसर पर समा. जवादी पार्टी उत्तराखंड के प्रभारी हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी के कार्यालय 17-आजाद नगर हल्द्वानी में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एकत्रित हुए और लोहिया जी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सभा की अध्यक्षता कर रहे सभा प्रभारी हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी ने कहा कि डा. राममनोहर लोहिया एक सच्चे समाजवादी विचारक थे। जिन्होंने



महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश को आजादी के लिए संघर्ष किया। श्रद्धांजलि सभा में जावेद सिद्दीकी, अरशद अख्तर, जावेद मिकरानी, अलीम अंसारी, उमैर मतीन, इस्लाम मिकरानी, रेहान मलिक, संजय गुप्ता,

आसिम सिद्दीकी, अनवर हुसैन, जाहिर खान, विकास खान, दीपक अग्रवाल, सतारज अंसारी, एडवोकेट जावेद अहमद, नाजिम सलमानी, अथर खान, मोहम्मद अनस, मोहम्मद अरशद, अजहर मलिक रहे।

ट्रांसपोर्ट नगर जुआ खेल रहे चार जुआरी धरे

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। दीपावली पर्व को देखते हुए जनपद नैनीताल में अवैध गतिविधियों पर पुलिस द्वारा लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है। बीती शनिवार की रात्रि कोतवाल की अगुवाई में टीपीनगर पुलिस ने सार्वजनिक जगह पर जुआ खेल रहे चार लोगों को गिरफ्तार किया है। जिनके पास से ताश के पत्ते व हजारों की नगदी बरामद हुई।



चारों जुआरियों के खिलाफ पुलिस ने जुआ अधिनियम के तहत कार्रवाई की है। जानकारी के अनुसार बीते शनिवार की रात्रि कोतवाल अमर चन्द्र शर्मा के नेतृत्व में टीपीनगर चौकी प्रभारी मनोज कुमार ने मय टीम के साथ ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र में छापेमारी की तो चार जुआरी जुआ खेलते हुए रंगहाथ गिरफ्तार हुए।

जिनके पास से ताश के पत्ते व 14 हजार 920 रुपये की नगदी बरामद हुई। पकड़े गए जुआरियों ने अपना नाम मोहम्मद आमीर निवासी लाइन नंबर 17 बनभूलपुरा, जिसान राजा निवासी समर डीलक्स उत्तर उजाला बनभूलपुरा, सलीम अहमद निवासी इन्द्रानगर बड़ी मस्जिद के पीछे बनभूलपुरा, विकल कुमार निवासी

...इधर बनभूलपुरा में भी दबोचे गए तीन जुआरी

हल्द्वानी। दीपावली पर्व पर हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेल रहे तीन जुआरियों को बनभूलपुरा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पकड़े गए जुआरियों के पास से ताश के पत्ते व 3380 रुपये की नगदी बरामद की है। जानकारी के अनुसार बीते शनिवार की रात्रि बनभूलपुरा थाना पुलिस क्षेत्र में गश्त कर रही थी तभी पुलिस को सूचना मिली की रेलवे स्टेशन के पास पार्किंग में कुछ युवक जुआ खेल रहे हैं।

सूचना पर एसआई हेमंत कुमार ने मय टीम के साथ बताए गए स्थान पर छापेमारी की तो पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए जुआरियों ने अपना नाम फजले अहमद निवासी हनीफ होटल लाइन नंबर 8 बनभूलपुरा, मोहम्मद रफी निवासी आजाद नगर गफूर हलवाई के पीछे बनभूलपुरा, जिब्राइल निवासी मोहम्मदी चौक इंदिरानगर बनभूलपुरा बताया। पकड़े गए जुआरियों के पास से 3380 रुपये की नगदी व ताश के पत्ते बरामद हुए हैं। तीनों के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है।

आरटीआई पर जागरूकता अभियान

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लॉ द्वारा सूचना के अधिकार विषय पर आयोजित सप्ताहीय जनागणकता कार्यक्रम रविवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। यह अभियान 5 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक चला और इसे उत्तराखंड राज्य सूचना आयोग के निर्देशानुसार आयोजित किया गया।



इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों और नागरिकों ने भाग लिया। इस विषय के माध्यम से प्रतिभागियों को न केवल आरटीआई के कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें इस अधिनियम के व्यावहारिक उपयोग और सामाजिक महत्व को समझने का भी अवसर मिला। कार्यक्रम की सफलता पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन

चंद्र लोहनी ने स्कूल ऑफ लॉ की टीम को बधाई देते हुए कहा, सूचना का अधिकार लोकतंत्र की आत्मा है। इस दिशा में नागरिकों को शिक्षित करना उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की सामाजिक जिम्मेदारी है, जिसे हम निरंतर निभा रहे हैं। यह अभियान सुशासन, पारदर्शिता और नागरिक सशक्तिकरण को दिशा में मील का पथर साबित होगा।

बस सेवा सुचारू करने के लिए सांसद ने लिखा पत्र

हल्द्वानी। पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री सांसद अजय भट्ट ने प्रबंध निदेशक उत्तराखंड परिवहन निगम को पत्र लिखकर कहा है कि उनके संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत अनेक ग्रामीण एवं पहाड़ी क्षेत्रों में बसेरा, मोना, दिवारी सिमायाल, प्यूड़ा, कफूड़ा, सतोली, सतखोल, छतोला, बड़ौत, सिमायाल रैकवाल, गडगांव, मैयांडा, हरिनगर, नथुवाखान, ल्वेशाल, रामगढ़ आदि में उत्तराखण्ड परिवहन निगम द्वारा पूर्व में अलमोड़ा से संचालित बस सेवाएं बंद कर दी गई हैं। लोगों को आवाजाही में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए उपर्युक्त क्षेत्रों के लिए पूर्ववर्त बस सेवाओं को शीघ्र पुनः प्रारंभ करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करना सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

पूर्व पुलिस महानिदेशक को अहम दायित्व

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। उत्तरांचल टेनिस एसोसिएशन की वार्षिक महासभा एवं कार्यकारिणी पुनर्गठन (चुनाव) का आयोजन एमजे रेजीडेंसी, निकट सीएमआई अस्पताल, आराधर, देहरादून के मीटिंग हॉल में सम्पन्न हुआ। महत्वपूर्ण बैठक में प्रदेशभर के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। बैठक में अशोक कुमार सेवानिवृत्त आईपीएस एवं पूर्व पुलिस महानिदेशक को एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया। महासचिव पद की जिम्मेदारी अंतर्राष्ट्रीय सीनियर टेनिस खिलाड़ी सुमित गोयल रानीखेत, को सौंपी गई। वहीं उपाध्यक्ष पद पर विजेंद्र चौहान, मनोज गुप्ता दोनों देहरादून, एवं देवेंद्र



अशोक कुमार टेनिस एसोसिएशन के निर्विरोध अध्यक्ष बने

सिंह रावत सेवानिवृत्त अतिरिक्त आयकर आयुक्त हल्द्वानी, निर्वाचित हुए। संयुक्त सचिव पद के लिए हेम कुमार पांडेय सेवानिवृत्त फोल्ड ऑफिसर, वन विकास निगम हल्द्वानी एवं लोकेश चतुर्जीजीनियर, देहरादून का चयन किया गया। कोषाध्यक्ष पद

की जिम्मेदारी दिनेश नागपाल देहरादून, न को दी गई। विशिष्ट सदस्य के रूप में अमर जगती जगती होटल, नैनीताल वर्तमान में उपसचिव, डिस्ट्रिक्ट टेनिस एसोसिएशन नैनीताल, वरुण बालिया, दुधार चर्मा दोनों देहरादून, नवीनत सिंह वर्तमान

एसएसपी, पौड़ी, भावना बिष्ट हल्द्वानी तथा अनुपमा पवार देहरादून को शामिल किया गया। बैठक में विशिष्ट अतिथियों के रूप में रानीखेत से गौरव पांडेय, डिस्ट्रिक्ट टेनिस एसोसिएशन अलमोड़ा के कोषाध्यक्ष, देहरादून से नरेंद्र कुमार, सुधीर कुमार मत्ता चार्टर्ड एकाउंटेंट, एवं आईटीबीपी के राजीव नेगी सहित कई अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। नव- निर्वाचित कार्यकारिणी आगामी चार वर्ष तक उत्तराखंड में टेनिस खेल के विभिन्न आयामों में विकास और विस्तार के लिए कार्यरत रहेगी। बैठक में टेनिस के भविष्य, खिलाड़ियों की प्रशिक्षण विकास, प्रशिक्षण सुविधाओं और दुर्नामेट्स के आयोजन जैसे विषयों पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

आम्रपाली विवि में नवागंतुक छात्रों का स्वागत

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। आम्रपाली विश्वविद्यालय हल्द्वानी में नवप्रवेशी छात्रों के स्वागत के लिए आयोजित अभिनंदन-2025 कार्यक्रम रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विभिन्न विभागों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों ने बड़-चढ़कर भाग लिया और मंच पर अपनी प्रतिभा की छटा बिखेरी। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि कालाहारी विधायक बंशीधर भगत, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डा. नरेन्द्र सिंह बिष्ट और प्रबंधन वर्ग द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। विशिष्ट अतिथियों में विषय, विद्यालय के अध्यक्ष चानन लाल ढींगरा, सीईओ डा. संजय ढींगरा, सचिव बिंदु चावला, संयुक्त सचिव मयंक ढींगरा सहित विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी मौजूद रहे। सीईओ डा. संजय ढींगरा ने कहा हम



सपने देखें, उन्हें साकार भी करें: कुलपति

उत्तराखंड के छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कुलपति प्रो. नरेन्द्र सिंह बिष्ट ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा आम्रपाली विश्वविद्यालय ने विगत 26 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। नवागंतुक विद्यार्थियों को चाहिए

कि वे अपने सपनों को पूर्ण निष्ठा के साथ पूरा करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। मुख्य अतिथि विधायक बंशीधर भगत ने कहा युवा शक्ति में जोश, उत्साह और ऊर्जा होती है। आम्रपाली विश्वविद्यालय ने हल्द्वानी क्षेत्र में शिक्षा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। विद्यार्थियों को चाहिए

कि वे न केवल अपनी शिक्षा में बल्कि समाज के प्रति भी उत्तरदायित्व निभाएं। कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्य, कुमाऊंजी नृत्य, बालीवुड डांस और भांगड़ा जैसे रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नवागंतुक विद्यार्थियों में से प्रतिभा वेशभूषा, रंग वाक एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से विश्वविद्यालय के मिस्टर

एवं मिस फ्रेशर चुने गये। मिस फ्रेशर वंशिका वारियाल एवं मिस्टर फ्रेशर करन चौधरी को, मिस बैस्ट टैलेंट गरिमा गुठोलिया, मिस्टर बैस्ट टैलेंट मनीष टाकूली को चुना गया। मिस बैस्ट पर्सनैलिटी सौम्या एवं मिस्टर बैस्ट पर्सनैलिटी तपन बिष्ट ने जीता। मिस बैस्ट एंटरप्र प्रियंका मिश्रा एवं मिस्टर बैस्ट एंटरप्र पर शुभम कुमार ने अपना दवा पेश किया। गायन एवं वादन प्रस्तुतियों ने भी माहौल को संगीतमय बना दिया, जिससे पूरे परिसर में उत्सव जैसा वातावरण बना रहा। कार्यक्रम में समन्वयक एवं परीक्षा नियंत्रक प्रो. डा. एमके नरेन्द्र मिश्रा, सहाय, सुरेश भट्ट, हेमंत बागडवाल, जसवंत सिंह जस्सा, हरेद सिंह, कुमेशचिब डा. अमनजीत सेठी, प्रतिकुलपति प्रो. डा. एसके सिंह सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

‘हक देने को तैयार नहीं सरकार’



शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। बागजाला को मालिकाना अधिकार देने, निर्माण कार्यों पर लगी रोक हटाने, पंचायत चुनाव के अधिकार को बहाल करने, विकास कार्य शुरू करने, पेयजल योजना चालू करने समेत आठ सूत्रीय मांगों पर अनिश्चितकालीन धरना रविवार 56वें दिन भी जारी रहा। धरने को संबोधित करते हुए भाकपा माले के जिला सचिव डा. कैलाश पाण्डेय ने कहा कि भाजपा सरकार गरीबों को आवास का हक और अधिकार देने को तैयार नहीं है। आवास का अधिकार देना तो दूर रहा बागजाला से लेकर जवाहरनगर हल्द्वानी तक नोटिफाई के द्वारा गरीबों को डराने का काम किया जा रहा है। धरना प्रदर्शनल में विमला देवी, वेद प्रकाश, हेमा देवी, खीम राम आर्य, हरक सिंह बिष्ट, हरीश, वन्दना, गणेशराम, भोला सिंह, मोना भट्ट, संजय, परवेज, हेमा आर्य, गोपाल सिंह बिष्ट, हरि गिरी, दीपत सिंह, दीवान राम, सतपाल, नंदी देवी, रेखा देवी, पार्वती देवी, दीवान राम, सुनीता, ललित प्रसाद, शांति देवी, शोभा, दिव्या आर्य, मनु देवी, देवकी देवी, गीता, सलमा, बेजंती देवी, सोहन लाल, दुर्गा देवी, रमेश चन्द्र मौजूद रहे।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्र. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक एस.एन. राना द्वारा शाह पब्लिकेशन प्र. लि. सुजुड़ चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला हंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक: एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक आनन्द बत्रा 'सुमन'
05946-250286
मुख्यालय: मोबाइल-9720007290 R.N.I.No.UttHm/2003/10264
www.shahatimesnews.com Email:shahatimes2015@gmail.com
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एजेंट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

दुकान के बाहर लगे विद्युत तारें काट ले गए चोर

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। चोरों के होसले इस कदर बढ़ चुके हैं कि वह दुकान के बाहर विद्युत आपूर्ति के दौरान भी तारें काट कर ले जाने में कोई हिचक महसूस नहीं कर रहे हैं। ऐसा ही एक मामला सामने आया है। चोरों ने शनिवार को रात्रि सिविल लाइन में बंद दुकान के बाहर लगाई गई बिजली फिटिंग को तारों को विद्युत आपूर्ति के दौरान भी काट कर ले गए। दुकान स्वामी प्रातः जब दुकान खोलने आया तो उसे घटना की जानकारी मिली।

ग्राम महाराजपुर निवासी पंकज टुकराल पुत्र सूरज टुकराल का सिविल लाइन में टुकराल होम डेकर नाम से प्रतिष्ठान है। उनका कहना है कि शनिवार को रात्रि करीब नौ बजे वह दुकान बंद कर घर गये थे। आज रविवार प्रातः जब वह दुकान खोलने आए तो शटर के पास बिजली की फिटिंग केबल में तारें काटी हुई मिलीं। उन्होंने इसकी जानकारी व्यापार मंडल अध्यक्ष संजय जुनेजा को दी। जिन्होंने यहाँ आकर स्थिति देखी और घटना से पुलिस को अवगत करवाया। सूचना मिलने पर पुलिसकर्मी भी आ गये और उन्होंने मौके का बारीकी से निरीक्षण किया और आसपास लोग सीसीटीवी कैमरों की



फुटेज भी देखी। उनका कहना है कि चोर किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की योजना बनाकर आये थे। वहीं संजय जुनेजा ने त्यौहारी सीजन में चोरों की बढ़ती सक्रियता पर गहरा रोष व्यक्त करते हुए पुलिस प्रशासन से बाजार क्षेत्र में रात्रि गश्त बढ़ाने और पुलिस अधिकारियों से स्वयं भी निरीक्षण करने की मांग की है।

केआईटीएम के छात्र ने कबड्डी चैम्पियनशिप में किया प्रतिभाग

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। केआईटीएम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के प्रतिभाशाली छात्र देव कश्यप ने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय की टीम से अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय कबड्डी चैम्पियनशिप 2025 में भाग लेकर कॉलेज का नाम रोशन किया है।

केआईटीएम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के मैनेजिंग डायरेक्टर कमल सिंह बिष्ट ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि साल 2025 से हमारे कॉलेज के छात्र लगातार एसएसजे विश्वविद्यालय के खेलों में भाग ले रहे हैं। हम अपने छात्रों को खेल और समग्र



विकास के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं और सहयोग प्रदान कर रहे हैं। वहीं देव कश्यप ने कहा कि वह केआईटीएम और एसएसजे यूनिवर्सिटी दोनों का प्रतिनिधित्व करने के बहुत खुश हैं। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय अंतर विश्व, विद्यालय कबड्डी चैम्पियनशिप में खेलना उनके लिए एक गौरवपूर्ण और यादगार अनुभव रहा।

जैन ग्लोबल स्कूलमें ज्ञान और सृजन का संगम

परीक्षा परिणाम, प्रदर्शनी व बुक मेले का भव्य आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। जैन ग्लोबल स्कूल में अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम वितरण के अवसर पर एक अध्यापक शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। इस दिन विद्यालय परिसर में विज्ञान प्रदर्शनी, कला प्रदर्शनी और पुस्तक मेला का भी शानदार आयोजन हुआ, जिसने विद्यालय के वातावरण को उत्साह, ज्ञान और रचनात्मकता से भर दिया।

इस अवसर पर एक विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गयी, जिसमें विद्यार्थियों ने विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। साइंस



एग्जिबिशन में विद्यार्थियों ने अपने अभिनव मॉडल्स जैसे जल शोधन संयंत्र, ज्वालायुष्मी विस्फोट, सौर ऊर्जा प्रणाली, मानव पाचन तंत्र, पवन ऊर्जा जनरेटर, शुगर पावर रैंकट और स्वचालित सिंचाई प्रणाली प्रस्तुत किए। इन मॉडलों ने विद्यार्थियों की वैज्ञानिक समझ, रचनात्मकता और प्रयोगशीलता को प्रदर्शित किया। वहीं कला प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशक्ति और कला का शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने मिट्टी की मूर्तियां, पेपर क्राफ्ट, मधुबनी आर्ट, बारली पेंटिंग, लैंडस्केप ड्राइंग, और बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट मॉडल्स तैयार किए,

जिन्हें अभिभावकों ने खूब सराहा। पुस्तक मेले में विद्यार्थियों और अभिभावकों ने ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक पुस्तकों की खरीददारी की, इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पुष्कर राज जैन ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कलात्मक अभिव्यक्ति और अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ाने में सहायक होते हैं। साथ ही उन्होंने अभिभावकों से आग्रह किया कि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करें, उन्हें प्रश्न पूछने दें, प्रयोग करने दें, इस अपनी रुचियों को आगे बढ़ाने का अवसर दें। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक योगेश जैन, निहा जैन, प्रधानाचार्य और सभी अभिभावकों ने विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की।

रामनगर में अब लोगों को घर बैठे मिलेगी ऑटो एवं एंबुलेंस की सुविधा



शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। रामनगर में स्थित विश्व प्रसिद्ध कॉर्बेट नेशनल पार्क के कारण रामनगर की पहचान विश्व के मानचित्र पर अलग छाप छोड़ता है जिसको लेकर रविवार को रामनगर में आने वाले पर्यटकों को एवं स्थानीय लोगों के लिए हिटो हिटो ऐप लॉन्च किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन दीप चंद्र पांडे ने बताया कि यह ऐप उत्तराखंड सरकार से रजिस्टर्ड है और इसके माध्यम से अब स्थानीय लोग घर बैठे

हिटो हिट ऐप का हुआ लॉन्च

ही ऑटो सुविधा का लाभ जहां को ले सकेंगे तो वही यहां आने वाले पर्यटकों को भी इस सुविधा का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि इसके साथ ही इस ऐप के माध्यम से एंबुलेंस की सुविधा भी लोगों को मिलेगी। खास तौर पर देखा गया है कि गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों को समय पर एंबुलेंस ना मिलने के कारण कई लोग दम तोड़ देते हैं। ऐसे

में आप इस सुविधा के माध्यम से पीड़ित लोगों को एंबुलेंस सुविधा का भी लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि ऐप में सभी शामिल ऑटो चालकों वितरण भी मानकों के तहत अपडेट किया गया है और विभाग से निर्धारित शुल्क ही जनता से लिया जाएगा। इस दौरान स्थापक/सीईओ दीप चन्द्र पाण्डे, भाजपा जिला उपाध्यक्ष गणेश रावत, राज्य आंदोलकारी प्रभात ध्यानी, अतीक अहमद, आमाम, फरमान सिद्दीकी आदि मौजूद रहे।

बाजपुर पुलिस ने कसा अवैध पटाखा कारोबारों पर शिकंजा

लाइसेंसी व्यापारी पहुंचे कोतवाली और कहा हम पर हो रही कार्रवाई अनुचित

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। दीपावली पूर्व नजदीक आते ही बाजपुर कोतवाली पुलिस ने अवैध रूप से आतिशबाजी व पटाखों की बिक्री करने वालों के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है। लगातार हो रही छापामारी कार्रवाई से पटाखा व्यापारियों में हड़कंप मचा दिया है।

जानकारी के अनुसार पुलिस द्वारा बीते कुछ दिनों से नगर के विभिन्न क्षेत्रों में छापामारी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस द्वारा कई स्थानों पर बिना अनुमति और बिना लाइसेंस के पटाखों की बिक्री करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। इसी बीच बाजपुर के लाइसेंसी पटाखा व्यापारी अपनी शिकायत लेकर कोतवाली पहुंचे। जहां उन्होंने कोतवाल को बताया कि

वे वैध लाइसेंस धारी हैं, इसके बावजूद भी पुलिस उन्हें परेशान कर रही है और उनके विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है। व्यापारियों का कहना है कि वे नियमों के तहत पटाखों की बिक्री कर रहे हैं। इस संबंध में पुलिस का कहना है कि पुलिस का उद्देश्य किसी वैध व्यापारी को परेशान करना नहीं है, बल्कि अवैध रूप से पटाखा बिक्री करने वालों पर रोक लगाना है। पुलिस ने स्पष्ट किया कि नगर के पानापुर क्षेत्र सहित कई इलाकों में बिना लाइसेंस के पटाखा बेचने वाले दुकानदारों पर निगरानी रखी जा रही है और उनके खिलाफ लगातार छापामारी अभियान जारी रहेगा। बता दें कि कुछ दिन पूर्व ही पुलिस ने बाजपुर क्षेत्र में एक व्यक्ति के घर से भारी मात्रा में अवैध पटाखे बरामद किए थे, जिसके बाद से ही प्रशासन ने कार्रवाई और तेज कर दी है। इस कार्रवाई के बाद से पूरे क्षेत्र के पटाखा व्यापारियों में हड़कंप मचा दिया है।

हर घर स्वदेशी का नारा किया गया बुलंद



शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी मंडल कार्यशाला में आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत "हर घर में स्वदेशी उत्पादों का प्रयोग करने और स्थानीय उद्योगों एवं कारीगरों को प्रोत्साहित करने व आत्मनिर्भर भारत के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने" का आह्वान किया।

बाजपुर चीनी मिल गेस्ट हाउस में आयोजित आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत मंडल

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य खड़क सिंह चौहान ने उक्त विचार व्यक्त किए।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में चल रहे आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत स्वदेशी अपने के महत्व तथा स्थानीय उद्योगों के प्रोत्साहन पर विस्तार से जानकारी दी। कहा कि स्वदेशी केवल एक विचार नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण की सशक्त भावना है जो हमें आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान और आर्थिक सहस्रविकरण की दिशा में अग्रसर करती है और स्वदेशी से ही देश मजबूत बनेगा, यही सच्चा राष्ट्र धर्म है। इससे पूर्व भाजपाईयों ने मुख्य अतिथि खड़क सिंह चौहान का फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया।

इस अवसर पर राज्य दर्जा मंत्री मनजीत सिंह राजु, मंडल अध्यक्ष टिकू यादव, राजेश कुमार, मोहन पाल, विश्व हिंदू परिषद प्रांतीय मंत्री यशपाल राजहंस, बिट्टू चौहान, अनिता शर्मा, पूजा जिंदल, गौरव शर्मा, अनंत जैन, मयंक पाठक, मुकेश शर्मा, निलाधर शर्मा आदि मौजूद रहे।

दिव्यांगों की सहायतार्थ भाविप ने लगाया चार दिवसीय दीपावली मेला



शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। दिव्यांगों की सहायतार्थ भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित दीपावली मेले का शनिवार को शुभारंभ हुआ। चार दिवसीय मेले के प्रथम दिन कार्यक्रम स्थल तराई बीज विकास निगम के ग्राउंड में खासी भीड़ रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ नगर पालिका अध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी, शाखा अध्यक्ष नीरज वर्मा, मेला चोयरमैन विशाल गोयल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में स्वागत गीत के साथ ही क्षेत्र के विद्यालयों के बच्चों की टीमों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों के बीच समां

बांधा।

कार्यक्रम का शाखा सचिव विवेक अग्रवाल, प्रांतीय महासचिव हरीश शर्मा ने संयुक्त रूप से संचालन किया। चार दिवसीय दीपावली मेले में आकर्षक झांकियां, स्वादिष्ट व्यंजन, भव्य आतिशबाजी एवं बच्चों के मनोरंजन हेतु हवाई झूले आदि सामग्री सजी थी। इस दौरान घरेलू सामान, खान-पान, चाट पकौड़े के स्टाल भी सजे रहे।

मेला स्थल पर सजी दुकानों में घरेलू उपयोग सामान एवं कपड़ों की भी मालाओं में खरीदारी की। मेले में वरिष्ठ उद्योगपति अचल शर्मा, रां. हताश अग्रवाल, नीरज खन्ना, वरुण अग्रवाल, सुखजीत सिंह खिंडा, नीरज रस्तोगी, पवन उग्रोती, संजय कपूर, दीपक बत्रा, संतोष अग्रवाल, मुकेश गुप्ता, विक्रम गुलाटी, अतुल अरोरा, दलजीत सिंह खिंडा, चंचल अग्रवाल, स्वाति अग्रवाल, मंजू गोयल, मंजू खन्ना आदि मौजूद थे।

डेंगू की रोकथाम को स्वास्थ्य विभाग ने चलाया अभियान

जिले में 15 स्थानों पर मिला लार्वा, टीम ने किया नष्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। जिले में डेंगू की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीमों ने रविवार को चलाए गए अभियान के दौरान 1100 घरों की जांच की गई, जिनमें से 15 स्थानों पर डेंगू मच्छर का लार्वा मिला। संबंधित घरों और इलाकों में टीमों ने तत्काल स्रोत नष्ट करने की कार्रवाई की और एंटी लार्वा स्प्रे कराया। अभियान के तहत रुद्रपुर, काशीपुर, बाजपुर, गदरपुर, जसपुर और सितारगंज क्षेत्रों में स्वास्थ्य विभाग की 42 टीमों ने फोल्ड में जाकर निरीक्षण किया। जांच के साथ-साथ लोगों को डेंगू से बचाव के उपाय बताए गए और लार्वा नियंत्रण की जानकारी दी गई। टीमों ने कई घरों में गमलों, टॉकियों और पुराने बर्तनों में पानी जमा पाया गया, जहां लार्वा पनप रहा था। विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि सप्ताह में एक बार सभी कंटेनर खाली कर सुखाएं और घरों के आस-पास सफाई रखें। जिला वेक्टर नियंत्रण अधिकारी रामाम सिंह ने कहा कि विभाग का अभियान लगातार जारी रहेगा। उद्देश्य यह है कि शुरुआती स्तर पर लार्वा को नष्ट कर डेंगू के प्रसार को पूरी तरह रोकना जा सके।

एक नजर

झाड़ियों में बदहावास मिली महिला

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। शनिवार की रात्रि किच्छा बाईपास रोड पर टंडी सड़क के किनारे संदिग्ध परिस्थितियों में एक महिला घायल अवस्था में पड़ी मिली। सूचना मिलने पर गौरक्षक दल के विराट आर्या ने कार्यकर्ताओं के साथ मौके पर पहुंचकर महिला को उपचार के लिए जिला चिकित्सालय पहुंचाया।

विराट आर्या ने बताया कि उन्हें शनिवार रात को किसी व्यक्ति ने फोन कर बताया कि किच्छा बाईपास रोड में टंडी सड़क पर एक अज्ञात महिला घायल अवस्था में पड़ी हुई है। उसके कपड़े फटे हुए हैं। उन्होंने बताया कि सूचना मिलते ही वह जिला मंत्री विश्व हिन्दू परिषद राजेन्द्र मेहरा, बिट्टू दत्त शर्मा, सुल्तान सिंह, जोगेंद्र सिंह आदि के संग मौके पर पहुंचे और महिला से बात की। उसने अपना नाम सरोज व निवासी गया बिहार हाल निवासी ग्राम भूरायनी किरायेदार बताया। उसे तत्काल उपचार के लिए जिला चिकित्सालय ले जाकर भर्ती कराया गया साथ ही मामले की जानकारी पुलिस को भी दे दी। पुलिस महिला से आवश्यक जानकारी जुटा रही है।

पुण्यतिथि पर राम मनोहर लोहिया को किया याद

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। अशोक नगर स्थित समाजवादी पार्टी कार्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी विचारक डा. राम मनोहर लोहिया की पुण्यतिथि

मनाई गई। सपा यूथ ब्रिगेड के राष्ट्रीय महासचिव अरविंद यादव ने डा. राम मनोहर लोहिया के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। अरविंद यादव ने कहा डा. राम मनोहर लोहिया न केवल एक महान समा. जवादी विचारक थे, बल्कि उन्होंने अपने जीवन को समानता न्याय आत्म सम्मान के लिए समर्पित कर दिया। उनकी विचारधारा आज भी समाजवादी पार्टी की प्रेरणा है। यादव ने कहा स्वतंत्रता सेनानी डा. राम मनोहर लोहिया कहते थे सड़कें सूखी नहीं तो संसद धवन आवाग हो जाता है। उन्होंने आगे कहा डा. राम मनोहर लोहिया एक ऐसी विभूति थे जिनके स्मरण मात्र से समाजवाद समाहित हो जाता है, उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। अरविंद यादव ने लोहिया के राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया उन्होंने लगातार 16 वर्षों तक शासन कर रही नेहरू सरकार के खिलाफ सर्वप्रथम अविश्वास प्रस्ताव लाया था। राष्ट्र सेवा के लिए वे स्वतंत्रता से पहले और बाद में भी कई बार जेल गए। उन्होंने सरकार के अपव्यय पर उनकी 'तीन आना पन्द्रह आना' बहस आज भी प्रसिद्ध है। इस अवसर पर माणिक चंद तिवारी, आशीष कुमार, चंद्रेश सिंह, अनिता देवी, रुकसाना, दबीर रजा आदि उपस्थित रहे।



क्षेत्र की प्रमुख मांगों को लेकर मुख्यमंत्री से मिले पूर्व विधायक सिंघल

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। भाजपा नेता एवं पूर्व विधायक ने क्षेत्र में विकास कार्य कराने के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात की।

देहरादून पहुंचकर वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व विधायक डॉक्टर शैलेन्द्र मोहन सिंघल ने सीएम से खेल स्टेडियम से सम्बन्धित जिला अधिकारी द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर अग्रिम कार्रवाई करने हेतु अनुरोध किया। इसके साथ ही उन्होंने विधानसभा क्षेत्र के क्षतिग्रस्त खस्ता हाल विभिन्न मांगों का पुर्ननिर्माण कराने के लिए सीएम को सूची सौंपकर शीघ्र ही स्वीकृति का आग्रह किया। डॉक्टर सिंघल ने बताया कि सीएम ने दोनों प्रस्तावों पर त्वरित कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने दीपावली के बाद सीएम को जसपुर आने का भी निमंत्रण दिया, जिसमें सीएम ने उनका निमंत्रण स्वीकार कर आने की सहमति दी।



भरत मिलाप, सूर्यनखा नासिक छेदने, खर दूषण वध की लीला मचित



शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। कुटरी, नन्द, ना पचोरिया में मंचित्र रामलीला के छठवें दिन भरत मिलाप, शत्रुघ्न का मंथरा पर कुपित होने, सूर्यनखा नासिक छेदन, खर दूषण वध व नकटी सूर्यनखा का रावण दरबार में पहुंचने की लीला का मंचन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक भुवन कापड़वी ने मयदाव स्थित स्थापित करने वाले श्री राम के आदर्शों के अनुकरण से मौजूद हालातों से निपटने का एक उचित माध्यम बताया। उन्होंने आयोजक मंडल एवं दर्शकों का आभार जताया। इस अवसर पर रमेश रौतला, नरेन्द्र आर्य, देव बहादुर चंद, ग्राम प्रधान माया जोशी, बोडीसी नेहा जोशी, लक्ष्मी चंद, गीत ज्योला, माया चंद, प्रवीण सिंह बिष्ट, बसंत बल्लभ जोशी, संचालक गोपाल सिंह मेहता, नरेंद्र बिष्ट, पूरन जोशी, गोपाल बिष्ट, पंकज मेहता आदि मौजूद थे।

जिला विकास प्राधिकरण लागू होने पर जताया विरोध



शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। रामनगर के ग्राम छोई क्षेत्र में जिला विकास प्राधिकरण लागू होने पर रविवार को कांग्रेस नेता भुवन पांडे के नेतृत्व में ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए बैठक की।

एकत्रित ग्रामीणों ने कहा कि जिला विकास प्राधिकरण ग्रामीण क्षेत्र में लागू होने पर ग्रामीणों को बहुत अधिक नुकसान होगा। उन्होंने बैठक करके विरोध प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने कहा कि अगर जिला विकास प्राधिकरण यहाँ लागू होता है तो वह उसके खिलाफ सड़कों पर उतरकर आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस मामले में सोमवार को रामनगर विधायक दोवान सिंह बिष्ट से ग्रामीण क्षेत्रों के लोग मुलाकात करेंगे और उनके माध्यम से एक ज्ञापन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को भेजा जाएगा। ग्रामीणों ने शासन प्रशासन से विकास प्राधिकरण को हटाने की मांग की है। इस दौरान कांग्रेस नेता भुवन पांडे, क्षेत्र पंचायत सदस्य भूपेंद्र कुमार, क्षेत्र पंचायत सदस्य पर्वत लटवाल, क्षेत्र पंचायत सदस्य पियूष बिष्ट, रघुवर सिंह रावत, दारा सिंह लटवाल, भारत सिंह नेगी, गोविंद पांडे, बबू बिष्ट, राजू लटवाल, इंद्र सिंह लटवाल, शेर सिंह लटवाल, मोहित जोशी, देवेंद्र सिंह फत्तल, युवा कांग्रेस नेता चांद खान आदि मौजूद रहे।

फील्ड गतिविधियों की मनोरम श्रंखला की प्रस्तुति नैनीताल के बिड़ला विद्या मंदिर में वार्षिकोत्सव पर कार्यक्रमों की रही धूम

शाह टाइम्स संवाददाता
नैनीताल। नगर के प्रतिष्ठित बिड़ला विद्या मंदिर नैनीताल का 78वाँ वार्षिक समारोह रविवार को अत्यंत उल्लास और उत्साह के साथ मनाया गया। वार्षिकोत्सव समारोह के पहले चरण में छात्रों द्वारा आकर्षक फील्ड गतिविधियों की एक मनोरम श्रृंखला प्रस्तुत की गई इनमें सामूहिक फीटीए, एसोबिस, एनसीसी मार्चपास्ट, ताइक्वांडो, व्यायाम तथा 100 मीटर दौड़ तथा विद्यालय बैंड ने सभी आगंतुकों का मन मोह लिया। इस सुअवसर के मुख्य अतिथि विद्यालय के पूर्व छात्र राजीव गंगल (आईआरटीएस सेवानिवृत्त) रहे। वार्षिकोत्सव के अगले चरण में प्रधानाचार्य अनिल कुमार शर्मा ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें शैक्षिक सत्र 2025-26 की शैक्षिक तथा खेल एवं सांस्कृतिक

उपलब्धियों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में बताया कि विद्यालय छात्रों के समग्र विकास के प्रति सर्वेव ही प्रतिबद्ध है।



इस उद्देश्य हेतु वर्षभर विद्यालय में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। उन्होंने बताया कि विद्यालय में बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम हमेशा उत्कृष्ट रहे हैं और

वर्ष 2025 की कक्षा 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में भी विद्यालय के परिणाम उत्कृष्ट रहे। फील्ड कार्यक्रमों के दौरान वर्ष 2025 की

टैगोर हाउस ने कॉक हाउस का खिताब अपने नाम किया वहीं जूनियर वर्ग में पटेल हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त कर कॉक हाउस का खिताब जीता। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजीव गंगल ने विद्यालय के स्वीर्णिम दिनों की स्मृतियां साझा कीं।

बोर्ड परीक्षाओं के उत्कृष्ट विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। वर्ष भर आयोजित सभी शैक्षिक, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के आधार पर सोनियर वर्ग में

उन्होंने विद्यालय में बिना छत्र जीवन के प्रयोगों की याद करते हुए उन मूल्यों एवं अनुशासन की चर्चा की जिन्हें उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्षों में सीखा था। उन्होंने विद्यालय

की प्रगति देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और विद्यार्थियों को इसकी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने हेतु बधाई दी। फील्ड कार्यक्रमों के पश्चात मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जिसमें छात्रों द्वारा विभिन्न विभागों के प्रोजेक्ट्स व मॉडल्स और रचनात्मक कार्यों का प्रदर्शन किया गया। मुख्य अतिथि, अभिभावकों तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने विद्यार्थियों के परिश्रम की सराहना की। सांयकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम दीप प्रज्वलन एवं मनमोहक वंदना से प्रारंभ हुआ। इसके उपरांत विद्यालय ऑर्केस्ट्रा द्वारा संगीतमय प्रस्तुति दी गई। विद्यार्थियों ने सामाजिक संदेश वाले अंग्रेजी गानों से दर्शकों को मनोरंजन किया। सुंदर एवं मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न कक्षाओं

के श्रेष्ठ विद्यार्थियों को निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए सममा नित किया गया। कार्यक्रम के समापन पर प्रधानाचार्य अनिल कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने मुख्य अतिथि को अपने अमूल्य समय से समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। साथ हीए अभिभावकों और अन्य गणमान्य अतिथियों का निरंतर सहयोग और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद किया। वार्षिकोत्सव समारोह में विप्रबंधक संजय कुमार गुप्ता समेत उप प्रधानाचार्य राकेश मोलासी, अजय शर्मा, आशा फाउंडेशन की अध्यक्ष आशा शर्मा समेत अनुभूति गंगल व अन्य विद्यालयों के प्रधानाचार्य सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित थे, जिनके सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

एक नजर

पल्स पोलियो अभियान का हुआ शुभारंभ नैनीताल। नगर के राजकीय बीडी पाण्डे जिला अस्पताल में पल्स पोलियो अभियान का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विधायक सरिता आर्य रहीं, जिन्होंने फीता काटकर अभियान को औपचारिक शुरुआत की और स्वयं बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाकर इस जन स्वास्थ्य कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अस्पताल प्रशासन की ओर से पीएमएस डा. तरुण कुमार टम्टा, डा. संजीव खर्कवाल, डा. द्रौपदी गर्बियाल समेत जानकी कनवाल, विद्या शुक्ला, विमल चौहान, पुष्पा वर्मा, गीता, शालिनी, कमला कुजवाल, दुर्गा टम्टा और मनमोहन कनवाल ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विधायक सरिता आर्य ने कहा कि पोलियो जैसी बीमारी से देश को पूरी तरह मुक्त रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। हर माता-पिता को अपने बच्चों को पोलियो की दो बुँदें अवश्य पिलानी चाहिए।कार्यक्रम के अंत में बच्चों और अभिभावकों को पोलियो के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया गया और स्वास्थ्य कर्मियों को उनके निस्वार्थ योगदान के लिए सराहा गया। इस मौके पर कई भाजपाई भी मौजूद रहे।

मैटर्न शशिकला पांडे को पुत्री शोक नैनीताल। स्वास्थ्य विभाग में नर्सिंग सेवा में उत्कृष्ट कार्य के लिए राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगल अवार्ड से सम्मानित मैटर्न शशिकला पांडे को पुत्री का निधन हो गया। बता दें कि नैनीताल रमजने निवासी सेंटियोरियम में कार्यरत शशिकला पांडे की 25 वर्षीय दिव्यांग पुत्री पारुल पांडे का आकस्मिक निधन हो गया है। पारुल के निधन से शशिकला पांडे व उनका परिवार शोक में है। उनकी पुत्री के निधन पर सीएमओ, राजकीय बीडी पांडे अस्पताल के पीएमएस व स्टफ व सेंटियोरियम के स्टफ ने शोक व्यक्त किया है।

टेलेवाले से मारपीट करने वाले तीन गिरफ्तार
हल्द्वानी। दो दिन पहले सुशीला तिवारी अस्पताल के बाहर सिगरेट के पैसे मांगने पर टेलेवाले पर गर्म चाय फेंकने व मारपीट के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। बता दें कि बनभूलपुरा निवासी शिकायतकर्ता उस्मान पुत्र अख्तर ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि बीते 10 अक्टूबर की रात करीब 11 बजे तीन युवक निश्चय जोशी, नीरज रावत और करन मेहरा उसके चाय के ठेले पर पहुंचे और पांच सिगरेट लीं। जब उसने सिगरेट के पैसे मांगे तो तीनों ने गाली-गलौज शुरू कर दी और उस पर गर्म चाय फेंक दी। पीड़ित ने बताया जब उसका बेटा अरमान बीच-बचाव करने पहुंचा तो उसके साथ भी युवकों ने मारपीट की। इतना ही नहीं तीनों ने ठेले का सारा सामान तोड़कर वहां से फरार हो गए। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर तीन युवकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए तीनों को गिरफ्तार कर लिया।

पैसे मांगने पर मारपीट व कुत्ते से कटवाया
हल्द्वानी। टीपीनगर क्षेत्र में एक पेट्रोल पंप मालिक के बेटे से दुकानदार द्वारा पैसा मांगना सहना पड़ा। पंप मालिक के बेटे ने दुकानदार के साथ मारपीट ही नहीं बल्कि उसकी दुकान भी तोड़ दी। इतना ही नहीं उसने अपने पिटबुल डॉग से दुकानदार को ही कटवा दिया। जिसके बाद मामला टीपीनगर चौकी पहुंचा और बाद में दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया। इस पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। टीपीनगर चौकी क्षेत्र के अंतर्गत एक दुकान है। जिसमें वायरल वीडियो में एक पंप मालिक का बेटा किराए की दुकान में पहुंचा और दुकानदार से पैसे मांगने लगा। जब दुकानदार ने पैसे ना देने का विरोध किया तो उसने दुकानदार के साथ गाली गलौज व दुकान में तोड़-फोड़ करवा दिया रहा है। इतना ही नहीं पंप मालिक के बेटे ने अपना पिटबुल डॉग को दुकानदार पर छोड़ दिया। दुकानदार ने कहा कि उसने 112 पर कॉल की लेकिन पुलिस नहीं पहुंची। जिसके बाद वह तहरीर लेकर चौकी पहुंचा।

दिसंबर तक तैयार होगा वैकल्पिक मार्ग: टम्टा अल्मोड़ा। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री अजय टम्टा ने अल्मोड़ा-हल्द्वानी राष्ट्रीय राजमार्ग के क्वारब क्षेत्र का निरीक्षण किया। उन्होंने दूरकटी पहाड़ियों के ट्रैटमेंट और वैकल्पिक मार्ग की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रात में कटान और मिट्टी हटाने का काम किया जा रहा है, जबकि दिन में मार्ग खोला गया है। क्वारब मार्ग के विकल्प के रूप में बनाए जा रहे बाइपास मार्ग का काम तेज गति से चल रहा है। इसके तहत वैली ब्रिज और दो पुलों का निर्माण शुरू हो चुका है। रोड कटिंग का 60 प्रतिशत काम पूरा हो गया है। टम्टा ने कहा कि दिसंबर तक वैकल्पिक मार्ग तैयार कर लिया जाएगा।

कफ सिरप को लेकर छापेमारी
हल्द्वानी। बच्चों की कफ सिरप को लेकर चल रही औषधि नियंत्रण विभाग की टीम की छापेमारी रविवार को भी जारी रही। टीम ने गोरपाडाव क्षेत्र में चार मेडिकल स्टोरों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अविश्वमितताएं मिलने पर एक मेडिकल स्टोर को मौके पर ही सील कर दिया। जबकि एक अन्य मेडिकल स्टोर के लाइसेंस को निलंबित करने की संस्तुति के लिए डॉक्टर को नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण देने के निर्देश दिए हैं। वरिष्ठ औषधि निरीक्षक मीनाक्षी बिष्ट ने बताया कि यह कार्रवाई बच्चों की कफ सिरप की गुणवत्ता और दवा विक्रेताओं की लाइसेंस शर्तों के अनुपालन की जांच के तहत की गई है। कार्यवाही के दौरान उप औषधि नियंत्रक हेमंत सिंह नेगी, यूएस नगर नीरज कुमार, औषधि निरीक्षक हो चुका, निधि शर्मा, शुभम कोटाला, राजस्व वप निरीक्षक अरुण वर्मा मौजूद रहे।

महिलाओं ने शिविर का लाभ उठाया

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। लामाचौड़ स्थित ईसाईनगर में रविवार को सेरेफ रिलायंस इनिशिएटिव संस्था के तत्वावधान में आंखों की जांच और चश्मा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया, जहां नजदीकी नजर की जांच के बाद उन्हें मौके पर ही मुफ्त चश्मे वितरित किए गए। ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता और महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियों के चलते वे अक्सर अपनी आंखों की समस्याओं को नजरअंदाज कर देती हैं। दाल-चावल साफ करने, सिलाई-बुनाई या पढ़ने जैसे रोजमर्रा



के कार्यों में उन्हें कठिनाई होती है, लेकिन व्यस्तता या संसाधनों की कमी के कारण वे इलाज नहीं करा पातीं। इस जरूरत को समझते हुए डा. नीरज वाण्यो ने अपने पिता की पुण्यतिथि पर सेरल रिलायंस इनिशिएटिव संस्था के साथ मिलकर यह पहल की। कैंप के पहले चरण में

ईसाईनगर और जयपुर पाडली-नाथपुर क्षेत्र की 30 महिलाओं की आंखों की जांच की गई और उन्हें नि:शुल्क चश्मे प्रदान किए गए। कार्यक्रम में संस्थाध्यक्ष तनुजा जोशी, जिला पंचायत सदस्य डा. छवि कांडपाल और समाजसेवी मिथुन जायसवाल भी उपस्थित रहे।

निशुल्क शिविर में जांची आंखें



शाह टाइम्स संवाददाता
कालाढूंगी। दृष्टि हॉस्पिटल हल्द्वानी के द्वारा कालाढूंगी के अमन क्लीनिक में आयोजित किया निशुल्क नेत्र शिविर में दर्जनों मरीजों का नेत्र परीक्षण किया गया। यह शिविर गुरुवार को कालाढूंगी अमन क्लीनिक डाक्टर अमन तुली के सहयोग से आयोजित किया गया। इस शिविर में क्षेत्रभर के तकरीबन 100 लोगों ने अपनी आंखों की जांच कराई। डा. विशाल श्रीवास्तव ने बताया 12 लोगों की आंखों में मोतियाबिंद की शिकायत मिली इस दौरान नि:शुल्क नेत्र जांच के साथ दवाई दी तथा उचित पराशरी भी दिया गया। जिन लोगों की आंखों में मोतियाबिंद की शिकायत पाए जाने पर उन्हें ऑपरेशन की सलाह दी गई, तथा बताया गया कि आयुष्मान एवं गोल्डन कार्ड होने पर उनके हॉस्पिटल में ऑपरेशन भी निशुल्क रूप से किया जायेगा तथा घर से ले जाने और पहुंचाने की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी। इस दौरान शिविर आयोजित करने पर हॉस्पिटल प्रबंधन का आधार ताल्या। गंगा प्रसाद, प्रेम, नरेश शर्मा, जुनेद आलम ने शिविर में सहयोग किया। क्लीनिक प्रबन्धक जेएस गिल ने सभी का आभार जताया।

नैनीताल के नए डीएम होंगे ललित मोहन रयाल

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। उत्तराखंड शासन ने बड़े पैमाने पर प्रशासनिक फेरबदल करते हुए 22 आईएएस 22 पीसीएस और 1 आईएफएस अधिकारी का स्थानांतरण कर दिया है। इस संबंध में संयुक्त सचिव राजेंद्र सिंह पतियाल ने स्थानांतरण आदेश जारी किए हैं। जिसमें नैनीताल जिले की जिलाधिकारी वंदना सिंह का स्थानांतरण कर दिया गया है। उनकी जगह अब आईएएस ललित मोहन रयाल को नैनीताल जिले का नया जिलाधिकारी नियुक्त किया है। श्री रयाल वर्तमान में अपर सचिव कार्यालय एवं सतर्कता विभाग में कार्यरत थे। आईएएस वंदना सिंह जो लंबे समय से नैनीताल की जिलाधिकारी थीं, अब उन्हें कृषि

एवं उद्यान विभाग की महानिदेशक बनाया गया। इसके साथ ही उन्हें नियोजन विभाग में अपर सचिव की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी सौंपी गई है। इसके साथ ही हल्द्वानी नगर निगम में भी बड़ा बदलाव करते हुए नैनीताल उप कलेक्टर के पद पर कार्यरत पारितोष वर्मा को हल्द्वानी नगर आयुक्त की जिम्मेदारी दी गई। जबकि नगर आयुक्त ऋचा सिंह को तबादला कर उन्हें ऊधमसिंह नगर की डिप्टी कलेक्टर बनाया गया है। इसके अलावा आईएफएस अधिकारी पराग मधुकर धकाते जो अब तक मुख्यमंत्री के विशेष सचिव के रूप में कार्यरत थे, उनको पंचायती राज विभाग में विशेष सचिव नियुक्त किया गया है।

दीपावली 21 को ही मनाई जाएगी

शाह टाइम्स ब्यूरो
हल्द्वानी। पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की एक महत्वपूर्ण बैठक में दीपावली और महालक्ष्मी पूजन की तिथि को लेकर फैलाई जा रही सदियों से पंचांग के अनुसार ही पर्व-त्योहार मनाता आया है। इस वर्ष अमावस्या 21 अक्टूबर की है और इसी दिन दीपावली और महालक्ष्मी पूजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि धार्मिकों पर गहन चर्चा की गई। मंच ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पर्वतीय पंचांग के अनुसार दीपावली और महालक्ष्मी पूजन 21 अक्टूबर को ही मनाया जाएगा। कुछ संगठनों द्वारा 20 अक्टूबर को दीपावली मनाए जाने के दावे को मंच ने पूरी तरह खारिज कर दिया है। मंच ने इसे पर्वतीय संस्कृति के विघटन का सुनिश्चित प्रयास करार देते हुए कड़ी निंदा की है। बैठक को संबोधित करते हुए मंच के संरक्षक हनुम सिंह कुंवर ने कहा कि पर्वतीय समाज

सदियों से पंचांग के अनुसार ही पर्व-त्योहार मनाता आया है। इस वर्ष अमावस्या 21 अक्टूबर की है और इसी दिन दीपावली और महालक्ष्मी पूजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि धार्मिकों पर गहन चर्चा की गई। मंच ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पर्वतीय पंचांग के अनुसार दीपावली और महालक्ष्मी पूजन 21 अक्टूबर को ही मनाया जाएगा। कुछ संगठनों द्वारा 20 अक्टूबर को दीपावली मनाए जाने के दावे को मंच ने पूरी तरह खारिज कर दिया है। मंच ने इसे पर्वतीय संस्कृति के विघटन का सुनिश्चित प्रयास करार देते हुए कड़ी निंदा की है। बैठक को संबोधित करते हुए मंच के संरक्षक हनुम सिंह कुंवर ने कहा कि पर्वतीय समाज

उन्होंने समाज से अपील की कि वे भ्रामक सूचनाओं से सावधान रहें और परंपराओं का पालन करें। मंच के संस्थापक सदस्य भुवन जोशी ने कहा कि अमावस्या 21 अक्टूबर को ही है और पर्वतीय परंपरा के अनुसार उसी दिन महालक्ष्मी पूजन किया जाता है। उन्होंने भी 20 अक्टूबर को दीपावली मनाने के प्रयासों को भ्रामक और अनुचित बताया। बैठक में मंच के सचिव देवेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष त्रिलोक बनौली, कमल किशोर, धर्म सिंह बिष्ट, चंद्रशेखर परराई, जे. ललित प्रसाद, प्रताप चौहान, रयाम सिंह नेगी सहित कई सदस्य मौजूद रहे।

पुनर्नवा महिला समिति ने किया समाजसेवियों का सम्मान

- समाजसेवियों के नाम समर्पित शाम
- पुनर्नवा महिला समिति ने बढ़ाया मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। पुनर्नवा महिला समिति द्वारा रविवार को एक बैंकवेट हॉल कुंवा पुल (रामलीला ग्राउंड के सामने) समर्पण सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में समाजसेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वतीर मुख्यअतिथि के रूप में मौजूद लालकुआं विधायक डा. मोहन सिंह बिष्ट व मेयर गजराज सिंह बिष्ट, जिला पंचायत अध्यक्ष दीपा दरमवाल, राज्यमंत्री रतू अधिकारी, राज्यमंत्री नवीन वर्मा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वालित कर किया। समाजसेवा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले डा. कीर्ति बल्लभ शक्ता, डा. एससी जोशी, डा. तिलकराज जोशी, डा. एलएम रखाँलिया, भूपेन्द्र सिंह देव, मोहन रामदास, सुरेश राजन, जीवन चन्द्र जोशी, हरीश चन्द्र पांडे, मोहन चन्द्र जोशी, विनोद पंत, प्रकाशचन्द्र,



रोहित जोशी, मंजीत सिंह सेंगर, जनार्दन चिलकोटी को समिति की ओर से सम्मानित किया गया। इस मौके पर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बेला तौलिया और सुमित्रा प्रसाद सहित समिति की अध्यक्ष लता बोरा, सचिव शांति जीना, प्रचार सचिव कल्पना रावत, उपाध्यक्ष यशोदा रावत, उपस. चिव मंजू बनकोटी, कोषाध्यक्ष जानकी पोखरिया, रेखा रावत, अंजना बोरा, कुसुम बोरा, जया बिष्ट, प्रेमा कुजवारी, सुचित्रा जायसवाल, अरुणा टंडन, मंजू, सुमन, कुसुम दिगारी, भगवती बिष्ट आदि मौजूद रहे।

दिल्ली टेस्ट: वेस्टइंडीज का फाइटबैक

● तीसरे दिन का स्कोर 173/2, भारत से 97 रन पीछे, कैम्बेल शतक के करीब, पहली पारी 248 पर सिमटी



नई दिल्ली, वार्ता। जॉन कैम्बेल (नाबाद 87) और कप्तान शाई होप (नाबाद 66) अर्द्धशतकीय पारियों की मदद से वेस्टइंडीज ने दूसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन रविवार को स्टंप के

(तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर भारत ने वेस्टइंडीज को 248 रन के स्कोर पर ढेर कर 270 रनों की बहुत के साथ उसे फॉलोऑन दिया है। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज को 17 के स्कोर पर मोहम्मद सिराज ने तेजनारायण चंद्रपॉल (10) को आउटकर भारत को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद 15वें ओवर की तीसरी गेंद पर वॉशिंगटन स्युंर ने ऐलेक ऐथेनेज (सात) को बोल्ट कर भारत की झोली में दूसरा विकेट डाल दिया। चायकाल तक वेस्टइंडीज ने दो विकेट के नुकसान पर 35 रन बना लिए थे। चायकाल के बाद बल्लेबाजी करने आए

विकेट मात्र 16 रन जोड़कर गंवा दिया। उन्हें कुलदीप यादव ने बोल्ट आउट किया। इसके बाद टैविन इमलाक (21) और जस्टिन ग्रीव्स (17) को भी कुलदीप ने अपना शिकार बनाया। जोमेल वारिकन (एक) को मोहम्मद सिराज ने बोल्ट आउट किया। इसके बाद खारी पिप्पर और एंडरसन ने पारी को संभाला। वेस्टइंडीज ने लंच तक आठ विकेट पर 217 रन बना लिए थे और दोनों बल्लेबाजों के बीच लंच तक नौवें विकेट के लिए 42 रनों की साझेदारी हुई थी। लंच के बाद बल्लेबाजी करने उतरी विंडीज को बुमराह ने पिप्पर (23) को आउटकर भारत को नौवीं सफलता दिलाई।



मंधाना ने पूरे किए 5000 वनडे रन

विशाखापत्तनम, वार्ता। भारतीय महिला टीम की उपकप्तान और स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना रविवार को आस्ट्रेलिया के खिलाफ घमाकेदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 80 रनों की शानदार पारी खेलकर रिकार्ड्स की झड़ी लगा दी। बाएं हाथ की बल्लेबाज ने वनडे में 5000 रन पूरे कर लिए और दुनिया में पांचवीं व भारत के लिए ऐसा करने वाली दूसरी बल्लेबाज बन गईं। बता दें कि, भारत और आस्ट्रेलिया के बीच महिला विश्व कप का 13वां मुकाबला विशाखापत्तनम में खेला जा रहा है। इस मैच में आस्ट्रेलिया की कप्तान एलिसा हीली ने टास जीतकर मेजबानों को पहले बल्लेबाजी का न्यौता दिया है। आस्ट्रेलिया के खिलाफ मुक.। तबले में प्रतिका रावल और स्मृति मंधाना ने भारत को दमदार शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 155 रनों की साझेदारी हुई। इस दौरान मंधाना ने 46 और प्रतिका ने 69 गेंदों में अर्द्धशतक पूरे किए।

संक्षिप्त खेल समाचार अभिषेक पाल और सीमा भारतीयों में विजेता बने

नई दिल्ली, वार्ता। अभिषेक पाल ने रविवार को वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन में तीसरी बार जीत हासिल की, जबकि सीमा ने अपने पहले ही मुकाबले में प्रभावित किया। इंडियन एलीट प्रतियोगिता में अनुभव और उभरती प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ, जहां अभिषेक पाल और सीमा ने 4,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार जीतकर शीर्ष स्थान हासिल किया। पाल ने पुरुषों की दौड़ में 1:04:17 का समय लेकर जीत हासिल की, जबकि सीमा ने महिलाओं के वर्ग में 1:11:23 का समय लेकर आसानी से जीत हासिल की। यह जीत अभिषेक की दिल्ली हाफ मैराथन में तीसरी जीत थी, जबकि सीमा ने अपने पदार्पण में ही दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित हाफ मैराथन में से एक पर तुरंत प्रभाव डालते हुए प्रभावित किया।

मटाटा व रेंगरुक ने वेदांता हाफ मैराथन में जीते खिताब

नई दिल्ली, वार्ता। अनुभव की कन्याई धावकों एलेक्स निन्जिओका मटाटा और लिलियन कासेट रेंगरुक ने आज यहां विश्व एथलेटिक्स गोल्ड लेबल रोड रेस, वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन के 20वें संस्करण में उल्लेखनीय कन्याई जीत दर्ज करने के लिए अलग-अलग रणनीतियां अपनाईं। इस आयोजन के इतिहास में यह केवल दूसरी बार था जब कन्याई धावकों ने एक ही संस्करण में पुरुष और महिला दोनों वर्ग के खिताब जीते। फ्रांसिस किबिवोट और लियेथ चेपकुरुई 2006 में ऐसा सम्मान हासिल करने वाले पहले धावक थे। पिछले साल युगांडा के जोशुआ चेप्टेंगी के बाद उपविजेता रहे मटाटा ने अन्य धावकों से अलग होकर एकल दौड़ में भाग लिया। इस साल की शुरुआत में आरएके हाफ-मैराथन में 59:20 के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ जीत हासिल की।

क्रिकेट के मैदान में एक और क्रिकेटर की मौत

शाह टाइम्स ब्यूरो मुरादाबाद। यूपी के मुरादाबाद स्थित बिलारी में क्रिकेट मैदान पर खेलते-खेलते एक सीनियर खिलाड़ी की ज़िंदगी थम गई। रविवार को चल रहे वेटर्न क्रिकेट मैच के दौरान 50 वर्षीय अहमर खां की गेंदबाजी करते वक़्त हार्ट फेल होने से मौत हो गई।

अहमर मुरादाबाद के एकता विहार कालोनी के रहने वाले थे। साथी खिलाड़ियों के अनुसार अहमर अपनी टीम की ओर से गेंदबाजी कर रहे थे तभी अचानक मैदान पर गिर पड़े। साथी खिलाड़ियों ने तुरंत उन्हें संभाला और अस्पताल पहुंचाया लेकिन डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस खबर के फैलते ही खेल प्रेमियों में शोक की लहर दौड़ गई। अहमर खां लंबे समय तक दिल्ली के सुहानी क्लब और उत्तर प्रदेश की

क्रिकेट टीम से खेल चुके थे। वे राज्य स्तर पर सीनियर क्रिकेटर के रूप में जाने जाते थे और कई मौकों पर मशहूर स्पिनर पीयूष चावला के साथ भी मैदान साझा कर चुके थे। उनके निधन पर खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों ने गहरा दुख जताया है। अहमर खां अपने पीछे दो बच्चों और पत्नी को छोड़ गए हैं। आखिरी ओवर में संभल को जीत के लिए 18 रन चाहिए थे। अहमर ने आखिरी ओवर फेंकते हुए महज पांच रन दिए और मुरादाबाद की टीम को 13 रन से जीत दिलाई। टीम के सभी खिलाड़ी जीत की खुशी मना रहे थे इसी दौरान अहमर जमीन पर गिर पड़े। इससे पहले की लोग कुछ समझ पाते उनकी मौत पर ही जान चली गई। मौके पर मौजूद लोग अस्पताल लेकर पहुंचे लेकिन तब तक अहमर की मौत हो चुकी थी।

चचेरे भाई वाचेरोट और रंडरकनेच फाइनल मुकाबले के लिए तैयार

शंघाई, वार्ता। एटीपी रैंकिंग में 204वें स्थान पर काबिज मोनाको के वेलेंटिन वाचेरोट ने शनिवार को सर्बियाई टेनिस दिग्गज नोवाक जोकोविच को 6-3, 6-4 से हराकर 2025 शंघाई मास्टर्स के फाइनल में प्रवेश किया। इस जीत के साथ, वाचेरोट मास्टर्स 1000 एकल फाइनल में पहुंचने वाले पहले मोनेगास्क खिलाड़ी और पुरुष एकल में शीर्ष-10 खिलाड़ी को हराने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। वाचेरोट ने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या हुआ है, इसलिए मैं इस पर कुछ नहीं कह सकता। यह वाकई अद्भुत है। सबसे पहले, कोर्ट के दूसरी तरफ (जोकोविच से) होना एक अविश्वसनीय अनुभव था। मुझे लगता है कि मुझे इस मैच से, उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है।

कुलदीप यादव अब शीर्ष बाएं हाथ के कलाई के स्पिनरों के क्लब में शामिल



नई दिल्ली, वार्ता। कुलदीप यादव जब मैदान पर उतरते हैं, तो बल्लेबाजों के लिए मुस.। ीबतें दूर नहीं होतीं। आज, भारत के बाएं हाथ के कलाई के जादू

● सिर्फ 15 टेस्ट मैचों में कुलदीप 5 बार 5 विकेट ले चुके हैं, जो दिग्गज जॉनी वार्डल के रिकार्ड की बराबरी कर लेते हैं

गार ने दिल्ली टेस्ट के तीसरे दिन अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम में वेस्टइंडीज को स्तब्ध करते हुए, एक शानदार प्रदर्शन किया। सिर्फ 15 टेस्ट मैचों में, कुलदीप पांच बार पांच विकेट ले चुके हैं, जो दिग्गज जॉनी वार्डल के रिकार्ड की बराबरी कर लेते हैं, हालांकि वार्डल ने यह कारनामा 28 मैचों में किया था। अब उनके साथ खेलने वाले खिलाड़ी शीर्ष पर हैं, और कुलदीप इस सम्मान की तरह मानते हैं। निर्णायक क्षण शानदार अंदाज में आया जब जेडन सील्स एलबीडब्ल्यू आउट

हो गए। कुलदीप की चतुराई से छिपाई गई गुगली, बल्ले के पास से फिसली, पैड से टकराई और स्टैप्स को चकनाचूर कर गई। सील्स ने रिव्यू लिया, लेकिन रीप्ले से कोई शक नहीं रहा कि वह आउट हो गए। सटीक। निर्दयी। विशुद्ध कलाकारी। उस विकेट ने कुलदीप के पांच विकेट पूरे कर दिए और हर बल्लेबाज को एक कड़ी चेता। वनी देवी: उनका सामना करना एक ऐसी जंग है जिससे आप हल्के में नहीं ले सकते। सभी फॉर्मेट में, कुलदीप तूफान की तरह हैं। चार टेस्ट मैचों में, उन्होंने 33.8 के स्ट्राइक रेट से 19 विकेट लिए हैं। 19 वनडे मैचों में, 27.3 के स्ट्राइक रेट से 33 विकेट (और टी20 में, नो

मैचों में 12.7 के स्ट्राइक रेट से 17 विकेट। यह किस्मत नहीं है—यह महारत है, कलात्मकता है, इसका पूरा पैकेज है। वेस्टइंडीज ने कोशिश की, उन्होंने सचमुच कोशिश की, लेकिन कुलदीप ने उन्हें हर गेंद पर अंदाज़ा लगाने पर मजबूर कर दिया। फ्लाइट, टर्न, छकाना, सब कुछ उनके पास था। स्टेडियम में तालियां बजीं, टीम ने तालियां बजाईं, और कुलदीप ऐसे चले गए जैसे उन्होंने अभी-अभी यह बयान दिया हो: मैं यहां हूं। मैं घातक हूं। और मैं महान खिलाड़ियों से एक हूं। टेस्ट में अब भारत का पलड़ा भारी है, और कुलदीप का यह स्पेल उन प्रदर्शनों में से एक के रूप में याद किया जाएगा।

नामीबिया ने दक्षिण अफ्रीका को हराया

● नामीबिया ने खेले गए एकमात्र टी-20 मैच में दक्षिण अफ्रीका पर आखिरी गेंद में रोमांचक जीत हासिल की

विंडहोक, वार्ता। रूबेन टम्प्लेमैन के हरफनमौला प्रदर्शन (3/28 और 8 गेंदों में 11 रन) और जेन ग्रीन के 23 गेंदों में नाबाद 30 रनों की संयमित पारी की बदौलत, नामीबिया ने शनिवार को विंडहोक में खेले गए एकमात्र टी20 मैच में दक्षिण अफ्रीका पर आखिरी गेंद पर रोमांचक जीत हासिल की। जीत के लिए 135 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए, ग्रीन ने सिमेलाने की आखिरी गेंद पर लो फुलटॉस को स्वीच कर नामीबिया को चार विकेट से जीत दिलाई। 2022 विश्व कप में एडिलेड में नीदरलैंड से हारने के बाद, यह दूसरी बार था जब दक्षिण अफ्रीका किसी एसोसिएट देश से टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में हारा है। पहले बल्लेबाजी करते हुए, दक्षिण अफ्रीका ने पारी की



शुरुआत में ही विंडटन डी कॉक और रिज़ा हेंड्रिक्स के विकेट गंवा दिए। हालांकि, लुआ-डू प्रीटोरियस और रूबिन हरमन ने उस पिच पर पारी को संभाला जहां रन बनाना आसान नहीं था। दोनों ने 30 रन जोड़े, इससे पहले कि टम्प्लेमैन ने डीप स्क्वायर लेग पर एक बेहतरीन डाइविंग कैच लपका। जल्दी-जल्दी कुछ और विकेट गिरने से 11वें ओवर में दक्षिण अफ्रीका का स्कोर 5 विकेट पर 68 रन हो गया। जेसन

बल्लेबाजों को भी रन बनाने में थोड़ी परेशानी हुई, लेकिन दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाजों, खासकर गेराल्ड कोएल्जी की अनियमित लाइन-अप ने उनकी मदद की, जो अपने दूसरे ओवर की चार गेंदें डालने के बाद कुछ लचता के साथ मैदान से बाहर चले गए। नामीबिया के शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों को रन बनाने में संघर्ष करना पड़ा, लेकिन जब तक दक्षिण अफ्रीका ने अपने पहले तीन विकेट लिए, तब तक नामीबिया ने केवल सात ओवरों में 51 रन बना लिए थे। गेरार्ड इरास्मस, जेजे स्मिट और जेसन क्रगर ने बीच के ओवरों में जरूरी मजबूती प्रदान की ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि दक्षिण अफ्रीका को बढ़त न मिले। हालांकि, अंतिम तीन ओवरों में 28 रनों की जरूरत के साथ, नामीबिया के लिए चुनौती अभी भी कठिन थी। ग्रीन और टम्प्लेमैन ने एक-एक चौका लगाकर अंतिम ओवर में लक्ष्य 11 रनों तक पहुंचाया।

रवींद्र जडेजा को अब भी 2027 वनडे विश्व कप खेलने की उम्मीद

नई दिल्ली, वार्ता। भारत के शीर्ष ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए टीम में जगह न मिलने के बावजूद 50 ओवरों का विश्व कप जीतने के अपने सपने को नहीं छोड़ा है। दिल्ली में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन के खेल के समापन पर बोलते हुए, जडेजा ने यह भी पुष्टि की कि चयनकर्ता और नए कप्तान शुभमन गिल ने टीम की घोषणा से पहले ही उन्हें टीम में शामिल न करने के बारे में सूचित कर दिया था। मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने कहा कि वे ऑस्ट्रेलिया में एक श्रृंखला के लिए दो बाएं हाथ के स्पिनरों को शामिल नहीं कर सकते और जडेजा ने इसे स्वीकार किया। जडेजा ने अपने वनडे भविष्य पर कहा कि देखिए, यह मेरे हाथ में नहीं है।

मैं खेलना चाहता हूँ, लेकिन आखिरकार, टीम प्रबंधन, चयनकर्ता, कोच, कप्तान सोच रहे होंगे कि मैं इस सीरीज में क्यों नहीं हूँ। इसके पीछे कोई न कोई वजह जरूर होगी। और उन्होंने मुझसे बात की। ऐसा नहीं है कि जब टीम की घोषणा हुई तो उन्होंने मुझे चौका दिया कि मैं उसमें नहीं हूँ। यह अच्छी बात है कि कप्तान, चयनकर्ता, कोच ने मुझसे बात की और इसके पीछे कोई न कोई वजह जरूर है। पिछले विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आखिरी पड़ाव पर पिछड़ने वाली टीम का हिस्सा रहे जडेजा, जो 2027 में होने वाले टूर्नामेंट



● रवींद्र जडेजा ने हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए टीम में जगह न मिलने के बावजूद 50 ओवरों का विश्व जीतने के अपने सपने को नहीं छोड़ा

के दौरान लगभग 39 साल के हो जाएंगे, को उम्मीद है कि आखिरकार उन्हें टूर्नामी मिल ही जाएगी। उन्होंने कहा कि जब भी मुझे मौका मिलेगा, मैं वही करने की कोशिश करूंगा जो मैं इतने सालों से करता आ रहा हूँ। और विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में, अगर मुझे मौका मिलता है, तो उससे पहले कई वनडे मैच खेलने हैं।



अफगानिस्तान ने बांग्लादेश को 81 रनों से हराया

● इब्राहिम ज़ादरान ने 95 रनों की बेहतरीन पारी खेली, कप्तान राशिद खान ने पांच विकेट और ओमरजेई ने तीन विकेट लिए

अब् धाबी, वार्ता। इब्राहिम ज़दरान (95) की बेहतरीन पारी के बाद कप्तान राशिद खान (पांच विकेट) और अजमतउल्लाह ओमरजेई (तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर अफगानिस्तान ने बांग्लादेश को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में 81 रनों से हरा दिया है। इसी के साथ अफगानिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली है। 190 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश को ओमरजेई और राशिद खान के कहर का सामना करना पड़ा।

अफगानिस्तान के गेंदबाजी आक्रमण के आगे बांग्लादेश की पारी टीम 28-3 ओवरों में 109 के स्कोर पर ढेर हो गई। अफगानिस्तान ने 81 रनों से यह मुकाबला जीत लिया। मो-तौहीद हदीय ने बांग्लादेश के लिए सर्वाधिक 24 रन बनाए। इसके आलवा सैफ हसन (22), जाकेर अली (18) और नरुल हसन (15) दहाई आंकड़े वाले बल्लेबाज रहे। अफगानिस्तान के इब्राहिम ज़दरान को उनकी 95 रनों की शानदार पारी के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया। अफगानिस्तान के लिए राशिद खान ने पांच विकेट लिए। अजमतउल्लाह ओमरजेई को तीन विकेट मिले। नांगेलिया खरोटे ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले

अफगानिस्तान ने शनिवार रात खेले गए मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी अफगानिस्तान को बांग्लादेश के गेंदबाजों ने 44.5 ओवरों में 190 के स्कोर पर समेट दिया। इब्राहिम ज़दरान ने अफगानिस्तान के लिए 95 रनों की महत्वपूर्ण पारी खेली। उन्होंने अपनी इस धैर्यपूर्ण पारी 140 गेंदों का सामना किया तथा तीन चौके और एक छक्का भी लगाया। मोहम्मद नबी (22), ए एम गजनवर (22), नांगेलिया खरोटे (13) और रहमान उल्लाह गुरबाज (11) दहाई आंकड़े वाले बल्लेबाजों में शामिल रहे। बांग्लादेश के लिए मेहदी हसन मिराज ने तीन विकेट लिए।

पेगुला ने सबालेंका को हराया

● फाइनल में पेगुला का सामना हमवतन कोको गॉफ से होगा जिन्होंने पहले सेमीफाइनल में इटली की जैस्मिन को हराया था

बुहान, वार्ता। जैसिका पेगुला ने एक सेट से पिछड़ने के बाद संघर्ष किया और कई मैच पॉइंट बचाकर शनिवार को शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका को 2-6, 6-4, 7-6(2) से हराकर बुहान ओपन के फाइनल में प्रवेश किया और बेलारूसी खिलाड़ी के टूर्नामेंट में 20 मैचों के जीत के सिलसिले को भी तोड़ दिया।

रविवार के फाइनल में, पेगुला का सामना हमवतन कोको गॉफ से होगा, जिन्होंने पहले सेमीफाइनल में इटली की जैस्मिन पाओलीनी को 6-4, 6-3 से आसानी से हराया था। सबालेंका शुरुआत में पूरी तरह से नियंत्रण में दिखीं और उन्होंने अपनी विशिष्ट बेसलाइन आक्रामकता से पेगुला को परास्त कर पहला सेट 6-2 से

जीत लिया। पेगुला ने दूसरे सेट में फिर से वापसी की और निर्णायक मौके पर ब्रेक लेकर मैच बराबरी पर ला दिया। निर्णायक सेट सबालेंका के पक्ष में जाता दिख रहा था जब उसने 5-2 की बढ़त बना ली, लेकिन पेगुला ने शानदार वापसी की और लगातार चार गेम जीतकर 6-5 से आगे हो गईं। सबालेंका ने टाईब्रेकर करवाया, लेकिन पेगुला ने 7-2 से जीत हासिल कर ली और दो घंटे से ज़बदा चले कड़े मुकाबले के बाद जीत पक्की कर ली।

पेगुला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि मुझे अपने राज बताना पसंद नहीं। लेकिन मैं लगातार उसके पैटर्न के बारे में सोचती रहती हूँ - बड़े पॉइंट्स पर उसे क्या करना पसंद है, वह कहाँ सर्विस करना चाहती है, कब वह दिशा बदलने की कोशिश करती है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कोर्ट से बाहर हूँ, मुझे पता है कि उसे कहाँ स्टाइस को ड्रॉप शॉट लगाना पसंद है।

लक्खर पुलिस ने तीन नशा तस्कर दबोचे

अलग-अलग जगह से भारी मात्रा में प्रतिबंधित कैप्सूल बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता लक्खर। लक्खर पुलिस ने नशा तस्करों के खिलाफ अभियान चलाकर तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर भारी मात्रा में नशीले कैप्सूल बरामद किया है। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस में मामला दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

पुलिस द्वारा नशा तस्करों के खिलाफ छापेमारी करते हुए एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया है उसके कब्जे से 270 अवैध नशीले टैबलेट बरामद हुए हैं राजीव रौथान कोतवाली प्रभारी लक्खर ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस टीम गठित की गई। चैकिंग

के दौरान एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया गया उसके कब्जे से 285 अवैध नशीले कैप्सूल बरामद हुए पृष्ठताछ करने पर उस व्यक्ति ने अपना नाम साजिद अली पुत्र शौकीन निवासी मोहम्मदपुर कुन्हारी थाना लक्खर बताया उसको पकड़ने वाली पुलिस टीम में रायसी पुलिस चौकी प्रभारी नीरज रावत कांस्टेबल महेंद्र सिंह राजेंद्र सिंह शामिल रहे पकड़े गए व्यक्ति के खिलाफ संबंधित मुकदमा दर्ज कर न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

वहीं दूसरी टीम ने भी युवाओं की नसों में जहर घोलने वाले दो नशा तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार



किया है जो मेडिकल की आड़ में नशीले कैप्सूल बेच रहे थे पुलिस टीम के द्वारा मुखबिर की सूचना पर चैकिंग के दौरान एक मेडिकल संचालक को अवैध नशीले कैप्सूल के साथ गिरफ्तार किया गया जो मेडिकल स्टोर की आड़ में कैप्सूल की तस्करी करता था जानकारी

व पृष्ठताछ करने पर अभियुक्त मेडिकल स्टोर की आड़ में नशीली दवाई का कारोबार कर रहे लोगों को नशीले कैप्सूल को सप्लाय करता था दोनों अभियुक्तगणों को गिरफ्तार कर लिया गया पृष्ठताछ करने पर उन्होंने अपने नाम समीर अली पुत्र युनुस निवासी दौड़वसी नसीरपुर कला थाना पथरी उम्र 24 वर्ष आरिफ पुत्र नूर अली निवासी हाजी अली मस्जिद के पास सुल्तानपुर उम्र 25 वर्ष बताया उनको पकड़ने वाली पुलिस टीम में भीकमपुर पुलिस चौकी प्रभारी वीरेंद्र सिंह नेगी कांस्टेबल वीरेंद्र दिगंबर शामिल रहे।

उत्तराखंड की सबसे बड़ी मंगलौर गुड़ मंडी के बिगड़े हालात

शाह टाइम्स संवाददाता मंगलौर। उत्तराखंड की नम्बर वन के नाम से जाने जानी वाली कृषि उत्पादन मंडी सिमिति यानि मंगलौर गुड़ मंडी अब सुनसान नजर आने लगी है जिसके साथ मंडी में व्यापार करने वाले व्यापारियों की हालत भी खराब होने लगी है प्रशासन और सरकार से कई बार गुहार लगाने के बाद अब गुड़ व्यापारी लाचार नजर आ रहे

रविवार को मंगलौर स्थित गुड़ मंडी में गुड़ व्यापारियों द्वारा एक प्रेस वार्ता की गई जहां पर

गुड़ व्यापारी सचिन मदान ने पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि हरिद्वार जिले में लगभग 500 कोल्हू है जहाँ पर गुड़ बनाया जाता है पर अब हालात यह हो चुके हैं कि मात्र 60 ही कोलुहों का गुड़ मंडी तक पहुँच रहा है जिसके चलते उनके साथ साथ गुड़ मंडी में काम करने वाले मजदूरों को भी खर्च के लाले पड़ने लगे हैं उन्होंने बताया हरियाणा पैंजब या अन्य जगहों से आने वाले व्यापारी गुड़ मंडी से माल ना खरीदकर खुद कोल्हूओं से डायरेक्ट माल खरीद रहे हैं

जिसको लेकर सरकार को तो राजस्व का नुकसान हो रहा है और अब उनको भी आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं सुधीर बंसल ने बताया कि सभी व्यापारियों द्वारा कई बार रूडकी जॉइन्ट मजिस्ट्रेट को इस संबंध में ज्ञापन भी दिया गया है लेकिन आज तक कोई समस्या का समाधान नहीं हो पाया है वहीं मंडी सिमिति के कर्मचारी खुद बाहर से आने वाले व्यापारियों के साथ मिलीभगत कर सरकार को भी लाखों रुपयों का चूना लगा रहे हैं।

30 लीटर अवैध शराब के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता लक्खर।

पुलिस के द्वारा अवैध नशा बेचने वालों के खिलाफ छापेमारी करते हुए तीन नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है उनके कब्जे से 30 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद हुई है। राजीव रौथान कोतवाली प्रभारी लक्खर ने जानकारी देते हुए बताया एसएसपी हरिद्वार द्वारा आगामी पर्व को दृष्टिगत रखते हुए नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी बिक्री पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने के लिए पुलिस को निर्देशित किया था जिसमें पुलिस टीम गठित की गई गठित पुलिस टीम के द्वारा मुखबिर की सूचना पर छापेमारी करते हुए तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। जिनके नाम सुमित कुमार पुत्र परलदी निवासी ग्राम पीतपुर उम्र 30 वर्ष मंगेयाम पुत्र राम सिंह निवासी ग्राम टांडा भागमल उम्र 47 वर्ष चमन पुत्र तुगल निवासी ग्राम लक्खर उम्र 55 वर्ष बताया। उनको पकड़ने वाली पुलिस टीम में हेड कांस्टेबल शूरवीर तोमर रामशेर खान कांस्टेबल रविंद्र चौहान देवेन्द्र सिंह संजय पवार होमागार्ड महावीर सिंह शामिल रहे। पकड़े गए व्यक्तियों के खिलाफ संबंधित मुकदमा दर्ज कर न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

विधायक ने किया एनआईएच में दीपावली मेले का उद्घाटन

शाह टाइम्स संवाददाता रुड़की। -बच्चों ने दी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति रुड़की। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान में मनोरंजन क्लब का मेला संस्थान के प्रांगण में आयोजित किया गया। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि विधायक प्रदीप बत्रा एवं संस्थान के निदेशक डॉ. वाईआरएस राव ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया।

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान परिसर में आयोजित मेले में विभिन्न प्रकार के स्टॉल सजाए गए जिसमें लोगों ने जमकर खरीदारी की इसके साथ ही व्यंजनों का आनंद भी

लिया। ब्लैक बॉडी बताने कहा कि इस प्रकार के मेले सामूहिक रूप से पर्व मनाने के लिए हमें बढ़ावा देते हैं और त्योहार के मजे को चार गुना कर देते हैं। संस्थान के निदेशक डॉ. वाईआरएस राव ने कहा कि अपनी निहित कार्यों के अलावा संस्थान अपनी संस्कृति और परंपरा को बढ़ाने का कार्य करता है। दीपावली मेले में संस्थान कर्मियों के परिवार एवं अन्य शहरवासी मिलकर पर्व मनाते हैं और खुशियों को आपस में साझा करते हैं। प्रचार समिति सदस्य पवन कुमार ने बताया कि मेले में संस्थान के कार्यों के प्रस्तुतिकरण के साथ-साथ बच्चों



के लिए फैंसी ड्रेस एवं डांस प्रतियोगिता, तंबोला, खाने-पीने की दुकान, लक्की ड्रा, झूला इत्यादि की दुकानें लगाई गईं जिसमें सभी बच्चों को प्रतियोगिता का मंत्रमुग्ध कर दिया। उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य प्रबन्धक

भारतीय स्टेट बैंक अंशु श्रीवास्तव, निर्णायक मंडल में मनीषा बत्रा, वाई हराती, डा. सुभाष खोन्नाड़े आदि मौजूद रही। मनोरंजन क्लब के अध्यक्ष डॉ. सोबन सिंह रावत ने संस्थान के सभी परिवारों को मेले में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने के लिए धन्यवाद किया। इस अवसर डॉ. ए. आर. सैन्थिल कुमार, डॉ. मनीष कुमार नेमा, डॉ. विनय त्यागी, कालजंग छोइन, डॉ. अश्वनी राजाडे, डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ. संतोष मुस्लीध र पिंगले, प्रिया गगनेजा, चारु पाण्डेय, नीलम बोहरा, इमरतखल्ल हसन, प्रदीप कुमार, काजल पाल, महेंद्र सिंह सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

खेलो में कैरियर बनाने की अपार संभावनाएं: सुबोध राकेश

संभावनाएं: सुबोध राकेश

शाह टाइम्स संवाददाता भगवानपुर। भगवानपुर ब्लॉक की 25 वीं ब्लॉक स्तरीय विद्यालय एथलेटिक्स एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का समापन अचीवर्स स्पोर्ट्स अकैडमी करौंदी भगवानपुर में सादगीपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे उत्तराखंड के पूर्व राज्य मंत्री तथा वरिष्ठ भाजपा नेता सुबोध राकेश ने कहा कि आज खेलों में कैरियर बनाने की अपार संभावनाएं हैं। एक खिलाड़ी, खिलाड़ी के रूप में खेल पत्रकार के रूप में, क्रमेंटेटर के रूप में तथा खेल विश्लेषक के रूप में अपना कैरियर बना सकता है। इस दौरान उन्होंने सभी अध्यापक और प्यारे बच्चों को बहुत-बहुत बधाई शुभकामनाएं



दीडस शुभ अवसर पर अचीवर्स अकैडमी करौंदी के मालिक राजकुमार सिंधु, संजु मेनवाल, दीपक चौधरी, व्यायाम शिक्षक अरुण मलिक, ओम सिंह विनीत सिंह, जतिन त्यागी, अमित सैनी, ओ पी सोनकर, मनीष सक्सेना, विपुल कुमार प्रदीप कुमार, भीम सिंह, सुधीर सैनी, नवीन सैनी, संजय पाल, नेत्रपाल, रजत बहुखंडी, पुष्पराज सिंह आदि, रजनीश, धर्नजय, सैयद त्यागी, महिला व्यायाम शिक्षक रीना देवी, संगीता, उजमा, कल्पना सैनी, शालिनी मनी, सुप्रिया गोड, पारुल निधि, कु. तनु, कु. शहरीन, कु. हिमांशु, कु. पायल आदि उपस्थित रहे

एसो. ऑफ एलायंस ने मनाया दीपावली पर्व

शाह टाइम्स संवाददाता रुड़की। एसोसिएशन ऑफ एलायंस क्लब इंटरनेशनल के द्वारा दीपावली महोत्सव हॉटेल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारी और सदस्यों ने कविताएं, गीत और चुटकुलों आदि की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के खेलों में भी प्रतिभाग किया।

देहरादून रोड स्थित एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश चंद्र ओरी और पूर्व गवर्नर नीलम ओरी ने कहा कि त्योहारों को मिलजुलकर मनाना हमारे देश की परंपरा रहा है, और क्लब इसी परम्परा को आगे बढ़ाने

का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि क्लब का प्रत्येक सदस्य इस प्रकार के कार्यक्रमों में आगे बढ़कर हिस्सेदारी करे और अपनी खुशियों को ऐसे ही सेलिब्रेट करें। अंतराष्ट्रीय निदेशक अरविंद गुप्ता एवं डिस्ट्रिक्ट गवर्नर एली अनीता गुप्ता ने कहा कि क्लब समाजसेवा के साथ देश कि संस्कृति और परंपरा को बढ़ावा देने का काम कर रहा और आने वाली पीढ़ी को देश की संस्कृति से जोड़ने का प्रयास क्लब का है। इस अवसर पर क्लब के पदाधिकारियों और सदस्यों ने कविताएं, भजन, चुटकुलों कविताओं की प्रस्तुति देकर सभी को गुरुदाया। इसके साथ ही कपल गेम, तंबोला, अंतोक्षरी आदि खेलों



में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन सुरभि ने किया। इस अवसर पर अध्यक्ष योगेश सिंघल, सचिव योगेश गोयल, कोषाध्यक्ष राजीव गोयल, अभिषेक चंद्रा, प्रवीण सिंधु, विशाल गोयल, विवेक गुप्ता, आकाश जैन, दलीप प्रधान, मनीषा सिंघल, गोविंद विकास अग्रवाल, नरेंद्र आहुजा, डॉक्टर रविंद्र कपूर, गोपाल गोयल, मनीषा अग्रवाल, पूरुष चंद्रा, मनु गोयल, निधि गोयल, सोनिया आहुजा, मीनू प्रधान, नीरा गोयल, रूतु अग्रवाल, शैलेन्द्र कुमार, प्रमोद गोयल आदि मौजूद रहे।

रोटरी क्लब व आईआईटी ने संयुक्त रूप से चलाया सफाई अभियान

रोटरी क्लब व आईआईटी ने संयुक्त रूप से चलाया सफाई अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता रुड़की। रोटरी क्लब मिडटाउन ने आईआईटी रुड़की और नगर निगम रुड़की के सहयोग से स्वच्छता और जागरूकता अभियान चलाया। सुबह चले इस अभियान की शुरुआत आंचल डेयरी से शुरू होकर आईआईटी मुख्य गेट और जामुन रोड को जोड़ने वाले ब्रांसिंग पर संपन्न हुई। अभियान के दौरान सिर्फ गलियों की सफाई ही नहीं की गई, बल्कि जामुन रोड के निवासियों और आम जनता को प्लास्टिक के सही निपटान और घर में कचरा प्रबंधन के बारे में जागरूक किया गया। स्वयंसेवकों ने लोगों को अपने घर के आसपास सफाई रखने और कचरा अलग-अलग करने के

फायदे समझाए। सभी प्रतिभागी एकजुट होकर, साफ-सुथरे और हरे-भरे मोहल्ले के लिए काम करते नजर आए। सभी के सामूहिक प्रयासों और उत्साह ने सेवा भावना को उजागर किया। इस अभियान में रोटरी रुड़की मिडटाउन के 20 से ज्यादा सदस्य, आईआईटी रुड़की के डॉ. एसएस मोर्या व 18 छात्रों की उनकी टीम ने सक्रिय भागीदारी की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रवि प्रकाश और उनकी पत्नी शालिनी प्रकाश ने भी अभियान में भाग लेकर कार्यक्रम में भाग ले कर सबका मनोबल बढ़ाया।

प्रोजेक्ट चेयर समीक्षा जैन और कनिका गुप्ता के नेतृत्व में, क्लब अध्यक्ष डॉ. विकास त्यागी और क्लब सचिव अनुभव गुप्ता सहित शोवर जैन, ऋचा अहलावत, राजीव धम्मी, ऋतिका

गुप्ता, सारिका सिंघल, सुधांशु गोयल, डॉ. सुधीर चौधरी, अक्षय प्रताप सिंह, विवेक कुमार गुप्ता, राजेश गुप्ता, हिमांशु पुंडीर, नेहा सिंह और डॉ. नवनीत शर्मा ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रोटरी रुड़की मिडटाउन के सभी सदस्यों ने नारा दिया कि “आइए, हम सब मिलकर रुड़की को और स्वच्छ और सुंदर बनाएं।”

पुलिस ने चलाया सत्यापन अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता लक्खर। बाहरी व्यक्तियों के विरुद्ध पुलिस ने सत्यापन अभियान चलाया है जिससे अवैध रूप से रह रहे लोगों में खलबली मच गई।

राजीव रौथाना कोतवाली प्रभारी लक्खर ने जानकारी देते हुए बताया एसएसपी हरिद्वार द्वारा

गुप्ता, सारिका सिंघल, सुधांशु गोयल, डॉ. सुधीर चौधरी, अक्षय प्रताप सिंह, विवेक कुमार गुप्ता, राजेश गुप्ता, हिमांशु पुंडीर, नेहा सिंह और डॉ. नवनीत शर्मा ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रोटरी रुड़की मिडटाउन के सभी सदस्यों ने नारा दिया कि “आइए, हम सब मिलकर रुड़की को और स्वच्छ और सुंदर बनाएं।”

थाना क्षेत्र में बिना सत्यापन के रह रहे किराएदारों पर बाहरी व्यक्तियों गुड़ चरित्रों के मालिकों उसमें कार्य करने वाले सखिंध व्यक्तियों वाहनों की गहनता से चैकिंग कर प्रभावी कार्रवाई के लिए पुलिस को निर्देशित किया था जिनके अनुपालन में कोतवाली लक्खर पुलिस द्वारा टीम गठित की गई। गठित पुलिस टीम के द्वारा होटल दाबा व गुड़ चरखी के मालिक को उसमें कार्य करने वाले बाहरी व्यक्तियों की चैकिंग की गई जिसमें कुल 105 व्यक्तियों का सत्यापन किया गया। मौके पर 15 चालान 81 पुलिस एक्ट नकद किए गए जिनसे 3750 रुपए संयोजन शुल्क वसूला गया।

बोगी से टकराए दो बाइक सवार गंभीर, हायर सेंटर भर्ती

शाह टाइम्स संवाददाता झबरेड़। तंज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार दो युवक गन्ने की बोगी से टकराने से गंभीर घायल हो गए घायलों को उपचार के लिए स्थानीय डॉक्टर ने हायर सेंटर रेफर कर दिया। लोगों ने घायल लोगों को परिजनों का नाम पता पूछ कर उनको सूचना दी।

जानकारी के अनुसार तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार दो युवक गन्ने की बोगी में टकराने

से गंभीर घायल हो गए। रविवार को लखनौता देवबंद मार्ग पर गोकुलपुर बॉर्डर के समीप गन्ने की बोगी से टकराने से एक सड़क दुर्घटना हां गई मोटरसाइकिल पर सवार गांव राजपुर निवासी जिशान व तालिब मोटरसाइकिल पर सवार होकर मंगलौर की ओर जा रहे थे मोटरसाइकिल समारोह के सामने एक गन्ने की ट्रैक्टर बोगी जा रही थी मोटरसाइकिल को रफ्तार इतनी तेज थी कि वह मोटरसाइकिल को संभाल नहीं पाए और गन्ने की बोगी से टकरा गए जिस मोटरसाइकिल सवार दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए स्थानीय लोगों ने दोनों को दिखाया डॉक्टर ने दोनों को गंभीर घायल बताते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया तभी लोगों ने घायल लोगों को परिजनों का नाम पता पूछ कर उनको सूचना दी। मौके पर पहुंचे परिजन दोनों घायलों को हायर सेंटर ले गए।

करतार सिंह भड़ाना ने भाजपा कार्यकर्ताओं से बूथ की मजबूती को लेकर की चर्चा

शाह टाइम्स संवाददाता मंगलौर। मंगलौर विधानसभा के मंडावली स्थित कार्यालय हरियाणा के पूर्व कैबिनेट मंत्री करतार सिंह भड़ाना ने रविवार को खेड़ा जट के ग्रामीणों के साथ एक मीटिंग कर अपने अपने क्षेत्रों के बूथों को मजबूत करने का आह्वान किया। जिससे साफ तौर जाहिर हो चुका है कि करतार सिंह भड़ाना 2027 के चुनाव को लेकर अभी से करने में जुट गए हैं।

पूर्व कैबिनेट मंत्री करतार सिंह भड़ाना ने बताया कि उन्हें मंगलौर विधानसभा के लोगों से



बहुत पहले से प्रेम रहा है और वह इन लोगों के दिलों से जुड़े हुए हैं और समय समय पर वह यहाँ के लोगों के पास आते रहते हैं। क्योंकि उन्हें इनका स्नेह हुआ है और आने वाले 2027 में अगर भाजपा उन्हें मौका देती है तो वह चुनाव लड़ेंगे और जितेंगे भी।

शिक्षक राजेश को डॉक्टरेट की उपाधि से किया सम्मानित

शाह टाइम्स संवाददाता रुड़की। वासुदेव लाल मैथिल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज हरिद्वार रोड रुड़की में प्रधानाचार्य एवं राधा कृष्ण सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज बाजपुर उधम सिंह नगर के पूर्व शिक्षक राजेश कुमार सिंह को मैजिक एंड आर्ट शिवाग्रहालय फरीदाबाद की ओर से मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया यह सम्मान फरीदाबाद स्थित कास्टल आफ आर्ट थियेटर, दरभंगा प्लाजा में आयोजित समारोह में फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ सीपी यादव ने प्रदान किया यह सम्मान शिक्षा प्रबंधन समाज सेवा पर्यावरण और विगत 27 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगणीय योगदान के लिए दिया गया है।

लंदौरा-नारसन रोड पर चलाया चैकिंग अभियान

ओवरलोडिंग के 33 ट्रैक्टर ट्राली के चलान, 10 सीज

शाह टाइम्स संवाददाता मंगलौर। जिलाधिकारी के निर्देशों के क्रम में, आज इंटरसेप्टर हरिद्वार एवं इंटरसेप्टर रुड़की द्वारा नरसन व लंधौरा और हरिद्वार मार्ग पर एक प्रातःकालीन प्रवर्तन अभियान संचालित किया गया। जिसमें ट्रैक्टर-ट्रालियों पर विशेष रूप से फोकस किया गया। अभियान के दौरान कुल 33 चालान किए गए तथा 10 ट्रैक्टर-ट्रालियां सीज की गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिलाधिकारी के निर्देशों पर इंटरसेप्टर हरिद्वार एवं इंटरसेप्टर रुड़की द्वारा नरसन व लंधौरा मार्ग पर एक प्रवर्तन अभियान संचालित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि चालू वित्तीय वर्ष में अब तक हरिद्वार एवम रुड़की के प्रवर्तन दलों द्वारा 250 से अधिक ट्रैक्टर-ट्रालियों के चालान किए जा चुके हैं, जो विभाग की सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ओवरलोडिंग तथा अपरिचित परिवहन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शांति व्यवस्था भंग करने पर एक युवक को पकड़ा

शाह टाइम्स संवाददाता रुड़की। सिविल लाइन पुलिस ने शांति व्यवस्था भंग करने पर एक युवक को गिरफ्तार किया है। जिसे न्यायालय में पेश किया जा रहा है। राशिद पुत्र नासिर। ग्राम केलनपुर कोतवाली रुड़की जनपद हरिद्वार को वाहन चैकिंग के दौरान रोका गया जिसके द्वारा मोटरसाइकिल पर तीन सवारी बिठाकर चल रहा था जिसका पुलिस द्वारा अंतर्गत धारा 128.39.192.129.3/181.146.196.207 मोटर वाहन अधिनियम में चालान कर मोटरसाइकिल को सीज किया गया अभियुक्त के द्वारा चालन पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया गया और धमकी देते हुए मोटरसाइकिल पर आग लगाने के लिए मोटरसाइकिल का पाइप खोलने लगा जिसे पुलिस द्वारा रोका गया परंतु अभियुक्त अत्यधिक उग्र होकर हंगामा करने लगा जिसे काफी समझाने का प्रयास किया गया परंतु नहीं माना शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु कोई और चारा ना देख अभियुक्त को अंतर्गत धारा 170 में गिरफ्तार किया गया यदि इसे गिरफ्तार नहीं करते तो कोई संज्ञेय अपराध कारित कर सकता था। अभियुक्त को न्यायालय पेश किया जा रहा है।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

सोमवार , 13 अक्टूबर 2025

पाक की बेचैनी

इस समय अफगानिस्तान के विदेश मंत्री सात दिवसीय भारत के दौरे पर आए हुए हैं। इस बीच ऐसी भी खबरें आ रही हैं कि पाक व अफगानिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर इशारा करती है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में काफी अंदर घुसकर तहरीके तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) पर सर्जिकल स्ट्राइक की है। जाहिर है टीटीपी पर सर्जिकल स्ट्राइक तो एक बहाना लगती है असल मकसद इसके पीछे कुछ और लगता है। लगता है कि पाकिस्तान अफगानिस्तान के साथ भारत की बढ़ती नजदीकी को पचा नहीं पा रहा है। हालांकि टीटीपी और पाक के बीच संघर्ष कोई नया नहीं है। टीटीपी को हमेशा पाकिस्तान अपने लिए खतरा मानता है और वह यह आरोप भी लगाता रहता है कि उसको शह अफगानिस्तान से मिल रही है। ताजा मामले में भी यही कह रहा है कि टीटीपी के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई की है। इसी तरह अफगानिस्तान के विदेश मंत्री ने नई दिल्ली में पत्रकारों के सामने विस्तार से बात की है। मुत्ताकी ने पाक पर आरोप लगाया और कहा कि उसने खुद ही अपने कबालाई इलाकों में सैन्य अभियान चलाकर हजारों लोगों को बेघर किया था, जिनमें से कई शरणार्थी के रूप में अफगानिस्तान में रह रहे हैं। मुत्ताकी ने बताया कि ये लोग पाक से आए हैं और अफगान धरती पर शरणार्थी बनकर रह रहे हैं और ये लोग तब आए थे जब अमेरिका और उसकी समर्थित सरकार अफगानिस्तान में थी, तब इन्हें जगह दी गई थी और अब ये लोग हमारी देखरेख में शांति से रह रहे हैं। मुत्ताकी का यह भी कहना था कि पाकिस्तान अफगान सीमा जिसे ड्यूरेड लाइन के नाम से भी जाना जाता है, 2400 किमी से ज्यादा लंबी है और इसको नियंत्रित करना आसान नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि न इसे चंगेज खां नियंत्रित कर सका और न ही अंग्रेज। इसको ताकत के बलबूते नहीं संभाला जा सकता। उन्होंने चेतावनभरे लफ्ज में कहा कि पाक के पास बड़ी फौज और बेहतरीन खुफिया एजेंसी हैं फिर भी वे इसे खुद क्यों नहीं रोक पा रहे हैं। इस समय कतर और सऊदी अरब के हस्तक्षेप से दोनों देशों के बीच कोई सैन्य कार्रवाई नहीं हो रही है, लेकिन मुत्ताकी ने साफ कहा कि अगर पाक शांति व अच्छे रिश्ते नहीं चाहता तो अफगानिस्तान के पास और भी विकल्प मौजूद हैं, लेकिन अफगानिस्तान शांति में विश्वास रखता है। बड़ी बात मुत्ताकी ने कही वह यह है कि पाक अपने यहां आतंकी समूहों को क्यों काबू नहीं कर पा रहा है और अपने ही लोगों को खतरे में डालकर कुछ लोगों को खूश करने की क्यों कोशिश कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ ताकतें दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा रही हैं। जहां तक बात भारत की है, अफगानिस्तान के साथ इस तरह की पहल बेहतर संबंधों को उसने की है व अफगान विदेश मंत्री ने उसको सराहा है यह बड़ी सफलता है।

निजी कॉलेज परिसर में सुरक्षा सुनिश्चित करें

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में मेडिकल छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म की वारदात चौंकाने वाली है, हमारी सरकार ऐसी घटनाओं को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करती, वारदात में शामिल तीन आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं, पुलिस अन्य की तलाश कर रही है, किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा, निजी कॉलेजों को परिसर के भीतर और आसपास सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, वह लड़की निजी मेडिकल कॉलेज में पढ़ रही थी, इसलिए निजी मेडिकल कॉलेज बताए कि वह रात के 12.30 बजे कैसे बाहर आ गई, ओडिशा में तीन सप्ताह पहले समुद्र तट पर तीन लड़कियों के साथ बलात्कार हुआ, ओडिशा सरकार ने क्या कार्रवाई की और बंगाल में अगर महिलाओं के साथ कुछ भी होता है तो हम इसे सामान्य मामला नहीं मानते, यह एक गंभीर मामला है।

—ममता बनर्जी, सीएम, पश्चिम बंगाल



इस वर्ष देश भर में हुई भारी बारिशों और जल प्रलय के बावजूद भारत के शहरी क्षेत्रों में जल संकट अब कोई दूर की आशंका नहीं, बल्कि एक कठोर सच्चाई बन चुका है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बंगलूरू जैसे महानगर, जो आर्थिक प्रगति और आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक हैं, अब जल प्रबंधन की विफलता के गंभीर परिणाम झेल रहे हैं। हाल ही में दिल्ली के वसंत कुंज क्षेत्र में तीन बड़े मॉल और आसपास की कॉलोनियों में पानी की सप्लाई पूरी तरह ठप हो जाने से यह संकट फिर सुर्खियों में आया। इन प्रतिष्ठानों को बंद करने की नौबत इसलिए आ गई है क्योंकि टैंकों से इनकी जल आपूर्ति रुक गई, जबकि भूजल दोहन (ग्राउंड वॉटर बोरिंग) पर पहले से ही एनजोटी ने प्रतिबंध लगा रखा है। यह स्थिति केवल अस्थायी तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि एक गहरे प्रशासनिक और नैतिक संकट की ओर संकेत करती है। पिछले सात दशकों में खरबों रुपया जल प्रबंधन पर खर्च किए जाने के बावजूद ऐसा क्यों है?

दिल्ली जैसे शहर में जहां जनसंख्या 2 करोड़ से अधिक है, जल आपूर्ति व्यवस्था लंबे समय से दबाव में है। दिल्ली जल बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, शहर में प्रतिदिन करीब 1,000 मिलियन गैलन पानी की मांग है, जबकि उपलब्धता मुश्किल से 850 मिलियन गैलन तक पहुंच पाती है। वसंत कुंज जैसे पॉश इलाकों में भी पिछले कुछ वर्षों से पानी की टैंकियां और निजी टैंकों पर निर्भरता बढ़ी है। परंतु इस बार स्थिति पहले से कहीं अधिक भयावह हो गई क्योंकि प्रशासन ने सुरक्षा और ट्रेफिक कारणों से टैंकों की आवा. जाही पर रोक लगा दी। इस निर्णय का सबसे बड़ा असर व्यापारिक केंद्रों जैसे मॉल्स, रेस्तरां और दुकानों पर पड़ा है। इन मॉल्स में हजारों कर्मचारी काम करते हैं और प्रतिदिन लाखों शा्रक आते हैंय बिना पानी के ऐसी व्यवस्था एक दिन भी नहीं चल सकती। शौचालय, सफाई, भोजनालय, अतिनशाम प्रणाली, सब कुछ जल आपूर्ति पर निर्भर हैं। जब टैंकों की आपूर्ति रुकी, तो केवल व्यापार ही नहीं, आसपास के आवासीय समाज भी संकट में पड़ गए। दिल्ली सरकार ने कुछ वर्ष पहले भूजल दोहन पर सख्त प्रतिबंध लगाया था। उद्देश्य यह था कि गिरते जलस्तर को रोक जाए। यह पहल पर्यावरणीय दुष्टि से आवश्यक थी, क्योंकि लगातार बढ़ते दोहन ने दिल्ली के अधिक. ंश क्षेत्रों में भूजल को 300 फीट से भी अधिक नीचे पहुंचा दिया था। लेकिन सवाल यह है कि क्या वैकल्पिक व्यवस्था पर्याप्त रूप से विकसित की गई? जब सरकार ने ग्राउंड वॉटर बोरिंग को

जल संकट की दस्तक दिल्ली से दूर नहीं



गैरकानूनी घोषित किया, तब उसे समानांतर रूप से मजबूत टैंकर नेटवर्क, पुनर्चक्रण संयंत्र और रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित करने चाहिए थे। दुर्भाग्यवश, नीतियां बर्नी पर उनका कार्यान्वयन अधूरा रह गया। परिणामस्वरूप, लोग न तो कानूनी तरीके से पानी निकाल सकते हैं, न सरकारी वितरण पर भरोसा कर सकते हैं। सोचने वाली बात ए है कि यदि जाड़ों में यह हाल है तो गर्मियों में क्या होगा? दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश में पानी की आपूर्ति से जुड़ा टैंकर कारोबार वर्षों से विवादों में रहा है। कई जगह यह सार्वजनिक सेवा से अधिक निजी व्यवसाय बन चुका है। अधिकारियों और टैंकर डेकड़ारों के बीच मिलीभगत के आरोप नए नहीं हैं। दिल्ली में जल आपूर्ति में आई यह हालिया बाधा भी ऐसे ही भ्रष्टाचार की परतें उजागर करती प्रतीत होती है। त्योहारों के मौसम में जब पानी की मांग बढ़ जाती है, घरों में सजावट, सफा-सफाई और उत्सव आयोजन अधिक होते हैं।ऐसे समय पर टैंकों की आवाजाही पर प्रतिबंध या 'तकनीकी समस्या' का बहाना बना देना संदेह उत्पन्न करता है। कई स्थानीय निवासियों का कहना है कि कुछ जल एजेंसियों ने टैंकों की उपलब्धता को कृत्रिम रूप से सीमित कर कीमतें बढ़ाने की कोशिश की है। इससे न केवल आम नागरिकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा, बल्कि मॉल्स और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को बंद करने की स्थिति आ गई। अगर

ए आरोप सही साबित होते हैं, तो यह सिर्फ प्रशास. निक लापरवाही नहीं, बल्कि नैतिक दिवालियापन का उदाहरण होगा। जल जैसी बुनियादी संपदा के साथ ऐसा बर्ताव किसी नागरिक समाज में अक्षय्य अपराध है। भारत में जल नीति के कई स्तर हैं। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें और नगरपालिका निकाय सब अपने ढंग से काम करते हैं। लेकिन इन सबमें तालमेल का अभाव है। राष्ट्रीय जल नीति (2012) यह कहती है कि हर नागरिक को पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण जल मिलेगा, पर छोटे शहरों को तो छोड़ें, दिल्ली जैसे शहरों में भी वास्तविकता इसके उलट है। नगर पालिकाएं रेन वॉटर हार्वेस्टिंग को अनिवार्यता घोषित तो करती हैं, पर अधिकारश इमारतों में यह प्रणाली केवल कारगोश पर मौजूद है। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की क्षमता भी इस संकट का सामना करने के लिए अपर्याप्त है। यमुना का प्रदूषण भी दिल्ली की जल आपूर्ति पर सीधा असर डालता है। यदि यमुना से शुद्ध जल नहीं मिलेगा, तो शहर को बाहरी स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ेगा, जिससे राजनीतिक टकराव भी बढ़ते हैं। हालांकि नीति-निर्माण और कार्यान्वयन की बड़ी जिम्मेदारी सरकार पर है, नागरिक भी पूरी तरह निर्दोष नहीं हैं। शहरी समाज में जल का अनावश्यक उपयोग आम बात है। बागवानी में अत्यधिक पानी, कार धोने में व्यर्थ बहाव, और रिसाव की अनदेखी। स्वच्छ भारत मिशन या हर घर जल जैसे अभियानों की सफलता



विनीत नारायण

तभी संभव है जब लोग खुद बदलाव का हिस्सा बनें। रेन वॉटर हार्वेस्टिंग और ग्रे-वॉटर रीसाइक्लिंग जैसे उपाय व्यक्तिगत और साम. दायिक स्तर पर अपनाए जा सकते हैं। मॉल्स और हाउसिंग सोसाइटीज में यह व्यवस्था अनिवार्य की जानी चाहिए, ताकि टैंकरों पर निर्भरता घटे। दिल्ली का वर्तमान संकट केवल एक चेतावनी है। आने वाले वर्षों में ऐसी घटनाएं और बढ़ सकती हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, यदि ठोस कदम नहीं उठाए गए तो 2030 तक देश के आधे बड़े शहर 'जल-विहीन' क्षेत्रों की श्रेणी में आ सकते हैं। इसलिए अब समय है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर दीर्घकालिक रणनीति अपनाएं। गौरतलब है कि अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी पानी के अभाव के कारण मात्र 15 सालों में ही उजड़ गई थी। महानगरों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली को सख्ती से लागू करना। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की संख्या और क्षमता बढ़ाना। टैंकर संच. लान को पारदर्शी और जीपीएस-नियंत्रित बनाना ताकि रिश्तखोरी पर रोक लगे। यमुना जैसी नदियों को सफाई और पुनर्जीवन को प्राथमिकता देना। पानी की बर्बादी रोकने के लिए सख्त कानून और जनजागरूकता अभियान चलाना। इन कदमों के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जल प्रबंधन केवल संकट आने पर चर्चा का विषय न बने, बल्कि शहरी नियोजन की मूल नीति का हिस्सा हो। दिल्ली पर आई जल संकट की दस्तक यह याद दिलाता है कि पानी केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। जब-जब हम इसे समझने में चुक करते हैं, तो सभ्यता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। यदि सरकार और नागरिक समाज अब भी इस संकट को गंभीरता से नहीं लेते, तो 'जल युद्ध' भविष्य का नहीं, वर्तमान का शब्द बन जाएगा। जलसंकट का समाधान केवल योजनाओं से नहीं, ईमानदार नीयत और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

पेंशन का अधिकार शिक्षकों की मांग

भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल में शिक्षक ही हैं, जो नई पीढ़ी को ज्ञान की ज्योति प्रदान करते हैं, लेकिन हाल के वर्षों में सरकारी नीतियां और न्यायिक फैसलों ने शिक्षकों के समक्ष नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। एक ओर पुरानी पेंशन योजना की बहाली की मांग सरकारी कर्मचारियों, विशेषकर अध्यापकों के बीच जोर पकड़ रही है, तो दूसरी ओर सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश ने टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट TET को अनिवार्य कर दिया है। ये दोनों मुद्दे शिक्षकों की आर्थिक सुरक्षा और पेशेवर योग्यता से जुड़े हैं। इस लेख के माध्यम से हम इन मांगों को सरकार एवं सरकारी संस्थाओं का ध्यानाकर्षण करेंगे, जो न केवल अध्यापकों की वर्तमान स्थिति को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की नीतियों को भी आकार दे रहे हैं। पुरानी पेंशन योजना सरकारी कर्मचारियों की लंबे समय से चली आ रही वह व्यवस्था थी, जिसमें सेवानिवृत्ति के बाद कर्मचारी को अंतिम वेतन का 50 प्रतिशत पेंशन के रूप में मिलता था, जिससे वह अपना शेष जीवन सम्मान से व्यतीत कर पाता था। 2004 के बाद यह लाभ छीन लिया गया, जिससे कर्मचारियों को एक तगड़ा झटका लगा। हालांकि सरकारी नौकरी के लालच में सरकारी नौकर इस हानि को देखता और सहन करता रहा। अध्यापक समुदाय,

जो मुख्य रूप से सरकारी या सहायता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत हैं, इस बदलाव से सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। दूसरी तरफ अन्य विभागों की ओर भी यदि देखा जाए तो वहां पर भी सेवारत कर्मचारियों / अधिकारी वर्ग को इस प्रकार के री फ्रेशर कोर्स कराने की आवश्यकता होनी चाहिए मगर ऐसा नहीं है? क्यों कार्य क्षमता कसौटी अध्यापकों के लिए ही नियत हो? पचपन वर्ष की अवस्था पूर्ण कर रहे सभी प्रशासनिक,विधि, राजनीतिक व्यक्तियों के लिए कोई आकलन प्रक्रिया हो जाए तो इन क्षेत्रों में भी जनमानस को अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाएं प्राप्त हो सकती हैं। सरकार की नई पेंशन योजना के संबंध में अध्यापकों का तर्क है कि NPS में निवेश जोखिमपूर्ण है और मुद्रास्फोति के साथ पेंशन की राशि अपर्याप्त साबित हो रही है। फरवरी 2025 के एक फैसले में कोर्ट ने सेवानिवृत्ति से ठीक पहले वेतन वृद्धि (नोटिशनल इंक्रीमेंट) को पेंशन में शामिल करने का निर्देश दिया, जिससे हजारों पूर्व कर्मचारियों को राहत मिली। अध्यापकों की मांग अब OPS की पूर्ण बहाली पर केंद्रित है सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश OPS की नैतिक और कानूनी वैधता को रेखांकित करते हैं। शिक्षक तगड़ा झटका मांग का जो रही है कि पुरानी पेंशन योजना को बहाल किया जाए। यूनिफाइड पेंशन स्कीम 2025 के तहत सरकार ने कुछ राहत

दी है, लेकिन अध्यापक इसे अपर्याप्त मानते हैं। पेंशन को अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार माना गया है, क्योंकि यह सेवानिवृत्त व्यक्तियों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है।

TET अनिवार्यता
सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला और अध्यापकों की चिंताएं, शिक्षा का अधिकार अधि. नियम 2009 के तहत 2011 से TET को शिक्षक भर्ती के लिए अनिवार्य बनाया गया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के 1 सितंबर 2025 के फैसले ने इसे और सख्त कर दिया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि कक्षा 1 से 8 तक के गैर-माइनॉरिटी स्कूलों में कार्यरत सभी अध्यापकों,चाहे वे RTE से पहले नियुक्त हुए हों,को TET पास करना होगा। प्रमा. शन के लिए भी TET अनिवार्य है। जिन अध्यापकों के पास 5 वर्ष से कम सेवा शेष है, उन्हें छूट दी गई है, वे सेवा जारी रख सकते हैं, लेकिन प्रमोशन नहीं पा सकेंगे। शेष को 2 वर्ष का समय दिया गया है, अन्यथा सेवा समाप्ति या अनिवार्य सेवानिवृत्ति हो सकती है। नियुक्ति के समय निर्धारित योग्यता पूर्ण मानते हुए ही कोई सरकारी विभाग व्यक्ति को नियुक्त करता है, इन अध्यापकों ने भी ऐसा ही किया है। अब नियुक्ति के बाद निर्गत आदेशों को सेवारत शिक्षक पर लगाया जाना औचित्यपूर्ण नहीं है हालांकि उक्त फैसला अंजुमन इशाअत-ए-तालीम ट्रस्ट बनाम



शहजाद अली

महाराष्ट्र राज्य मामले में आया, जिसमें कोर्ट ने ल्म की धारा 23 का हवाला देते हुए कहा कि ज्म शिक्षण योग्यता का न्यूनतम मानक है।इस आदेश का प्रभाव स्कूलों में 20-30 लाख अध्यापकों पर पड़ेगा। तमिलनाडु में ही 3 लाख से अधिक अध्यापक प्रभावित हैं, जहां ज्म पास रेट मात्र 10-20% है। शिक्षकों की मांग है कि ल्म लागू होने से पहले नियुक्त अध्यापकों को ज्म से छूट दी जाए, क्योंकि उनकी अनुभव और प्रशिक्षण को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। शिक्षा विभाग समय-समय पर विषय आधारित एवं अन्य कोशलों पर आधारित प्रशिक्षण कराता है।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय ने 16 सितंबर 2025 को इस फैसले के खिलाफ रिब्यू पिटिशन दायर करने का निर्देश दिया, स्वागत योग्य पाजिटिव पहल है जिससे आशा की किरण जगी है। अध्यापक मांग कर रहे हैं पुरानी पेंशन योजना को बहाल एवोला किया जाए एवं शिक्षा का अधिक. रा अधिनियम 2009 जो कि जौलाई 2011 को लागू हुआ इससे पहले नियुक्त किसी भी शिक्षक पर टैट नही थोपा जाए।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

राहुल को जेपी का स्मरण कराया भी जा सकता है

बिहार में परिवर्तन की जो आंधी इस समय चल रही है उसमें उस संपूर्ण क्रांति की झलक तलाश की जा सकती है जो 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुई थी और जिसके परिणामस्वरूप 1977 में आजादी के बाद पहली बार केंद्र में एक गैर-कांग्रेसी सरकार की स्थापना हुई थी। एक बड़ा फर्क तब और अब में यह है कि उस समय जो राजनीतिक सत्ता यानी सत्तारूढ़ कांग्रेस खलनायक के रूप में मौजूद थी वह इस समय राहुल की अगुवाई में नायकत्व की भूमिका में है। जिन सांप्रदायिक तत्वों यानी तब जनसंघ और आरएसएस ने अपने राजनीतिक हितों के लिए जेपी के 1974 के छात्र-आंदोलन पर कब्जा कर लिया था वे इस समय खलनायकों के रोल में हैं। राहुल की उम्र उस समय चार-पांच साल की रही होगी। राजीव गांधी और सोनिया गांधी तब सत्ता की राजनीति से कोसों दूर थे। दिल्ली में सत्ता के सारे सूत्र संजय गांधी और उनकी अतिविश्वस्त कोटरी के हाथों में थे। जेपी के साथ 1972 में हुए चंचल घाटी के ऐतिहासिक दस्यु आत्म-समर्पण के समय से जुड़े होने के कारण भी बिहार आंदोलन के दौरान भी लोकनायक के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था। बिहार चुनावों को लेकर यूट्यूब चैनलों पर होने वाली बहसों के माध्यम से और राहुल गांधी की टीम से नजदीक से जुड़े एक सांसद के जरिए राहुल तक एक संदेश पहुंचाने की कोशिश मैंने पिछले दिनों की थी। राहुल गांधी तक संदेश यह पहुंचवाना था कि उन्होंने युवा शक्ति के माध्यम से



मोदी की हुकूमत को खिलाफ लड़ाई की शुरुआत बिहार की क्रांति-उर्वरा धरती से की है। इंदिरा गांधी के खिलाफ जेपी की संपूर्ण क्रांति में लालू प्रसाद यादव प्रमुख छात्र नेता थे। राहुल की लड़ाई में उनके प्रमुख सहयोगी लालू के बेटे तेजस्वी यादव हैं। राहुल के समर्थन में बिहार के युवा भी उसी तरह से समर्थित हैं जिस तरह 1974 में जेपी के प्रति थे।

राहुल गांधी पटना सहित बिहार के अन्य स्थानों की यात्राएं लगातार कर रहे हैं। उनकी ऐतिहासिक वोटर अधिकार यात्रा का समापन भी पटना में ही हुआ था। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लाक की पहली बैठक भी पटना में ही हुई थी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उन बैठक के आयोजक थे। केजरीवाल भी उस बैठक में उपस्थित थे। बाद में इंडिया ब्लाक को धोखा देकर बीजेपी से हाथ मिला लिया। मेरा सुझाव यह था कि राहुल अपनी

किसी पटना यात्रा के दौरान अगर जेपी के कदम कुआं स्थित निवास स्थान पहुंचकर संपूर्ण क्रांति के नायक को अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर देंगे तो उसका संदेश बिहार के गांव-गांव तक पहुंच जाएगा। बिहार के संवेदनशील युवाओं के साथ राहुल का बांड और मजबूत हो जाएगा। केंद्र की वर्तमान गैर-कांग्रेसी सरकार हालांकि जेपी के उसी संपूर्ण क्रांति आंदोलन की देन है पर नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जेपी नड्डा से इस तरह की कोई अपेक्षा नहीं की जा सकती। आश्चर्य नहीं हुआ कि राहुल गांधी की ओर से सुझाव को गौर करने योग्य नहीं समझा गया। मैं यह भी मानने को तैयार हूँ कि संदेश उन तक नहीं पहुंच पाया होगा। इस तरह का विचार तो राहुल या उनकी टीम के लोगों के मन में स्वतः भी आ सकता था। राहुल बिना किसी पूर्व-घोषणा और मर्जी से अलग-अलग जगहों पर जाते



रहते हैं। लोगों से मिलते हैं, उन्हें गले लगाते रहते हैं ! बिहार में युवा क्रांति की अगुवाई कर जननायक बनने वाले नेता को तो अपनी पहली ही पटना यात्रा में कदम कुंआ के ठिकाने की याद आ जानी चाहिए थी। अगर नहीं आई तो दिलाई भी जा सकती थी। मैं जिस पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहता हूँ वह यह है कि राहुल गांधी को गुस्सा भी आता है और उनकी ही पार्टी और सहयोगी दलों के नेता उनसे खौफ भी खाते हैं। संपूर्ण क्रांति के लोकनायक जेपी का अगर राहुल ने पटना में स्मरण नहीं किया तो उसमें उनकी चुनावी स्ट्रेटेजी की कमी भी तलाशी जा सकती है। आश्चर्य ही व्यवक्त किया जा सकता है कि 1974 के आंदोलन की ही उपज लालू यादव के प्रति अगर राहुल के मन इतना सम्मान है तो जेपी के प्रति उसका चुनावी-प्रदर्शन भी क्यों नहीं हो सकता।



श्रवाण गर्ग

राहुल गांधी पटना सहित बिहार के अन्य स्थानों की यात्राएं लगातार कर रहे हैं। उनकी ऐतिहासिक वोटर अधिकार यात्रा का समापन भी पटना में ही हुआ था। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लाक की पहली बैठक भी पटना में ही हुई थी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उस बैठक के आयोजक थे। केजरीवाल भी उस बैठक में उपस्थित थे। बाद में इंडिया ब्लाक को धोखा देकर बीजेपी से हाथ मिला लिया। मेरा सुझाव यह था कि राहुल अपनी किसी पटना यात्रा के दौरान अगर जेपी के कदम कुआं स्थित निवास स्थान पहुंचकर संपूर्ण क्रांति के नायक को अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर देंगे तो उसका संदेश बिहार के गांव-गांव तक पहुंच जाएगा।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

58 पाक सैनिक मारे गिराए: अफगान

25 चौकियों पर कब्जा भी किया, कहा: आईएसआई के आतंकियों को पनाह दे रहा पाकिस्तान

C
M
Y
K

काबुल। अफगानिस्तान ने दावा किया कि उसकी सेना ने शनिवार रात को पाकिस्तान सीमा पर हुई झड़प में 58 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया है। यह कार्रवाई पाकिस्तान की ओर से किए गए हवाई उल्लंघन के जवाब में की गई।

तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि अफगान सुरक्षा बलों ने पाकिस्तान की 25 सैन्य चौकियां कब्जे में ले ली हैं। इस कार्रवाई में 58 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए, जबकि 30 अन्य घायल हुए हैं। अफगान रक्षा मंत्रालय ने कहा: हमारा आपरेशन आधी रात को खत्म हो गया। अगर पाकिस्तान ने फिर से अफगानिस्तान सीमा का उल्लंघन किया, तो हमारी सेना देश की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार है। अफगान अधिकारियों ने पाकिस्तान पर राजधानी काबुल और देश के पूर्वी इलाक़ों के एक बाजार पर बमबारी करने का आरोप लगाया था।

हालांकि पाकिस्तान ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली थी। जबीहुल्लाह मुजाहिद ने रविवार को प्रेस कांफ्रेंस कर पाकिस्तान के खिलाफ चलाए गए आपरेशन की जानकारी दी। तालिबान ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया है कि वह अपनी जमीन पर आईएसआई के आतंकियों को शरण दे रहा है। मुजाहिद ने इन आतंकियों को अफगानिस्तान समेत पूरी दुनिया के लिए खतरा बताते हुए उन्हें



■ अफगान को भी भारत की तरह मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा: पाकिस्तानी गृह मंत्रालय का दावा

खैबर पख्तूनख्वा में दो आतंकवादी मारे गए

इस्लामाबाद। उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में चलाये गए एक अभियान में दो आतंकवादी मारे गए और दो अन्य घायल हो गए हैं। पुलिस ने रविवार को इसकी जानकारी दी। कैपिटल सिटी पुलिस अधिकारी पेशावर मियां सईद ने एक बयान में कहा कि यह घटना शनिवार को खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पेशावर जिले के हसन खेल इलाके में हुई, जहां आतंकवादियों ने पुलिस थाने पर हमला करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि पुलिस ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और हमलावरों के साथ घंटों तक भारी गोलीबारी होती रही। संदिग्धों का पीछा करने के लिए इलाके में अतिरिक्त बल भेजा गया है।

पाकिस्तान से निकालने या अफगानिस्तान के हवाले करने के लिए कहा। तालिबान प्रवक्ता ने बताया कि अफगानिस्तान ने अस्थिरता फैलाने वाले सभी तत्वों को खत्म कर दिया था, लेकिन अब उनके नए ठिकाने पाकिस्तान के पख्तूनख्वा इलाके में बना दिए गए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इन ठिकानों पर कराची और इस्लामाबाद

एयरपोर्ट के जरिए नए लड़कों को लाया जा रहा है और यहीं पर उन्हें ट्रेनिंग दी जा रही है। मुजाहिद ने यह भी दावा किया कि ईरान और रूस में हुए हमलों की योजना भी इन्हीं पाकिस्तानी ठिकानों से बनाई गई थी। उन्होंने कहा, पाकिस्तानी गृह मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि अफगानिस्तान को भी भारत की तरह

मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा, ताकि वह पाकिस्तान की ओर बुरी नजर से देखने की हिम्मत न कर सके। गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने कहा है कि हालिया हमलों के बाद पाकिस्तान चुप नहीं बैठेगा, ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा। वहीं, पाकिस्तानी मीडिया डान के अनुसार, पाक सेना ने अफगानिस्तान की 19 सीमा चौकियों पर कब्जा कर लिया। रेडियो पाकिस्तान के अनुसार, अफगान हमले सीमा के करीब छह इलाकों में हुए। पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत के एक अधिकारी ने मीडिया को बताया कि पाकिस्तानी सेना ने भी जवाब में भारी गोले, 100 की। लड़ाई के दौरान पाकिस्तानी सेना ने 3 अफगान ड्रोन मार गिराए, आशंका जताई गई है कि ये ड्रोन बम ले जा रहे थे। सऊदी अरब ने इस लड़ाई पर चिंता जताई है। सऊदी सरकार ने दोनों देशों से शांति और बातचीत के जरिए मामला सुलझाने की अपील की है और तनाव बढ़ाने के समन्वय ने एक बयान में कहा कि दार तालिबान को चेतावनी दी कि वह अपनी जमीन पर टीटीपी को पनाह न दे।



नई दिल्ली। अफगान दूतावास में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बोलते अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुताकी।

सूडान में आरएसएफ के ड्रोन हमले, 60 से ज्यादा की मौत

खार्तूम। पश्चिमी सूडान के एल फशर शहर में अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) द्वारा किए गए ड्रोन हमलों में शनिवार को 60 से ज्यादा नागरिक मारे गए। यह जानकारी एक स्वयंसेवी समूह ने दी है। एल फशर में प्रतिरोध समितियों के समन्वय ने एक बयान में कहा कि दार अल-अरकम आश्रय स्थल को एक रणनीतिक ड्रोन और आठ से ज्यादा आग लगाने वाले बमों से निशाना बनाया गया, जिससे शवों के ढेर ऐसे बिखरे पड़े थे जिसका वर्णन करना मुश्किल है। एक

चिकित्सा सूत्र ने बताया कि आरएसएफ ने सुबह दार अल-अरकम आश्रय स्थल और ओमदुरमान इस्लामिक विश्वविद्यालय पर व्यवस्थित ड्रोन हमले किए, जिसमें बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों सहित 30 से ज्यादा नागरिक मारे गए और कई लोग घायल हुए। सूत्र ने बताया कि शवों को अल फशर स्थित सऊदी अस्पताल लाया गया। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि ड्रोन हमलों का सीधा निशाना दक्षिणी अल फशर स्थित दार अल-अरकम आश्रय गृह था जहां कुछ लोग आश्रय गृह के अंदर जलकर मर गए।

संक्षिप्त समाचार

अदालत ने रोक दी ट्रम्प की नेशनल गार्ड तैनाती

वाशिंगटन। अमेरिका में इलिनाय राज्य में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भेजी गई नेशनल गार्ड की टुकड़ियां अब राज्य में रह सकती हैं, लेकिन फिलहाल उन्हें किसी भी फेडरल प्रापर्टी की सुरक्षा या गश्त पर तैनात नहीं किया जा सकता। यह आदेश अपीलस कोर्ट ने सुनाया। इससे पहले फेडरल जज एग्रिल पेरी ने गुरुवार को नेशनल गार्ड की तैनाती को कम से कम दो सप्ताह के लिए अस्थायी रूप से रोक दिया था। जज ने यह भी कहा कि ट्रम्प के इमिग्रेशन क्रेकडाउन के दौरान इलिनाय में विद्रोह का कोई स्पष्ट खतरा मौजूद नहीं है। अपीलस कोर्ट ने इस मामले में सुनवाई को रोकते हुए आग के तत्को की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया।

बांग्लादेश में सेना के 15 अधिकारियों को लिया हिरासत में

ढाका। बांग्लादेश से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां 15 सेना के अधिकारियों को हिरासत में लिया गया है। मामले में बांग्लादेश की सेना ने कहा कि देश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के आदेश पर 15 सेवा में रह रहे अधिकारियों को हिरासत में लिया गया है। इन अधिकारियों पर पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के शासनकाल में कथित मानवता के खिलाफ अपराधों का आरोप है। सेना के एडजुटेंट जनरल मेजर जनरल मोहम्मद हाकिमुज्जामान ने बताया कि कुल 16 अधिकारियों को सेना मुख्यालय में हाजिर होने के निर्देश दिए गए थे, जिनमें से 15 ने हाजिरी लगाई।

अमेरिकी सैन्य संयंत्र में विस्फोट में 16 लोगों की मौत

न्यूयॉर्क। अमेरिका के टेनेसी में शुक्रवार को एक सैन्य संयंत्र में हुए विस्फोट में 16 लोगों के मारे जाने की आशंका है। हालांकि विस्फोट में कोई भी जीवित नहीं बचा है। स्थानीय अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। टेनेसी आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी (टीईएमए) ने एक प्रेस विज्ञापन में बताया कि यह विस्फोट सैन्य विस्फोटकों के उत्पादन वाली कंपनी एक्ज्यूट एनर्जेटिक सिस्टम्स, एलएलसी में स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 7:45 बजे नैशविले, टेनेसी के दक्षिण-पश्चिम में हुआ। विस्फोट के कारणों की जांच अभी जारी है। विज्ञापन के अनुसार काफी मात्रा में मलबे और विस्फोटक पदार्थों की संभावित उपस्थिति के कारण प्रतिक्रिया अभियान धीरे-धीरे और व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ रहा है।

चीन 100% टैरिफ पर उठाएगा सख्त कदम

बीजिंग। चीन ने रविवार को दुर्लभ खनिजों और उनसे जुड़ी वस्तुओं पर अपने नए निर्यात नियंत्रण उपायों का बचाव किया और कहा कि यह वैश्विक शांति की रक्षा के लिए उठाया गया जायज कदम है। इसके साथ ही चीन ने अमेरिका को चेतावनी दी कि अगर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प चीनी निर्यात पर सी फोसदी टैरिफ लगाने की धमकी को अमल में लाते हैं, तो वह सख्त कदम उठाएगा।

बीजिंग ने दुर्लभ खनिजों, लिथियम बैटरियों और इन खनिजों से बनी अत्यधिक कठोर सामग्री को खनन और प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) से जुड़ी तकनीकों और उपकरणों के निर्यात पर नए प्रतिबंधों की घोषणा की थी। ये नए नियंत्रण उपाय तत्काल प्रभाव से लागू हो गए और इसमें उत्पादन तकनीकों का विदेशी स्थानांतरण

दुर्लभ खनिज निर्यात पर प्रतिबंध का किया बचाव, वैश्विक शांति की रक्षा में जायज कदम बताया

भी शामिल है। इन निर्यात उपायों (जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गए) में उत्पादन तकनीकों का विदेशी स्थानांतरण भी शामिल है। चीन ने कहा कि यह फैसला इस वजह से लिया गया है, क्योंकि कुछ विदेशी कंपनियां चीन से मिली सामग्री का उपयोग सैन्य उद्देश्यों के लिए कर रही थीं। चीन के इस कदम पर प्रतिक्रिया देते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक नवम्बर से चीनी वस्तुओं पर 100 फोसदी टैरिफ लगाने की धमकी दी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वह 'सभी जरूरी साफ़वेयर' के निर्यात पर रोक लगा सकते हैं।

ट्रम्प की मौजूदगी में होगी इजरायली बंधकों की रिहाई

तेल अवीव। गाजा सीजफायर समझौते के पहले चरण के तहत 48 बंधकों की रिहाई सोमवार सुबह से शुरू हो सकती है, जिनमें से 20 जीवित व्यक्ति और 28 शव सौंपे जाएंगे। इजरायली सेना ने शुक्रवार दोपहर तक गाजा से अपनी प्रारंभिक वापसी पूरी कर ली, जिसके बाद हमारा को 72 घंटे का समय दिया गया है।

वहीं, सोमवार को मिस्र में गाजा युद्ध समाप्त करने के समझौते पर चर्चा होगी। इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सहित 20 से अधिक विश्व नेता भाग लेंगे। दूसरी ओर, हमारा ने मिस्र में सोमवार को होने वाले गाजा पीस समिट के आधिका



हमारा का गाजा पीस समिट में शामिल होने से इन्कार

चरण) में शामिल होने से इन्कार कर दिया है। संगठन के वरिष्ठ नेता होस्सांम बडरान ने कहा कि वे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की योजना के कुछ हिस्सों से असहमत हैं। बडरान ने कहा कि फलस्तीनियों को (हमारा का

सदस्य हो या नहीं) उनकी जमीन से निकालने की बात बेतुकी है। उन्होंने समझौते के दूसरे चरण की बातचीत को जटिल और कठिन बताया। हमारा के एक दूसरे अधिकारी ने कहा कि संगठन का निस्स्वीकरण (हथियार छोड़ना) बिल्कुल असंभव है, भले ही वे गाजा की सत्ता छोड़ दें। इजरायल लगभग 2,000 फलस्तीनी कैदियों को रिहा करेगा। टाईम्स आफ इजरायल के मुताबिक, अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति इस अदला-बदली के देखरेख करेगी। रिपोर्ट में कहा गया कि अगर हालात अनुकूल रहे तो रिहाई रविवार रात से भी शुरू हो सकती है।

अमेरिका के नए राजदूत ने पीएम मोदी से की मुलाकात

नई दिल्ली। अमेरिका के नए नामिनेट राजदूत सर्जियो गोर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। गोर ने पीएम मोदी को एक तस्वीर भी भेंट की। इस तस्वीर में मोदी और ट्रम्प प्रेस कांफ्रेंस करते नजर आ रहे हैं। इस पर ट्रम्प का संदेश और हस्ताक्षर थे, जिसमें लिखा था: प्रधानमंत्री मोदी आप महान हैं। पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा कि उन्हें विश्वास है कि गोर के कार्यकाल में भारत-अमेरिका के संबंध और मजबूत होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि अमेरिका के राजदूत-निर्धारित सर्जियो गोर का भारत में स्वागत करके खुशी हुई। मुझे भरोसा है कि उनके कार्यकाल में भारत-अमेरिका की साझेदारी और मजबूत होगी। पीएम मोदी ने इस साल जनवरी में ट्रम्प के शपथग्रहण के बाद अमेरिका का दौरा किया था। इस

ट्रम्प के साइन वाली तस्वीर भी प्रधानमंत्री को भेंट की, इस पर लिखा: पीएम मोदी आप महान हैं

दौरान नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस की थी। इससे पहले सर्जियो गोर ने आज विदेश मंत्री जयशंकर और विदेश सचिव विक्रम मिसरी से भी मुलाकात की। इन बैठकों में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी पर चर्चा हुई। अमेरिका के राजदूत गोर का अमेरिकी दूतावास ने भी आधिकारिक रूप से स्वागत किया और कहा कि वह भारत-अमेरिका संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए काम करेंगे। गोर ने अमेरिकी दूतावास के बाहर खड़े होकर तस्वीर भी खिचाई। इसे दूतावास ने अपने आधिकारिक एक्स हैडल पर शेयर किया है।

अमन-मुहब्बत, सुकून, भाईचारे की जगह है आगरा की शहीद-ए-सालिस की दरगाह

—शहीद-ए-सालिस की दरगाह देती है इंसानियत और भाईचारे का पैगाम —दरगाह की पहचान हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आते हैं मन्तवें व मुरादें मांगने

उत्तर प्रदेश का शहर आगरा जहां एक ओर ताजमहल जैसी विश्व धरोहर के लिए मशहूर है, वहीं दूसरी ओर यह शहर अपनी रूहानी हस्तियों और सूफी संतों की वजह से भी खास पहचान रखता है। इसी सिलसिले की एक महान शक्तियत हैं हजरत शहीद-ए-सालिस रहमतुल्लाह अलैह। उनकी दरगाह आज भी हर उस इंसान के लिए रोशनी का चिराग है, जो अमन, मुहब्बत और सुकून व भाईचारे को तलाश करता है।

इतिहास और जीवन- माना जाता है कि हजरत शहीद-ए-सालिस अपनी जिनगी में बड़े परहेजगार, ईमान-नवाज और खुदा के नेक बंदों में से थे। उन्होंने अपनी पूरी जिनगी इंसानियत की सेवा, नेक सलाह और मुहब्बत फैलाने में गुजारी। उनकी तालीमात यही कहती हैं कि इंसान का असल धर्म मुहब्बत और भलाई है।

उनकी शहादत ने उन्हें 'शहीद' का दर्जा दिलाया और उनकी याद आज भी लोगों के दिलों में ताजा है। आगरा की इस दरगाह पर लोग हर रोज दुआओं के लिए आते हैं और अपनी मुरादें मांगते हैं।

मजलिसों व अकीदत का केंद्र-शहीद-ए-सालिस की दरगाह पर हर साल मजलिसों का आयोजन



होता है। आगरा ही नहीं बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों से जायरीन पहुंचते हैं। चादरपोशी, कुरआनखानी से माहौल रूहानी रंग में रंग जाता है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भाईचारे और मोहब्बत का पैगाम देने वाला एक बड़ा सामाजिक उत्सव है।

मजहब और जाति से परे अकीदत-दरगाह की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यहां आने वालों पर कोई बंधन नहीं है। चाहे वह हिंदू हों, मुसलमान, सिक्ख हो या ईसाई सब यहां एक ही मकसद से आते हैं और वह है दुआ और सुकून। यह दरगाह इंसानियत की उस मिसाल को पेश करती है, जो सदियों से भारत की गंगा-जमुनी तहजीब की पहचान

रही है। आज के दौर में अहमियत-आज जब समाज में नफरत और दूरी पैदा करने की कोशिशें होती हैं, ऐसे समय में शहीद-ए-सालिस की दरगाह मुहब्बत और अमन का झंडा बुलंद करती नजर आती है। यहां आने वाला हर शख्स यही पैगाम लेकर लौटता है कि इंसानियत सबसे बड़ा मजहब है। शहीद-ए-सालिस (तीसरे शहीद) का संक्षिप्त परिचय पूरा नाम: काजी नूरुल्लाह शुस्त्री, उपनाम- शहीद-ए-सालिस (तीसरे शहीद) जन्म:1549 ईस्वी (956 हिजरी), शुस्तार, ईरान, भारत आगमन: मशहद से होकर आगरा आए, जहां उन्होंने अकबर के दरबार में न्याय व्यवस्था में योगदान दिया।

आगरा में शहीदे सालिस की चार दिवसीय मजलिसें होंगी 20 अक्टूबर 25 से शुरू

मौलाना डा. मिर्जा शफीक हुसैन शफक बनाए गए हैं मजलिसों के कॉर्डिनेटर



आगरा/लखनऊ। आगामी माह अक्टूबर की 20 तारीख से 23 अक्टूबर 2025 तक चार दिवसीय मजलिसों की तैयारियां का अंतिम दौर चल रहा है। आगरा में दयाल बाग रोड स्थित मजार शहीद-ए-सालिस पर हर साल की तरह इस साल भी मजलिस प्रोग्राम तय हो गए हैं। मजलिस कार्यक्रम के कॉर्डिनेटर मौलाना डा. मिर्जा शफीक हुसैन शफक ने जानकारी देते हुए बताया कि सालाना मजलिस बयादे शहीदे सालिस 'काजी नूरुल्लाह शुस्त्री' आगरा की याद में होगी। इसके अलावा मैनेजर अली अब्बास रिजवी भी मजलिसों के प्रोग्राम को सफल बनाने की तैयारियों में लगे हुए हैं। उन्होंने बताया कि 21 अक्टूबर को रात्रि आठ बजे महफिल-ए-मिदहत प्रोग्राम भी होगा।



बताया कि मौलाना सैयद कल्बे जव्वाद के ज़ेरे परस्त में आयोजित होने वाली मजलिसों व दूरदराज से आने वाले जायरीनों के लिए अच्छे इंतज़ाम किए जा रहे हैं। पूरे प्रोग्राम शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड उग्र लखनऊ के चेयरमैन अली जैदी की देखरेख में आयोजित होंगे। डा. मिर्जा शफीक हुसैन 'शफक' ने जानकारी देते हुए बताया कि सालाना मजलिस बयादे शहीदे सालिस 'काजी नूरुल्लाह शुस्त्री' आगरा की याद में होगी। इसके अलावा मैनेजर अली अब्बास रिजवी भी मजलिसों के प्रोग्राम को सफल बनाने की तैयारियों में लगे हुए हैं। उन्होंने बताया कि 21 अक्टूबर को रात्रि आठ बजे महफिल-ए-मिदहत प्रोग्राम भी होगा।



जिया अब्बास जैदी वरिष्ठ पत्रकार

मोबाइल नंबर-9837776610, ई-मेल- ziaabbaszaidist@gmail.com

अमेरिका के साथ निष्पक्ष बात करने को तैयार: ईरान

तेहरान। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने शनिवार को कहा कि उनकी सरकार अमेरिका से निष्पक्ष और संतुलित बात करने के लिए तैयार है। अराघची ने सरकार समर्थित आईआरआईवी टीवी पर दिए अपने साक्षात्कार में परमाणु मुद्दे पर अमेरिका के साथ दोबारा बातचीत शुरू करने और प्रतिबंधों को हटाने के संबंध में ईरान का रुख बताया। उन्होंने कहा कि अगर अमेरिका ईरान के हितों की सुरक्षा करने की कोई सक्षम योजना पेश करता है, तो निश्चित रूप से उस पर गौर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका के सामने हमारा रुख हमेशा स्पष्ट रहा है।

इराक ने की अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना

बगदाद। इराक ने शनिवार को उसकी संस्थाओं पर हाल ही में लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना की और इस कदम को एक 'बेहद खेदजनक' और 'एकतरफा' कार्रवाई बताया। इराक की सरकार के प्रवक्ता बसीम अल-अवदी ने एक बयान में कहा कि अमेरिका को कानूनी उपायों के अधीन पक्षों के साथ उनके कथित संबंधों के बहाने इराक की संस्थाओं पर अमेरिकी प्रतिबंध बिना किसी पूर्व परामर्श या बात-चीत के लगाए गए, जो सहयोगी देशों के बीच संबंधों के प्रति दुष्टिकोण में एक नकारात्मक मिसाल पेश करता है।